जैन आगम प्राणी कोश

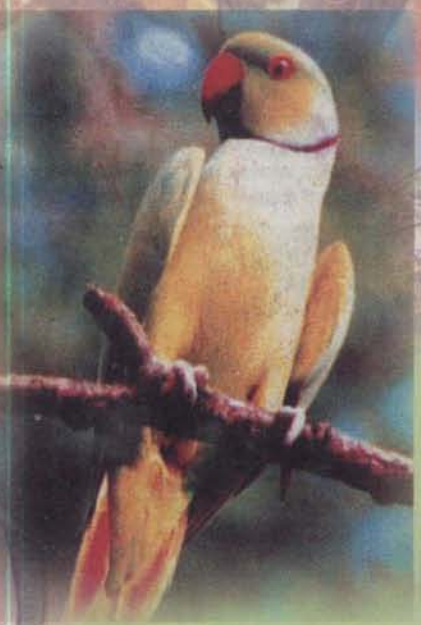

वाचना प्रमुख
गणाधिपति तुलसी

प्रधान संपादक
आचार्य महाप्रज्ञ

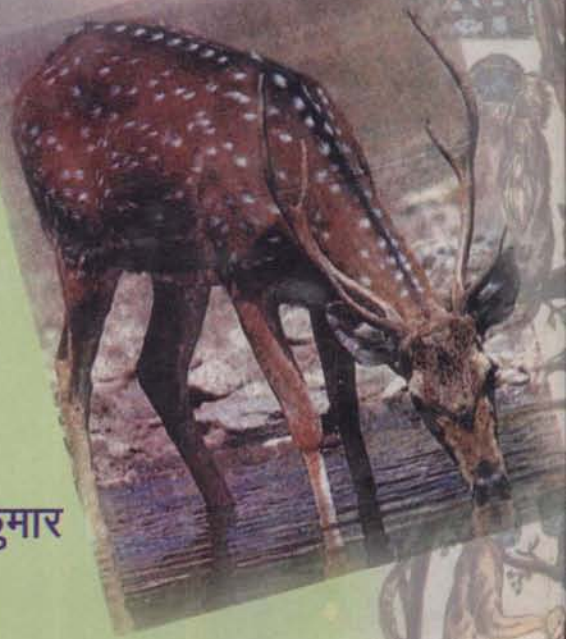

संपादक
मुनि वीरेन्द्र कुमार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आगम साहित्य ज्ञान का खजाना है। उसमें अनेक विषयों का निबन्धन है। उसमें जीव राशि का विशद वर्णन हैं। उस प्रसंग में वनस्पति, प्राणी, खनिज आदि की लम्बी तालिकाएं उपलब्ध हैं। आगम संपादन के साथ कोश निर्माण का कार्य भी चल रहा है। छः कोश प्रकाश में आ चुके हैं। अध्ययन और शोध कर्ताओं के लिए वे बहुत उपयोगी सिद्ध हुए हैं। जैन आगम प्राणी कोश इस श्रृंखला का सातवां ग्रंथ है। भगवती, प्रज्ञापना, जीवाजीवाभिगम, प्रश्नव्याकरण, उत्तराध्ययन में प्राणियों के नाम विपुल मात्रा में, विपुल परिमाण में हैं। अन्य आगमों में भी यत्र-तत्र वे मिलते हैं। उन नामों की पहचान करना बहुत कठिन कार्य है।

इस कार्य के लिए लगभग 40 ग्रंथों का अध्ययन किया गया। Dr. K.N. Dave ने पक्षियों पर शोध प्रबन्ध लिखा है, जिसमें प्रश्नव्याकरण सूत्र में वर्णित पक्षी वाचक शब्दों की पहचान का प्रयास किया गया। अन्य किसी ग्रंथ में जैनागामों में उपलब्ध प्राणियों के विषय में कार्य नहीं किया गया। यह पहला कार्य है, जिसमें द्वीन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के लगभग सभी प्राणियों की पहचान की गई है। इससे चिरकालिक अपेक्षा की पूर्ति हुई है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन आगम प्राणी कोश

वाचना प्रमुख
गणाधिपति तुलसी

प्रधान संपादक
आचार्य महाप्रज्ञ

संपादक
मुनि वीरेन्द्र कुमार

प्रकाशक
जैन विश्व भारती, लाडनूं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशक : जैन विश्व भारती
लाडनूं-341306 (राजस्थान)

© जैन विश्व भारती, लाडनूं

सौज़न्य : आचार्य महाप्रज्ञ के युगप्रधान पदाभिषेक के शुभ अवसर पर
श्रीमती मांजी देवी (धर्म पत्नी श्री रूपचंद जी सुराणा)
(पड़िहारा- गुवाहाटी- शिलांग)

प्रथम संस्करण : १९९९

चित्र संकलन : भिक्षु चेतना परिषद (गंगाशहर)
जैन दर्शन माला (गंगाशहर)

मूल्य : 250 रु.

मुद्रक : शान्ति प्रिंटर्स एण्ड सप्लायर्स, दिल्ली

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिवर्चनीय होता है उस माली का जो अपने हाथों से उप्त और सिंचित द्रुम-निकुन्ज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन-आगमों का शोधपूर्ण संपादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगें। संकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार इस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूं, जो इस प्रवृत्ति में संविभागी रहे हैं। संक्षेप में वह संविभाग इस प्रकार है—

प्रधान संपादक - **आचार्य महाप्रज्ञ**

सह संपादक - **मुनि वीरेन्द्र कुमार**

संविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिन ने इस गुरुतर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना संविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूं और कामना करता हूं कि उनका भविष्य इस महान कार्य का भविष्य बने।

—गणाधिपति तुलसी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भूमिका

आगम साहित्य ज्ञान का खजाना है। उसमें अनेक विषयों का निबन्धन है। उसमें जीव राशि का विशद वर्णन हैं। उस प्रसंग में वनस्पति, प्राणी, खनिज आदि की लम्बी तालिकाएं उपलब्ध हैं। आगम संपादन के साथ कोश निर्माण का कार्य भी चल रहा है। छः कोश प्रकाश में आ चुके हैं। अध्ययन और शोध कर्ताओं के लिए वे बहुत उपयोगी सिद्ध हुए हैं। जैन आगम प्राणी कोश इस श्रृंखला का सातवां ग्रंथ है।

भगवती, प्रज्ञापना, जीवाजीवाभिगम, प्रश्नव्याकरण, उत्तराध्ययन में प्राणियों के नाम विपुल मात्रा में, विपुल परिमाण में हैं। अन्य आगमों में भी यत्र-तत्र वे मिलते हैं। उन नामों की पहचान करना बहुत कठिन कार्य है। व्याख्या ग्रंथों में उनके बारे में विशद जानकारी कहीं-कहीं उपलब्ध है। अनेक प्रसंगों पर "लोकतश्चावगन्तव्या" इतना सा उल्लेख मिलता है। वनस्पति और प्राणी दोनों की पहचान अपेक्षित थी। वनस्पति कोश में अनेक ग्रंथों के आधार पर वनस्पति के शब्दों की पहचान की गई। प्राणियों की पहचान का कार्य शेष था। मुनि वीरेन्द्र कुमार जी ने इस दिशा में कार्य शुरू किया। कार्य सरल नहीं था। क्योंकि किसी एक ग्रंथ में सबकी पहचान उपलब्ध नहीं है। इस कार्य के लिए लगभग 40 ग्रंथों का अध्ययन किया गया। Dr. K.N. Dave ने पक्षियों पर शोध प्रबन्ध लिखा है, जिसमें प्रश्नव्याकरण सूत्र में वर्णित पक्षी वाचक शब्दों की पहचान का प्रयास किया गया। अन्य किसी ग्रंथ में जैनागामों में उपलब्ध प्राणियों के विषय में कार्य नहीं किया गया। यह पहला कार्य है, जिसमें द्वीन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के लगभग सभी प्राणियों की पहचान की गई है। इससे चिरकालिक अपेक्षा की पूर्ति हुई है। इस श्रम साध्य कार्य में डॉ. दीपिका कोठारी का काफी योग रहा। प्रस्तुत ग्रंथ में प्राणियों के विवरण के साथ-साथ चित्र भी दिए गए हैं। भारतीय जीव-जंतुओं के विषय में जानकारी प्राप्त करने वालों के लिए यह एक उपयोगी ग्रंथ होगा।

—आचार्य महाप्रज्ञ

जैन विश्व भारती,
लाडनूं
17 मई, 1998

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरोवाक्

आगम साहित्य में जीव-अजीव का विस्तृत वर्णन है। इस साहित्य में से जीव राशि के वर्णन को गुरुदेव तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ ने समझकर उसकी विवेचना समय-समय पर एक क्रम में की एवं इस विवेचना को मुनि श्री वीरेन्द्र कुमार जी ने *"जैन आगम प्राणी कोश"* एक कोश के रूप में संयोजन करने का पहला एवं कुशल प्रयास किया है। इस कोष में मूल आगमिक नाम के साथ उसके सन्दर्भ एवं हिन्दी, अंग्रेजी और जहां सम्भव हुआ (वैज्ञानिक) तकनीकी नाम दिये गये है। जहां जहां जीव एक से अधिक नामों से जाना जाता है वे सारे नाम भी बताने की कोशिश की गई है। हर जीव का आकार, लक्षण, विवरण काफी अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया गया है ताकि इन विवरणों को पढ़कर उस जीव की पहचान की जा सके। इस कार्य को और बल देने के लिए जीवों के फोटो (चित्र) भी इस कोश में सम्मिलित करने का एक बहुत ही मेहनती प्रयास किया गया है। इस कार्य में डॉ. दीपिका कोठारी (जैन विश्व भारतीय संस्थान में प्रोजेक्ट आफिसर) का भी अच्छा सहयोग रहा। उनके सहयोग से इस कोष को एक सुन्दर रूप मिला।

इस कोष में प्रयुक्त जीवों पर नजर डालने पर ऐसा लगता है कि आगम में करीब-करीब सभी किस्मों के जीवों पर अनेकों प्रसंगों में प्रकाश डाला गया है। जहां एक ओर मानव के नजदीक रहने वाले जीवों का उपादेयता के साथ वर्णन है, वहीं तरह-तरह के पक्षियों का भी सुन्दर वर्णन है। उन जीवों का वर्णन भी है जो जंगली किस्म के हैं, जैसे—खूंखार शेर, चीते, भेड़िये तो उनका भी वर्णन है जिन्हें देखते ही भय उत्पन्न होता है जैसे—अजगर, विभिन्न प्रकार के जहरीले सांप। वर्णन उन कीटों का भी है जो आम जीवन में मानव को परेशान करते हैं जैसे—चर्म कीट, दीमक, खटमल, अनाज की घुन, लकड़ी की घुन आदि। उसमें विविधता इस कदर है कि जहां एक तरफ सफेद मक्खी जो पेड़-पौधों में बीमारी फैलाती है, मकड़ियां जो जाले फैलाती हैं तो दूसरी तरफ चील, गिद्ध, उड़ने वाली गिलहरी, छिपकली जैसे जीवों का वर्णन है, लगता है आम आदमी की जानकारी के लिए कुछ भी नहीं छूटा। पानी में रहने वाले घड़ियाल, कछुआ, मछलियां, पानी के किनारे पर रहने वाले मेंढ़क, केकड़े, कछुवे आदि जीवों का वर्णन इसमें है।

निश्चय ही यह सुन्दर संग्रह है और इसकी विशेषता इसलिये और बढ़ जाती है क्योंकि यह पहला इस तरह का सुन्दर संग्रह है। सुन्दर चित्रों के साथ यह कोश छपा है। मुझे आशा है कि यह कोश बहुत ही लोकप्रिय होगा व इसकी प्रेरणा से और सुन्दर कोश आगे आने वाले समय में बनेंगे।

भोपालचंद लोढ़ा
कुलपति
जैन विश्व भारती संस्थान

लाडनूं
5 जून, 1998

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संपादकीय

जैन आगमों का ज्ञान सूक्ष्म और गहनतम है। इसमें आत्मविद्या के साथ-साथ सृष्टि, पर्यावरण-संतुलन, अणु-परमाणु, वनस्पति, खनिज, वस्त्र, वाद्ययंत्र, आभूषण, प्राणी आदि के विषय में महत्त्वपूर्ण सामग्री प्राप्त होती है। किन्तु अभी तक कुछेक विषयों को छोड़कर अनेक विषय ऐसे हैं जिनका विधिवत् स्पर्श भी नहीं किया गया। अनेक विषय अछूते हैं। आवश्यकता है कि उन विषयों को छुआ जाये और आधुनिक संदर्भ में उनको प्रस्तुत किया जाये। वैसे तो लगभग उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से ही विश्व के विद्वानों का ध्यान भारत के अमूल्य प्राचीन साहित्य की ओर आकृष्ट हो चुका था। मैक्समूलर जैसे प्राच्य विद्वानों ने जब से भारतीय वाङ्मय को अनुदित कर विद्वज्जगत् में प्रस्तुति दी है तब से विद्या की विभिन्न शाखाओं के तज्ज्ञों ने 2500-3000 वर्ष पुराने शास्त्रों को अपने अनुसंधान का विषय बनाना शुरू कर दिया था। वैदिक एवं बौद्ध परम्पराओं पर पिछले 150 वर्षों में सहस्त्रों शोध-ग्रंथ विभिन्न विद्या-शाखाओं के शोधकर्ताओं ने प्रकाशित किए हैं। इनकी तुलना में जैन परम्परा के विपुल साहित्य पर अब तक भी बहुत कम शोध-कार्य हो पाया है। वैसे तो आगम-साहित्य पर अनेक कोश निर्मित हुए हैं। फिर भी शोधकर्ताओं को एक विषय की सम्पूर्ण सामग्री एक ग्रंथ में प्राप्त हो सके, इस अपेक्षा को ध्यान में रखकर पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी एवं आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने आगम संपादन के साथ-साथ कोश निर्माण का कार्य भी हाथ में लिया। उनके मार्गदर्शन में एकार्थक कोश, निरुक्त कोश, देशीशब्द कोश, श्री भिक्षु आगम विषय कोश, वनस्पति कोश आदि कोश ग्रंथ प्रकाश में आए।

प्राणी कोश की परिकल्पना और निष्पत्ति

आज से लगभग तीन वर्ष पूर्व पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में भगवतीसूत्र के संपादन का कार्य चल रहा था। संपादन के अन्तर्गत एक स्थान पर अनेक पशु-पक्षियों के नामों का उल्लेख आया। उनके अर्थावबोध के लिए व्याख्या ग्रंथों का अवलोकन किया गया। किन्तु व्याख्याकारों ने भी इनमें से अनेक शब्दों को 'लोकतश्चावगन्तव्याः लोकतो वेदितव्याः' 'पक्षी विशेषः, पशु-विशेषः' आदि आदि कहकर उनके अवबोध की पूर्ण अवगति नहीं की। विभिन्न कोशों का अवलोकन करने के बाद भी हम निर्णायक स्थिति तक नहीं पहुंच पाए। तब गुरुदेव ने फरमाया—वनस्पति कोश की भांति यदि प्राणी कोश भी तैयार हो जाए तो चिर अपेक्षित कार्य की संपूर्ति संभव है। कोश निर्माण का कार्य भी आगम की महत्त्वपूर्ण सेवा है। इस कार्य के लिए गुरुदेव ने मुझे इंगित करते हुए कहा—क्या तुम इस कार्य को कर सकते हो? मैंने 'तहत्ति' कहकर अपनी सहमति प्रकट की और उसी दिन से इस कार्य में संलग्न हो गया।

सर्वप्रथम मैंने जैनागमों में प्रयुक्त प्राणी वाचक शब्दों की एक सूची बनाई और फिर उनके स्वरूप निर्णय के लिए अनेक ग्रंथों का अवलोकन प्रारम्भ किया। यह स्पष्ट है कि इस प्रकार का कार्य सरल नहीं है। प्राकृत भाषा में प्रयुक्त प्राणीवाचक शब्द वस्तुतः किस प्राणी-विशेष के परिचायक हैं, उसे सही सही जान लेना एवं आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के संदर्भ में उसकी तुलनात्मक प्रस्तुति कर देना एक बहुत ही श्रमसाध्य कार्य है। एक ही प्रजाति के प्राणियों की विभिन्न नस्लों के लिए अलग-अलग नामों का प्रयोग जहां हुआ है, वहां उनके बीच रहे हुए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्तर का स्पष्टीकरण करना और भी अधिक कठिन है। प्रस्तुत कोश में यथासंभव इन बातों पर विशेष ध्यान दिया गया है।

समय के साथ भाषा, शैली और अर्थ में परिवर्तन होता है—यह सर्वविदित है। यही कारण है कि आगमों में वर्णित अनेक शब्द ऐसे हैं जो भाषा, शैली और अर्थावबोध के परिवर्तन के कारण उनकी पहचान दुष्कर-सी हो गयी है। वैसी स्थिति में यह उलझन पैदा हो जाती है कि शब्द-विशेष का बिल्कुल सही अर्थ क्या होना चाहिए। इसका निष्कर्ष निकालने के लिए अन्य आगम ग्रंथ, अन्य समकालीन साहित्य, विभिन्न प्रकार के कोश ग्रंथ, आधुनिक प्राणिशास्त्रीय ग्रंथ आदि का विश्लेषण आवश्यक हो जाता है। मैं कुछेक शब्दों का विमर्श यहां प्रस्तुत कर रहा हूं—'छीरल' शब्द प्रश्नव्याकरण सूत्र में भुजपरिसर्प (सर्पवर्ग) के अन्तर्गत उल्लिखित है। आधुनिक किसी भी कोश में यह शब्द प्राणी के अर्थ में प्राप्त नहीं हुआ। फिर प्रान्तीय भाषाओं के कोश के अवलोकन से यह ज्ञात हुआ कि 'छीरल' शब्द उ.प्र. में 'सांप की वामनी' (सर्पवर्ग) के लिए प्रयुक्त होता है। अतः अर्थ की संगति बैठ गई।

'पक्खिविराली' शब्द भगवती 3/1 और प्रज्ञा. 1/79 में चर्म पक्षी के रूप में प्रयुक्त हुआ है। व्याख्याकारों ने उसका संस्कृत रूपान्तर 'पक्षिविडाली' किया है। किन्तु उसका स्पष्टार्थ नहीं बताया है यह किस पक्षी का वाचक है। अनेक कोशों एवं ग्रंथों का अवलोकन करने के बाद भी इस शब्द का अवबोध नहीं हो पाया। फिर डॉ. के.एन. दवे की Bird in Sanskrit Literature में यह शब्द प्राप्त हुआ। उन्होंने इनका अर्थ—A Flying fox, The large fruit Bat उड़ने वाली लोमड़ी, बड़ी चमगादड़ किया है। यही अर्थ संभवतः आगमकार को इष्ट था।

'चोर' शब्द ठाणं 1/3/15 भग. 9/150 में प्राणिवर्ग में प्रयुक्त हुआ है। व्याख्याकारों ने इसकी व्याख्या नहीं की है। इस शब्द की जानकारी के लिए अनेक कोशों को देखा गया, पर प्राणी के अर्थ में यह शब्द उपलब्ध नहीं हुआ। फिर प्रान्तीय भाषाओं के कोश के अवलोकन से यह ज्ञात हुआ कि 'चोर' शब्द हरियाणा में एक जंगली जानवर के लिए प्रयुक्त होता है जिसे वर्तमान में 'रेटेल' नाम से जाना जाता है। इसी प्रकार और भी अनेक शब्द हैं—जैसे क्षीर विडालिका, सल्ल, पोंडरीय, हलिमच्छ आदि।

जिस प्रकार अर्थबोध के परिवर्तन के कारण वर्तमान की चालू भाषा में पहचान दुष्कर है उसी प्रकार आगमों में अनेक शब्द ऐसे भी आए हैं, जो लक्षणों के आधार पर उल्लिखित हैं जैसे—आसीविष।

आसीविष शब्द ठाणं, प्रज्ञा, प्रश्नव्या. आदि. आगमों में प्रयुक्त हुआ है, जिसका अर्थ है, जिस सर्प की दाढ़ा में विष हो उसे आसीविष कहते हैं। यह शब्द सर्प के लक्षण के आधार पर रखा गया प्रतीत होता है। यह कोई नाम नहीं है, केवल लक्षण है।

पुप्फविंटिय शब्द भी आगमों में अनेक स्थलों पर प्राप्त होता है। इसका अर्थ है—पुष्प के वृन्त में पाए जाने वाला कीट। यह नाम भी किसी एक कीट के लिए प्रयुक्त हुआ हो ऐसा संभव नहीं लगता, बल्कि जो भी कीट पुष्प के वृन्त में पाए जाते हैं वे पुष्पविंटिय कहलाते हैं। इसी प्रकार फल के वृन्त में पाए जाने वाले कीट 'फलविंटिय,' तने में पाए जाने वाले कीट 'तणविंटिय' कहलाते हैं। जिनकी दृष्टि में विष होता है, वे सर्प दृष्टिविष कहलाते हैं तथा जिनकी लाला विषमय होती है वे सर्व लालाविष कहलाते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आगमों में प्राणीवाचक शब्द

भगवती, प्रज्ञापना, जीवाजीवाभिगम प्रश्नव्याकरण, उत्तराध्ययन आदि आगमों में प्राणी वाचक शब्दों की लम्बी तालिकाएं प्राप्त होती हैं। प्रज्ञापना में इन्द्रियों के आधार पर इनका वर्गीकरण इस प्रकार है–

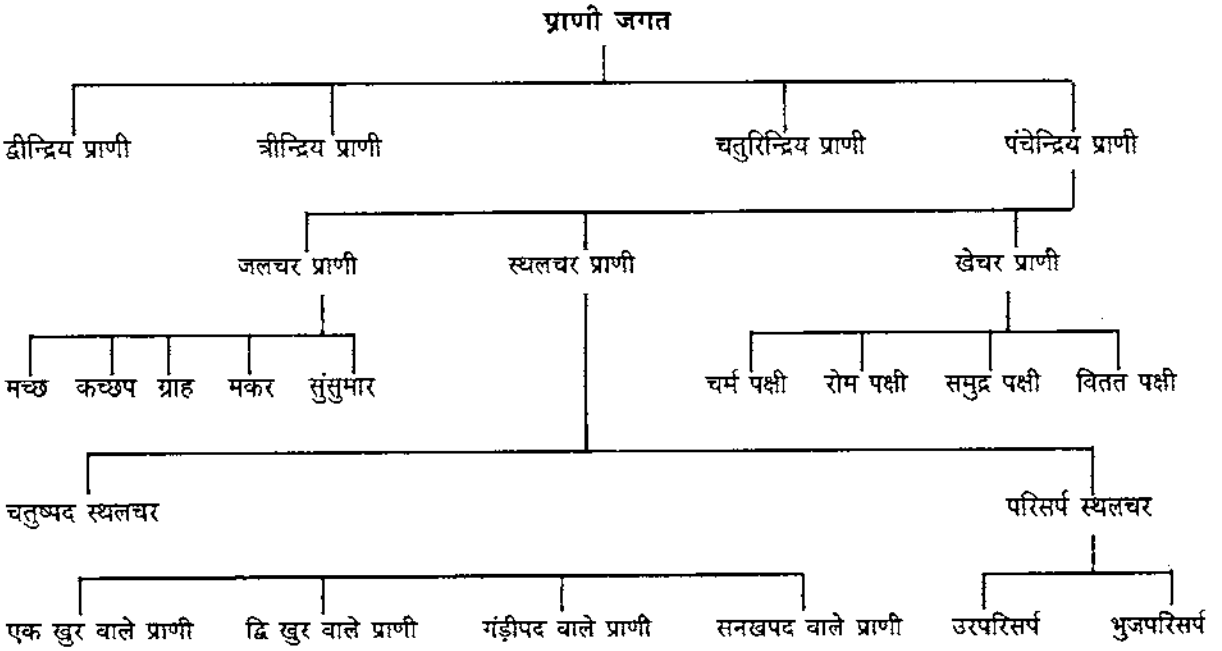

जीव वैज्ञानिकों ने जन्तु जगत को उनकी समानताओं और असमानताओं के आधार पर अलग-अलग समूहों में बांटा है। उनके अनुसार जीवों (प्राणियों) का वर्गीकरण इस प्रकार है-

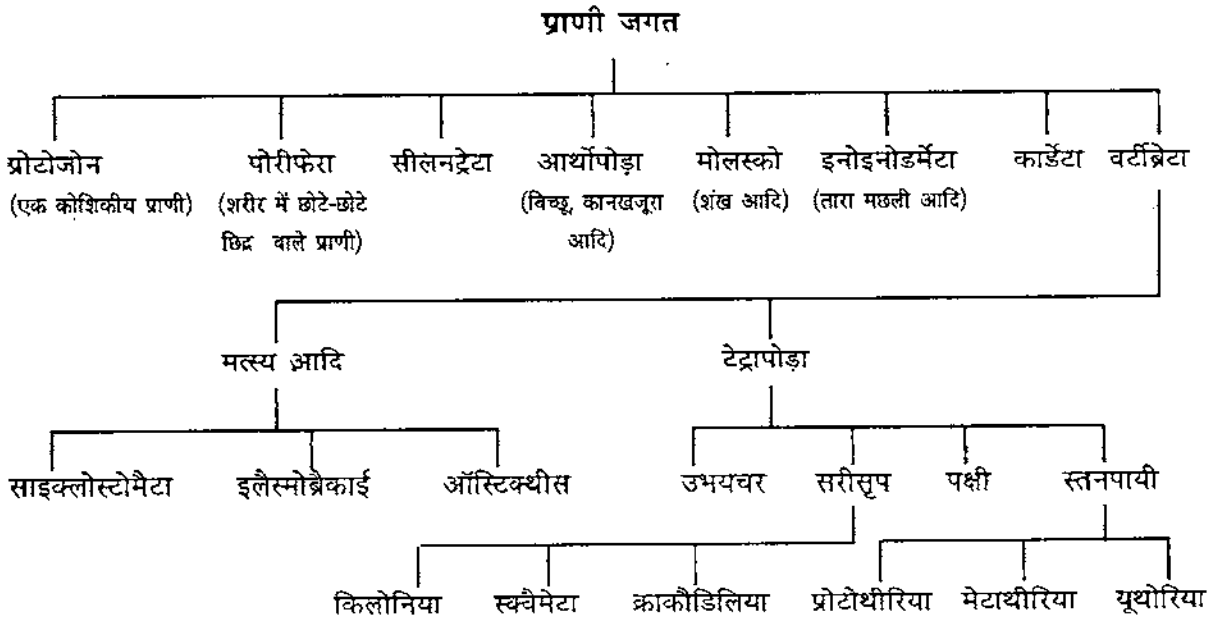

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राणी कोश की रूपरेखा

प्रस्तुत ग्रंथ में कीट-पतंग, पक्षी, रेंगने वाले जीव, मछली, जानवर आदि के नामों की कुल संख्या 570 है। उनको अकारादि अनुक्रम से संयोजित किया है, इसमें मूल शब्द प्राकृत भाषा के हैं। वे मोटे, गहरे टाइप में क्रमांक से अनुगत हैं। उनके सामने कोष्ठक में संस्कृत छाया दी गई है। जिस शब्द की छाया नहीं बनती यानि जो देशी शब्द हैं वे मूल शब्द ही कोष्ठक में दिये गये हैं। कोष्ठक के सामने उसके प्रमाण स्थल का निर्देश है। मूल प्राकृत शब्द के नीचे अंग्रेजी भाषा में प्रचलित संज्ञा है। अंग्रेजी शब्द के सामने हिन्दी के पर्याय तथा क्वचित् अन्यान्य भाषाओं के पर्याय भी दिए गए हैं।

यह विवरण अनेक ग्रंथों से चयनित होने के कारण इसमें भाषा की एकरूपता नहीं है। फिर भी विषय की पूरी जानकारी हो सके, इसके लिए भाषा का यत्र-तत्र परिमार्जन भी किया है। डॉ. के.एन. दवे की पुस्तक Birds in Sanskrit Literature का इसमें काफी उपयोग किया गया है। 'जानवरों की दुनिया' नामक पुस्तक वर्तमान में अप्राप्त है। फिर भी हमें जो प्रति प्राप्त हुई, उसमें प्रकाशक और लेखक के नाम वाला पृष्ठ नहीं था। इसलिए ग्रंथ सूची में प्रकाशक और लेखक का नाम नहीं दिया गया।

अंत में तीन परिशिष्ट दिए हैं- प्रथम परिशिष्ट में अकारादि क्रम से प्राकृत शब्द तथा उसका हिन्दी एवं अंग्रेजी दिया गया है। द्वितीय परिशिष्ट में मूल प्राकृत शब्द तथा द्वीन्द्रय आदि जाति दी गई हैं। तृतीय परिशिष्ट में संदर्भ ग्रंथसूची प्रस्तुत की गई है।

आभार

हमारे प्रेरणा-स्रोत परमाराध्य गणाधिपति श्री तुलसी का सतत मार्गदर्शन, अपूर्व वात्सल्य भाव, निरन्तर सान्निध्य ही इस कोश-ग्रंथ की निष्पत्ति में मूल आहार बना है। उनकी अद्भुत प्रेरणा-शक्ति न मिलती, तो शायद इतना दुरुह कार्य कभी संभव न होता।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी 20वीं शताब्दी के आगम-दिवाकर हैं। उनके प्रत्यक्ष निदेशन में यह कार्य संपादित करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। आचार्य श्री ने 50 वर्षों से अधिक समय से सतत आगम-शोध-कार्य का उपक्रम चालू रखा है। उनकी यह दीर्घ तपस्या फलवती हो रही है। जैन विश्व भारती द्वारा प्रायोजित आगम साहित्य प्रकाशन के अन्तर्गत प्रकाशित सारे शोध-ग्रंथ इनके अन्तःदर्शन (intuition) के लेजर (Laser) किरणों की पैनी पहुंच के कारण समग्र विद्वज्जगत में प्रशंसनीय हुए हैं। प्रस्तुत ग्रंथ में भी यत्र-तत्र जो नए तथ्य सामने आए हैं, उनमें उनकी मनीषा का अकल्पनीय योग है।

श्रद्धेय युवाचार्य श्री महाश्रमण जी की सतत प्रेरणा, प्रोत्साहन और मार्गदर्शन ने मेरे मार्ग को प्रशस्त किया और गति प्रदान की।

महाश्रमणी साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा जी का समय-समय पर सुझाव एवं मार्गदर्शन ने मेरे उत्साह को निरन्तर वृद्धिंगत रखा है।

इस श्रमसाध्य कार्य में मुनिश्री महेन्द्र कुमार जी एवं डॉ. दीपिका कोठारी (सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. डी. एस. कोठारी की पौत्री), जो जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय में शोध-विद्वान के रूप में कार्यरत थीं, ने अपनी वैज्ञानिक जानकारी के आधार पर मेरी अनेक समस्याओं को समाहित किया।

मुनि श्री सुखलाल जी, मुनि श्री दुलहराज जी, मुनि श्री मोहजीत कुमार जी और मुनि श्री धनंजय कुमार जी का अनुभव एवं सुझाव आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता रहा है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेरी संसारपक्षीया बहिन समणी रश्मिप्रज्ञा जी (साध्वी रक्षित यशा जी) का लिपिकरण एवं अनेक कार्यों में सहयोग रहा है, तदर्थ-साधुवाद। चित्रों के संकलन में भिक्षु चेतना परिषद (गंगाशहर) एवं जैन दर्शनमाला (गंगाशहर) के योगदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता। कोश सम्बन्धी पुस्तकों को उपलब्ध कराने में ग्रंथागार के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री के.सी. गुप्ता जी एवं अन्य लोगों का सहयोग भी उल्लेखनीय है। प्रकाशन व्यवस्था में कुशलराजजी समदड़िया एवं श्री पन्नालाल जी बांठिया की कार्यशीलता भी इस कार्य को निष्ठा तक पहुंचाने में उपयोगी सिद्ध हुई है। जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के कुलपति प्रो. बी.सी. लोढ़ा ने इस को । का पारायण कर विद्वत्तापूर्ण पुरोवाक् लिखा। उनके प्रति मेरी मंगल भावना।

ज्ञात अज्ञात, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जिन-जिनका सहयोग प्राप्त हुआ है, उनके प्रति कृतज्ञता एवं शुभाशंसा।

आशा है प्रस्तुत ग्रंथ न केवल आगम अध्येताओं के लिए उपयोगी होगा, अपितु प्राणी-विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान आदि विभिन्न शाखाओं के अध्येताओं के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा तथा उनकी जिज्ञासा को संतुष्ट करने में सहयोगी बनेगा।

स्वास्थ्य निकेतन,
लाडनूं
22.5.98

—मुनि वीरेन्द्र कुमार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संकेत

अं.वि.	-	अंग विज्जा	नि. चू.	-	निशीथ चूर्णि
अनु.	-	अनुयोग द्वार	पा.	-	पाठान्तर
अभि.	-	अभिधान चिंतामणि कोश	पाइअ.	-	पाइअसद्दमहण्णवो
आ.चू.	-	आयार-चूलो	प्रज्ञा	-	प्रज्ञापना
अल्प.	-	अल्प परिचित शब्द कोश	प्रश्नव्या.	-	प्रश्नव्याकरण
उत्त.	-	उत्तरज्झयणाणि	K.N. Dave	-	Birds in Sanskrit Literature
उवा.	-	उवासगदसाओ			
ओ. नि.	-	औध नियुक्ति	भग.	-	भगवती
औप.	-	औपपातिक	राज.	-	राजप्रश्नीय
जंबू	-	जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति	सम.	-	समवायांग
ज्ञाता.	-	ज्ञाताधर्मकथा	सूर्य.	-	सूर्यप्रज्ञप्ति
जीव.वि.वृ.	-	जीव विचार वृत्ति	गुज.	-	गुजराती
जीव.वि.प्र.	-	जीव-विचार प्रकरण	हरि	-	हरियाणा
जीवा.	-	जीवाजीवाभिगम्	राज.	-	राजस्थानी
ठाणं	-	स्थानांग	कन्न.	-	कन्नड़
दसवै.	-	दसवैआलियं	वं.	-	बंगाली
दशा.	-	दशाश्रुतस्कंध	उ.प्र	-	उत्तर प्रदेश
Nature	-	Purnelles concise Encylopedia of Nature	हा. टी. प.	-	हरिभद्रीय टीका पृष्ठ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंक [अंक] प्रश्नव्या. 2/12
A kind of Conch Shell— शंखराज की एक जाति।
देखें—शंख

अंधग [अन्धक] दस. 2/8
A kind of Snake— अन्धक सर्प
विवरण—अगन्धन कुल में उत्पन्न सर्प मंत्रवादी के द्वारा बुलाए जाने पर भयंकर अग्नि में प्रवेश कर जाते हैं, पर वमन किए हुए विष को वापस नहीं पीते। आधुनिक विज्ञान इस बात को स्वीकार नहीं करता, उसके अनुसार उत्तम जाति के सर्प तीव्र विष वाले होते हैं अतः उनके द्वारा डसा हुआ व्यक्ति 10-30 मिनट में मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।
(हा.टी.प. 95)

अंधिय [अन्धिक] भग. 15/108, प्रज्ञा. 1/51, उत्त. 36/146
Caipsid bug—कैपसिट बग (कीट), अंधा
आकार—लगभग 5 M.M. की लम्बाई वाला कीट।
लक्षण—शरीर का रंग पीला-हरा होता है। यह फसलों आदि को नुकसान पहुंचाता है।
विवरण—इसकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। वैज्ञानिक भाषा में इसे कैलोकोरिस अंगस्टैटस लैथिरी कहते हैं।
[विवरण के लिए द्रष्टव्य—सचित्र विश्व कोश, फसल पीड़क कीट]

अच्छ [ऋक्ष] भग. 3/209, ज्ञाता. 1/1/178, प्रश्नव्या. 1/6
Sloth Bear—रीछ
आकार—भालू से काफी मिलता-जुलता।
लक्षण—शरीर का रंग गहरा काला। बाल-लंबे, खुरदरे और घने। छाती पर 'V' के आकार का सफेद चिह्न। मस्तक चौड़ा और थूथन लंबी होती है।
विवरण—यह भालू की जाति का ही एक प्राणी है। इसका चेहरा देखने में तिकोना लगता है। चपटी पैरों वाली टांगें झुकी हुई होती हैं। पैरों के अंत में लम्बे सफेद

पंजे होते हैं। यह संपूर्ण भारत में चट्टानी एवं जल स्रोतों के समीप वाले जंगलों में पाया जाता है।
[विशेष—विवरण के लिए द्रष्टव्य—भारत के संकट ग्रस्त प्राणी, सचित्र विश्व कोश]

अच्छिल [अक्षिल] उत्त. 36/148
A kind of Locust—टिड्डी की एक जाति।
देखें—डोल

अच्छिरोडए [अक्षिरोड़क] प्रज्ञा. 1/51. उत्त. 36/148
A kind of Locust—टिड्डी की एक जाति।
देखें—डोल

अच्छिवेहए [अक्षिवेधक] प्रज्ञा. 1/51, उत्त. 36/147
A kind of Locust—टिड्डी की एक जाति।
देखें-डोल

अट्ठिकच्छभ [अस्थिकच्छप] प्रज्ञा. 1/57
Hawksbill—बाजचोंचा कच्छप, अस्थिबहुल कच्छप।
आकार—चौकोर, त्रिकोणाकार आदि अनेक प्रकार के होते हैं।
लक्षण—इनमें अस्थि का भाग अधिक और मांस का भाग कम होता है। संकरा कांटेदार 'केरापेस' जिसमें एक दूसरे को ढंकते हुए कवच जैसी पट्टियां होती हैं। पतली गर्दन व बाज की चोंच जैसी थूथनी इस जाति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

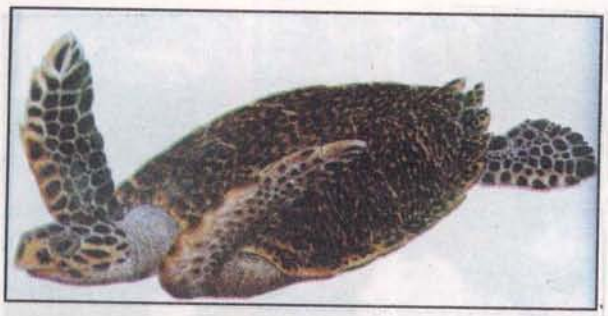

के कछुए की विशेषताएं हैं। शरीर का रंग कहरुव, पीला-नारंगी और लाल-भूरा होता है।

विवरण—संसार के अनेक भागों के गर्म समुद्रों में इनकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं, जैसे बाजचोंचा, कठखोपड़ी वाला कच्छप, खप्पर वाला कच्छप, झटका मारने वाला कच्छप आदि।

विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—कच्छभ

अड् [अट्] प्रश्नव्या. 1/36, प्रज्ञा. 1/79

House Sparrow—गौरेया, गृह-चटक, चिड़िया।

आकार—बुलबुल के समान।

लक्षण—नर के सिर का ऊपरी भाग स्लेटी और गर्दन के नीचे का भाग काला तथा पीठ व डैने कत्थई रंग के होते हैं, जिनमें छोटी-छोटी काली और सफेद धारियां होती हैं। मादा के शरीर का ऊपरी हिस्सा भूरा और डैने गहरे-भूरे रंग के होते हैं।

विवरण—संसार भर में पाए जाने वाला यह पक्षी मानव-बस्ती के आस-पास रहना पसंद करता है। संध्या के समय अनेक गौरेया आपस में मिलकर बहुत शोर मचाते हैं। इनकी चहचहाहट से प्रायः सभी परिचित हैं।

अडिल [अटिल] प्रज्ञा. 1/78

House-Swift—बबीला, बतासा, अडिला।

आकार—गौरेया से कुछ छोटा।

लक्षण—धुएं की तरह काला पक्षी। गले एवं पीठ के पीछे का हिस्सा सफेद। दुम छोटी तथा चौकोर। पंख लम्बे, नुकीले होते हैं।

विवरण—पुराने किलों, उजड़ी हुई इमारतों, एवं खाली मकानों में रहने वाला यह पक्षी दिन-भर तेज गति से उड़ता रहता है। पैर विशेष प्रकार के बने होने के कारण, चारों उंगलियां आगे की ओर रहती हैं। रंग-भेद के आधार पर इनकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। [विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य— K.N. Dave पृ. 166]

अडिल [अटिल] प्रज्ञा. 1/78

The Small bat—छोटी चमगादड़।

आकार—4-5 इंच से 10-12 इंच तक लम्बा स्तन धारी प्राणी।

लक्षण—शरीर का रंग कत्थई-भूरा। अगले पैर पंखों में परिवर्तित होने वाले। यह दिन-भर वृक्ष एवं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंधकारमय स्थान आदि में उल्टा लटका रहता है।

विवरण—विश्व-भर में इनकी 950 प्रजातियां पाई जाती हैं। इनमें अधिकांश मांसाहारी, कुछ शाकाहारी एवं तीन प्रजातियां खून पीने वाली होती हैं। इटली के जीव वैज्ञानिक लैजारो स्पैलेजानी के अनुसार शिकार पकड़ने या अवरोधों से बचने के लिए चमगादड़ आंखों की जगह कानों का इस्तेमाल करता है। उसके गले से एक विशेष प्रकार की ध्वनि निकलती है जो सामने वाली वस्तु से टकराकर उसके गुण धर्म आदि की सारी सूचनाएं ले आती है।

1938 में वैज्ञानिकों ने पहली बार जाना कि चमगादड़ जो ध्वनि निकालता है उन ध्वनि तरंगों की आवृत्ति 50.00 हर्टस से लेकर 1,50,000 हर्टस के बीच होती है। जबकि मनुष्यों के कानों को सुनाई देने की क्षमता मात्र 20 हर्टस से लेकर 20 हजार हर्टस तक ही होती है।

खुद के द्वारा निकाली गई आवाज की प्रतिध्वनि की सूक्ष्म बारीकियों को सुनने के लिए चमगादड़ का कान प्राणी-विशेषज्ञों के लिए आश्चर्य का विषय है। चमगादड़ों की श्रवण शक्ति की बारीकियों का उपयोग अब अंधे-व्यक्तियों को चलने में मदद करने वाले यंत्रों के रूप में किया जा रहा है।

[विशेष-विवरण के लिए द्रष्टव्य- K.N. Dave पृ.-166 एवं सचित्र विश्व-कोश]

अणुल्लक [अणुल्लक] उत्त. 36/129

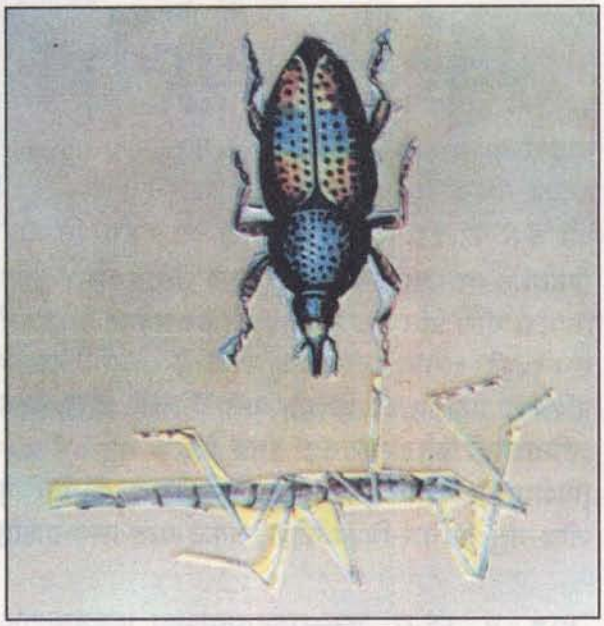

A Small Wood-Worm—अणुल्लक, छोटा काष्ठ-कीट।

देखें-काष्ठाहार

अत्थभिल्ल [अत्थभिल्ल] नि.चू. 2 पृ. 93

Bear-भालू

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आकार—देखने में रीछ के समान प्रतीत होने वाला प्राणी।

लक्षण—शरीर का रंग गहरा काला। घने लम्बे बाल और ठूंठ जैसी पूंछ। हाथ-पैर मजबूत एवं खोदने तथा लड़ने के लिए शक्तिशाली पंजे होते हैं।

विवरण—विश्वभर में इनकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। काला भालू 40 K.M. प्रति घंटा की गति से दौड़ सकता है। कुछ भालू गिलहरी की तरह पेड़ों पर तेजी से चढ़-उतर सकते हैं। ध्रुव प्रदेशों और उत्तरी साइबेरिया तथा कनाड़ा में सफेद भालू पाए जाते हैं। इनका वजन 1000 K.G. तक होता है।

यह बर्फ पर 25 K.M. प्रति घंटा की रफ्तार से दौड़ सकता है तथा पानी में 15 फीट की छलांग भरता हुआ सिर्फ 6 मील प्रति घंटा की गति से तैर सकता है। इनमें सूंघने की क्षमता अत्यधिक होती है। अमेरिका के पश्चिमी पहाड़ों पर मिलने वाला ग्रिन्ली भालू बेहद शक्तिशाली और भयानक होता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—विश्व के विचित्र जीव-जंतु, सचित्र-विश्व कोश, संकट ग्रस्त वन्य-प्राणी]

अमिल [अमिल] ओ.नि. 368

Sheep—भेड़, गाडर, उरभ्र, मेंढ़।

आकार—बकरी से कुछ छोटा एवं मोटा।

लक्षण—पालतू भेड़ों के पैर छोटे और दुम लम्बी होती है, उनके ऊपर ऊन का घना आवरण तथा सींग छोटे होते हैं। जब कि जंगली भेड़ों के पैर बड़े और दुम छोटी होती हैं।

विवरण—विश्व में भेड़ों की अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। यह एक सीधा-सादा प्राणी है। जंगली भेड़ के सींग बहुत लम्बे होते हैं। इनका दूध औषधि के रूप में भी प्रयुक्त होता है।

अमेरिका की एक भेड़ के बारे में कहा जाता है कि वह 5 से 10 मील की दूरी से अपने शत्रु को देख लेता है।

[विशेष-विवरण के लिए द्रष्टव्य—सचित्र विश्व कोश, जानवरों की दुनिया]

अय [अज] प्रज्ञा. 1/64 जम्बू. 2/34 उत्त. 7/7, 9 अनु. 12

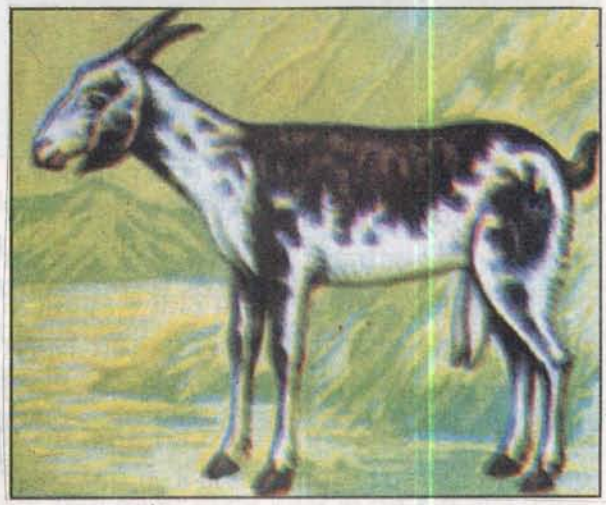

Goat—बकरा, मष।

आकार—2 फीट से 1 मी. तक ऊंची।

लक्षण—सभी रंगों में पाए जाने वाली बकरी के सिर पर दो सींग होते हैं। पूंछ छोटी एवं मोटी। पैर शरीर की अपेक्षा बड़े होते हैं।

विवरण—विश्वभर में इनकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। हिमालय की जंगली बकरी 1 मी. तक ऊंची होती है। इसके सींग घुमावदार होते हैं जो कभी-कभी डेढ़ मीटर तक लम्बे होते हैं। तुर्की में अंगोरा नामक बकरी ऊन के लिए पाली जाती है। स्विट्जरलैंड में 'सानेन' जाति की बकरी दूध खूब देती है। भारत में दक्षिणी पठार की अमनापुरी बकरी, पश्चिम-भारत की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूरती बकरी तथा बंगाल की गंजाम और तेलंगाना की बकरी उत्तम जाति की होती है।

अयगर [अजगर] प्रश्नव्या. 1/7, प्रज्ञा. 1/68 जम्बू. 2/41

Python—अजगर, पेरिया पम्बू, मालाई पम्बू (तमिल), मलामपम्बू (मलयालम), पेड़ा-पोड़ा (तेलुगू)।

आकार—20-40 फीट लम्बा एवं एक फीट तक मोटा।

लक्षण—पीठ का रंग पीला होता है, जिस पर टेढ़े-मेढ़े चौकोर चकत्ते होते हैं। मुंह बहुत बड़ा और धड़ चपटा होता है। शरीर के बीच का भाग सबसे मोटा होता है।

विवरण—विश्व में अजगर की मुख्य दो जातियां पाई जाती हैं- पाइथन और बोया। यह अपने शिकार को समूचा ही निगल जाता है। इसकी पकड़ इतनी सुदृढ़ होती है कि एक बार इसके पाश में फंसने के बाद शिकार की हड्डी-पसलियां सुरक्षित नहीं रह पातीं। इस जाति के कुछ सर्प अच्छे तैराक होने के साथ-साथ पेड़ों पर चढ़ने में भी कुशल होते हैं। एनाकोण्डा नामक अजगर प्रायः जलाशयों के पास पेड़ों पर लटके रहते हैं और रात को पानी पीने के लिए आए जानवरों को अपना शिकार बना लेते हैं।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—जानवरों की दुनिया, संकट ग्रस्त वन्य प्राणी, इंडियन रेपटाइल्स]

अरक [अरक] अं वि पृ.-39

Worm—कृमि, लट।

आकार—कुछ मिलीमीटर से 2 मीटर तक लम्बा।

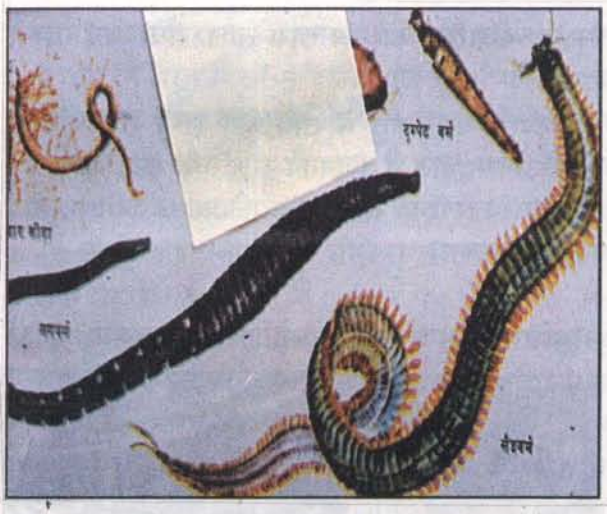

लक्षण—बहुरंगी, चपटा, गोल, लम्बा, मुलायम तथा दो भागों में विभक्त शरीर।

विवरण—पेड़-पौधों, सूखी-गीली जमीन, मनुष्य एवं जानवरों के शरीर में पाए जाने वाला यह बिना पैर वाला कीट है। कुछ के यदि पैर होते हैं तो भी नहीं के बराबर।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Encyclopedia in Color, Nature]

अलक्कडअ [अलक्कडअ] उत्त. वृ.टी. पृ. 829

Rabid dog—पागल कुत्ता।

आकार—सामान्य कुत्तों की भांति।

लक्षण—पागल कुत्ते की पूंछ नीचे की ओर झुकी हुई और मुख से निरन्तर लार गिरती रहती है। चाल बेढंगी एवं अस्थिर होती है।

विवरण—किसी भी जाति के कुत्ते पागल हो सकते हैं। ये बहुत खतरनाक एवं डरावने से लगते हैं। इनके समीप अन्य कुत्ते जाने का साहस नहीं करते। ये चलते-दौड़ते समय अर्थात किसी भी समय किसी को काट सकते हैं।

[विवरण के लिए द्रष्टव्य-Nature]

अलस [अलस] उत्त. 36/128

A small Poisonous Animal—अलस, छोटा जहरीला कीट।

आकार—1-2 मिलीमीटर से 5-6 फीट तक लम्बा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लक्षण—शरीर का रंग भूरा-लाल तथा कई छल्ले युक्त।

विवरण—वर्षा ऋतु में सांप जैसे लम्बे लाल रंग के जीव उत्पन्न होते हैं, जिनको अलसियां कहा जाता है। [विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य- Jaina Sutra, जीव विचार प्रकरण]

अवधिका [अवधिका, उपदेहिका] प्रश्नव्या. 1/33

Termite—दीमक।

देखें—उद्देसग (दीमक)

अस्स [अश्व] आ. चू. 15/28 सू. 1/3/33 ज्ञाता. 1/1/128, प्रज्ञा. 1/63

Horse—घोड़ा

आकार—5 फीट से 7 फीट तक की ऊंचाई वाले प्राणी।

लक्षण—शरीर का रंग- कुम्मैद, सुरंग, सफेद, मुश्की आदि अनेक प्रकार का। पूंछ लम्बी एवं गर्दन अपेक्षाकृत छोटी।

विवरण—विश्व में इनकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। अरबी नस्ल के घोड़े विश्व में विख्यात हैं। भारत में काठियावाड़ के घोड़े प्रसिद्ध हैं। इनका उपयोग प्राचीन काल से अब तक घुड़सवारी, दौड़, माल ढोने, सवारी आदि के लिए किया जाता है। इनके होठों में गजब का स्पर्श ज्ञान होता है। यह अपने मालिक का अत्यधिक वफादार होता है।

[विवरण के लिए द्रष्टव्य—Nature, सचित्र-विश्वकोश]

अस्सतर [अश्वतर] प्रज्ञा. 1/63

Mule—खच्चर।

आकार—खर (गधा) से कुछ बड़ा।

लक्षण—शरीर का रंग कत्थई और कालापन लिए हुए। घोड़े और गधे के बीच का प्राणी।

विवरण—इसकी अनेक जातियां पाई जाती हैं। यह घोड़े और गधे का मिश्ररूप है। इसकी पूंछ घोड़े जैसी एवं मुख गधे जैसा प्रतीत होता है। यह भार ढोने में बेजोड़ होता है।

अहिणूका [अहिणूका] अंवि. पृ. 69

Female Snake—सर्पिणी

देखें—अही।

अहिलोढ़ी [अहिलोढ़ी] दसा. चू.पृ. 68

Female Chamileon—मादा गिरगिट।

आकार—घरेलू छिपकली से बड़ा।

लक्षण—पार्श्व में चपटे डील-डौल वाला यह दिनचर प्राणी हरे रंग का होता है किन्तु स्थान आदि के अनुसार अनेक रंगों में बदल सकता है। सिर पर टोप जैसी रचना इसे विचित्र सूरत वाला प्राणी बना देती है। इसके शरीर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पर दानेदार चकत्ते होते हैं। यह एक साथ दो भिन्न दिशाओं में देखने की क्षमता रखता है। क्योंकि सिर को बिना घुमाए आंखों को किसी भी दिशा में घुमा सकता है। पूंछ लम्बी तथा घड़ी की स्प्रिंग की तरह कुंडलित होती है।

विवरण—इसकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। पेड़ों पर रहने वाला गिरगिट जीभ से शिकार नहीं पकड़ता बल्कि शिकार के बहुत पास जाकर सीधे मुंह से शिकार पकड़ता है।

जमीन पर रहने वाला गिरगिट अपने शिकार पर दोनों आंखें फोकस कर काफी दूर से बिजली की गति से जीभ बाहर फेंकता है। गोंद जैसे चिपचिपे स्राव में शिकार चिपक जाता है, जिसे यह तुरंत मुंह में खींच लेता है। शिकार को चबाता नहीं। सीधे निगल जाता है।

[विवरण के लिए द्रष्टव्य—रेंगने वाले प्राणी, जानवरों की दुनिया, Indian Reptiles]

अहिसलाग [अहिसलाग] प्रज्ञा. 1/71

Jones saind Boya—दुमुंही सर्प, राजसर्प, श्रेष्ठ सर्प, अहिसलाग।

देखें—चक्कलड़ा, चक्कवुंडा।

अही [अहि] प्रज्ञा. 1/68, 71

Snake—सांप, सर्प।

आकार—कुछ इंच से लेकर लगभग 40 फुट तक लम्बा।

लक्षण—लम्बा, बलखाने वाला शरीर। खाल के ऊपर चीमड़ छिलके रहते हैं। इनके छाती की हड्डी नहीं होती है और न पैर। बिलों में रहने वाले सांपों को छोड़कर अधिकतर सांपों की दृष्टि अत्यन्त तीव्र होती है। आंखें पलक रहित और पारदर्शी खाल से ढकी रहती हैं। यही कारण है कि इनकी आंखें सदा खुली हुई और घूरती हुई-सी दिखाई देती हैं। ये सीधे न चलकर टेढ़े-मेढ़े या लहरदार ढंग से चलते हैं।

विवरण—भारत में सांपों की लगभग 300 प्रजातियां और विश्व भर में 2500 से अधिक प्रजातियां पाई जाती हैं, जिनमें से लगभग 500 जातियां ही अधिक विषैली हैं। विषैले सांपों के मुंह में दो विष-दंत होते हैं जो लम्बे और पोले होते हैं, जिनकी जड़ के पास विष की थैली होती है। जब सांप किसी के शरीर में अपने विष-दंत गड़ाते हैं तो विष की थैली पर दबाव पड़ता है और दांतों द्वारा विष शरीर में प्रवेश कर जाता है। सांप की रीढ़ में मनुष्य की रीढ़ की अपेक्षा बहुत अधिक छोटी-छोटी हड्डियां होती हैं। इसीलिए ये अपने को इधर-उधर मोड़ते हुए रेंग सकते हैं या कुंडली मार कर बैठ सकते हैं। ये तेजी से दौड़ सकते हैं, पेड़ पर भी चढ़ सकते हैं, पानी पर तैर सकते हैं। जो सांप दिन में शिकार करते हैं उनकी आंखों की पुतली गोल होती है और जो रात्रि में विचरण करते हैं, उनकी आंखों की पुतली बिल्ली के समान लंबी अंडाकार होती है। इनमें सूंघने की शक्ति अत्यधिक होती हैं। दुशाखी जीभ थोड़ी-थोड़ी देर में बाहर निकालते रहते हैं। अजगर, वाइनसांप, वाइपर आदि कुछ सांपों को छोडकर शेष सांप अंडे ही देते हैं।

आइण्ण [आकीर्ण] द.चू. 2/6 दसा. 10/14

Horse of Good breed—जातिवान् घोड़ा।

* अथर्ववेद में अश्व को तीन श्रेणियों में विभक्त किया है— अधम, मध्यम और उत्तम।

उत्तम जाति के घोड़े दस योजन (15 मील) से 12 योजन (18 मी.) की यात्रा एक दिन में कर सकते हैं। ये इतने समझदार होते हैं कि मालिक के इशारे पर कार्य में प्रयुक्त हो जाते हैं। प्राचीन काल में कंबोज के घोड़े अपनी अनेक विशेषताओं के कारण प्रसिद्ध थे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(अथर्ववेद 6/131/6)
[शेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—अस्स (अश्व)]

आडासेतीय [आडासेतीक] प्रश्नव्या. 1/9
Black ibis—बाज, कालाबाज, करनकुल, आडासेतीक।
आकार—सफेद आइविस से कुछ बड़ा।
लक्षण—काले रंग का पक्षी। इसकी कर्ल्यु जैसी लम्बी दुम नीचे की ओर झुकी रहती है। कंधों के पास सफेद धब्बा और ईंट जैसी लाल टांगें होती हैं।
विवरण—भारत, वर्मा, पाकिस्तान आदि में पाए जाने वाला यह पक्षी देखने में सुन्दर एवं मनोहर लगता है। इनकी टोलियां अनेक आकृतियां बनाती हुई उड़ती हैं।
[विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave, पृ. 81, 124, भारतीय पक्षी]

आवत्त [आवर्त्त] ठाणं, 2/540, प्रश्नव्या. 1/6, 3/7
A horse with curly hair consided lucky—घुंघराले बालों वाला भाग्यशाली घोड़ा।
देखें—आइण्ण
[विशेष-विवरण के लिए द्रष्टव्य—विलियम डिक्शनरी]

आवल्ल [आवल्ल] उ.शा.टी.प. 192
Bull—बैल।

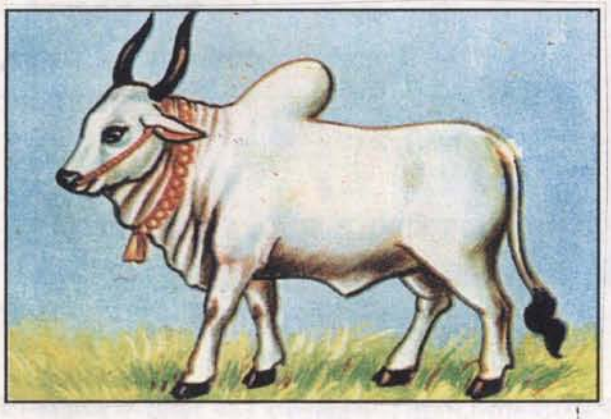

आकार—लगभग 4-7 फीट तक ऊंचा।
लक्षण—शरीर का रंग सफेद से लेकर हल्का भूरा तक। गर्दन के पास कुछ ऊंचा कूबड़ सा होता है। कुछ के सींग लम्बे एवं मुड़े हुए होते हैं।
विवरण—विश्व भर में इनकी सैकड़ों प्रजातियां पाई जाती हैं। कुछ बैल अधिक काम करते हैं और कुछ जल्दी ही थक जाते हैं। इनमें गर्मी, सर्दी और सीलन को बर्दास्त करने की क्षमता अन्य पशुओं की अपेक्षा अधिक होती है।
भारत में नागौरी एवं कच्छी कठियावाड़ी नस्लें मजबूती तथा श्रम के लिए प्रसिद्ध हैं।

आस [अश्व] दसा. 6/3
Horse—घोड़ा
देखें—अस्स (अश्व)

आसालिय [आशालिक, आसालिग] सू. 2/3/79 प्रज्ञा. 1/68 प्रश्नव्या. 1/7
Very Large Snake—एक बहुत विशाल सांप।
आकार—12 योजन लम्बा।
लक्षण—अन्तर्मुहूर्त्त की स्थिति वाला सम्मूर्च्छिम प्राणी।
विवरण—पंद्रह कर्मभूमि में चक्रवर्ती, वासुदेव, बलदेव, मांडलिक और महामाण्डलिकों की सेना के नीचे पृथ्वी में उत्पन्न होने वाला यह सर्प 12 योजन की मिट्टी खा जाता है, जिससे भूमि में बहुत बड़ा गड्ढा हो जाता है। गड्ढे में सेना गिरकर विनाश को प्राप्त हो जाती है। चक्रवर्ती आदि की सेना के विनाश के समय में ही इस सर्प की उत्पत्ति होती है।

आसीविस [आशीविष] ठाणं 2/336 प्रज्ञा. 1/70 प्रश्नव्या. 6/6
A snake Having Poison in large Tooth—आशीविष [दाढ़ों में विष वाले]
आकार—2-16 फुट तक लम्बा।
लक्षण—इन सर्पों के ऊपरी जबड़ों में प्रायः दो विषैले दांतों के सिवाय दूसरे दांत नहीं होते। ये लम्बे दांत विष की ग्रंथि (थैली) के नीचे एक चलनशील हड्डी में जुड़े रहते हैं और हर दांत के भीतर विष-प्रवेश करने के लिए एक नली बनी रहती है।
विवरण—विषदंत धारी सर्प दो प्रकार के होते हैं— (1)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पीछे की ओर विषैले दांत वाले सर्प। (2) अग्रविषदंतधारी सर्प। पीछे की ओर विषदंत धारी सर्प अग्रविषदंतधारी सर्प की अपेक्षा कम खतरनाक होते हैं। अग्रविषदंतधारी सर्पों में विष की बड़ी ग्रंथियां होती हैं और विष के दांत मुंह के आगे की ओर रहते हैं। अतः शिकार पर आक्रमण करते समय वे सहज ही उस तक पहुंच जाते हैं। आशीविष सर्पों में कई मणिधारी होते हैं। उन्हें देखने से ऐसा प्रतीत होता है मानो चमकते हुए चटकीले लाल और पीले मूंगे के छिलके जड़ दिए हों।
[विवरण के लिए द्रष्टव्य—जानवरों की दुनिया, Common Indian Snake, Indian Reptiles]

इंदगोवय [इन्द्रगोपक] प्रज्ञा. 1/50 उत्त. 36/139 अनु. 321
Insect of red & white color—इन्द्रगोपक (वीर वघूटी नाम का कीड़ा जो वर्षा के दिनों में उत्पन्न होता है।)
आकार—मटर के दाने के समान।
लक्षण—लाल रंग के शरीर वाला मखमली जीव।
विवरण—वर्षा काल के प्रारम्भ में ये जीव पैदा होते हैं। इनकी अनेक जातियां हैं। राजस्थानी भाषा में इसे 'सावन की डोकरी', गुजरात में 'गोकल गाय', हरियाणा में 'तीज' आदि नामों से जाना जाता है।
[विवरण के लिए द्रष्टव्य-फसल पीड़क कीट, Nature Incyclopedia in Colour]

इंदिकाइय [इन्द्रकायिक] प्रज्ञा. 1/50 [पा.] उत्त 36/138
Insect of Red White Colour—इंद्रकायिक।
देखें—इंदगोवय

ईहामिय [ईहामृग] आ.चू. 15/28 भग. 11/138 ज्ञाता. 1/1/25
Wolf—भेड़िया।
आकार—कुत्ते से कुछ बड़ा।
लक्षण—शरीर का रंग मटमैला भूरा, जिसमें कभी-कभी काला रंग भी मिला होता है। इसका चेहरा व हाथ-पैर

लाल तथा पेट कुछ सफेद रंग का होता है। बड़ी खोपड़ी एवं शक्तिशाली जबड़ा इसका विशेष लक्षण है। इसकी टांगें मजबूत और तेज दौड़ने के अनुकूल होती हैं।
विवरण—भारत, यूरोप, एशिया और उत्तरी अमेरिका में पाए जाने वाला यह जानवर अपने शिकार का पीछा कर उसकी गर्दन दबोच लेता है। यह मरा जानवर नहीं खाता। भेड़िया बोलता है, भौंकता नहीं है परन्तु कुत्तों के साथ रहने पर यह भी भौंकना सीख जाता है। इसमें सूंघने, सुनने और देखने की शक्ति तीव्र होती है। यह अपनी धूर्त्तता के कारण गोद के बच्चे को भी छीन ले जाता है और बड़े-बड़े जानवरों को सामूहिक बल से मार देता है। वैज्ञानिकों के अनुसार भेड़िया उत्तरी गोलार्द्ध का मूल प्राणी है। कुत्ता इसका वंशज है।

उंदुर [उंदुर] प्रश्नव्या. 1/8
Mouse, Rat—चूहा, मूषक, उंदरा।
आकार—गिलहरी से काफी मिलता-जुलता।
लक्षण—शरीर का रंग काले से लेकर सफेद भूरा तक होता है। दांत तेज एवं मजबूत। मूंछें बड़ी बड़ी जो स्पर्शनेन्द्रिय का काम करती हैं। इसके दांत जीवन-भर बढ़ते रहते हैं किन्तु कुतरने के कारण घिसते भी रहते हैं।
विवरण—यह एक मात्र ऐसा प्राणी है जो पूरे विश्व में पाया जाता है। 2-10 इंच तक की लम्बाई वाला यह प्राणी अनाज, छोटे-मोटे कीड़े और फसल आदि को नुकसान पहुंचाता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्कड़ [उत्कट] प्रज्ञा. 1/50 जम्बू 3/31
A kind of Insect—कीट की एक जाति।
देखें—हालाहल

उक्कल [उक्कल]
Spider—मकड़ी, उक्कड़, अष्टपद, उत्कल।
आकार—लगभग 2 मिली मी. से 9 से.मी. तक लम्बा।
लक्षण—चपटा, गोल अथवा लम्बा शरीर। शरीर का रंग भूरा से लेकर काला तक। आंखों की संख्या आठ तक होती है। तार कातने के लिए शरीर में तकुए या स्पिंनरेट होते हैं।
विवरण—विश्व भर में इनकी 20,000 प्रजातियां पाई जाती हैं। इसके वास्तविक जबड़े नहीं होते। यह

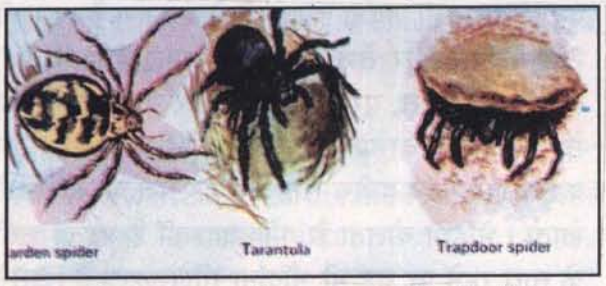

अपना भोजन चूसता है। जब यह किसी कीड़े को पकड़ता है तो अपने विषदंतों से कीड़े में थोड़ा-सा विष डाल देता है। लेकिन ज्यादातर मकड़ियों में इतना विष नहीं होता कि मनुष्य को हानि पहुंचा सकें। ब्लैक विन्डो, बुल्फ स्पाइडर आदि मकड़ियां खतरनाक होती हैं। इनके काटने पर मानव बीमार पड़ जाता है। ब्लैकविंडो का बनाया रेशम इतना मजबूत होता है कि इसे मूल लम्बाई से 27 प्रतिशत और खींचा जा सकता है और यह टूटता नहीं। कुछ मकड़ियां बिल खोद कर उसमें कई सुरंगें बना कर रहती हैं। मकड़ी एक बार में इतना खा लेती है कि वह कई दिनों तक पर्याप्त होता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य-सचित्र विश्व कोश, Nature, Encyclopedia in Colour, विश्व के विचित्र जीव-जंतु]

उक्कलिय [उत्कलिक] ठाणं. 3/77 प्रज्ञा. 1/50 उत्त. 36/137
A Kind of Spider—मकड़ी की एक जाति।
देखें—उक्कल

उक्कोस [उत्क्रोश] प्रश्नव्या. 1/9
White-bellied-sea eagle—कोहासा, समुद्री उकाब, उत्क्रोस।

आकार—सामान्य चील से कुछ बड़ा।
लक्षण—शरीर का ऊपरी रंग भस्मी-भूरा। सिर, ग्रीवा, निचला भाग एवं दुम का अंतिम अंश बिल्कुल सफेद होता है। चोंच छोटी, मुड़ी हुई एवं मजबूत।
विवरण—भारत और आस्ट्रेलिया में पाए जाने वाला यह पक्षी अकेले या जोड़ों में समुद्रतट के आस-पास देखा जाता है। हवा में उड़ते समय इनके दोनों पंख पृष्ठरेखा से ऊपर जाकर V जैसी आकृति में स्थित रहते हैं। समुद्री सर्प के लिए यह एक खतरनाक प्राणी है। ऊंचे स्वर वाली विशिष्ट नास्य वाली कुडकुडाहट-केंक-केंक-केंक जल्दी जल्दी दोहराता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. -212, भारत के पक्षी, सचित्र विश्व कोश, Nature]

उग्गविस [उग्रविष] ज्ञाता. 1/9/20 प्रज्ञा. 1/70
The Snake of Fowerfull Poison—उग्रविष (तीव्र विष वाले)
आकार—3-16 फीट लम्बा।
लक्षण—उग्रविष वाले सर्पों में विष दंत आगे की ओर रहते हैं। देखने में भयानक तथा शीघ्र कुपित होने वाले सर्प हैं। इन सर्पों में विष की ग्रंथियां अन्य सर्पों की अपेक्षा बड़ी होती हैं।
विवरण—यूरोप को छोड़कर अन्य सभी महाद्वीपों में उग्रविष वाले सर्प पाए जाते हैं। सर्प-दंश द्वारा जितने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राणियों की मृत्यु होती हैं, उनमें सबसे ज्यादा उग्रविष सर्प के दंश से होती हैं। कोबरा, करैत, शेषनाग, महानाग आदि सर्प उग्रविष वाले सर्पों की गणना में आते हैं।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—जानवरों की दुनिया, Indian Reptiles, Snakes of Austrailia, Snakes of Southern Africa]

उट्ट [उष्ट्र] प्रज्ञा. 1/64 जम्बू. 2/35 अनु. 12, 16

Camel—ऊंट

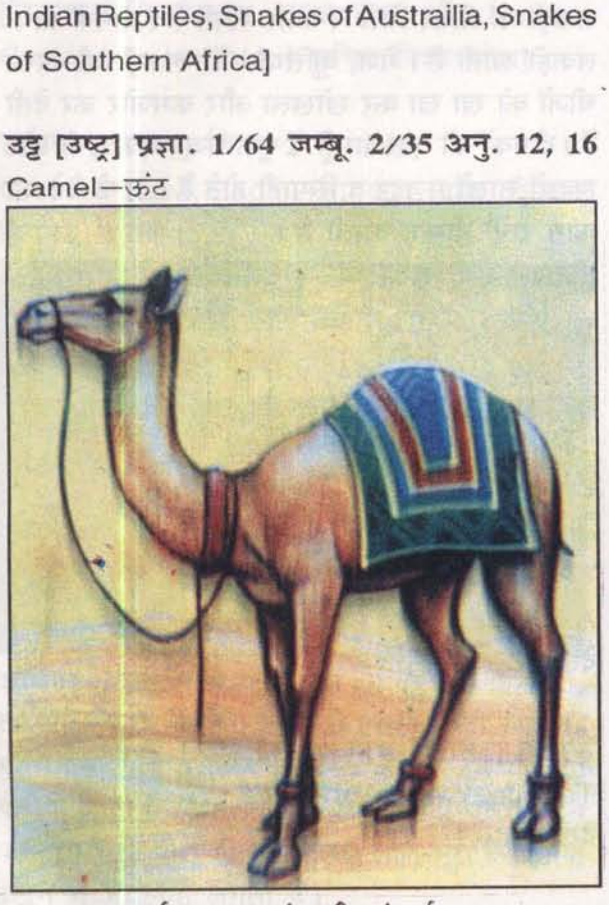

आकार—पूर्ण वयस्क ऊंट की ऊंचाई लगभग 8-11 फीट तक।

लक्षण—शरीर का रंग कत्थई-भूरा। पैर लम्बे एवं पूंछ छोटी। पीठ पर एक कूबड़-सा होता है।

विवरण—इनकी विश्व में अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। यह गर्म रेगिस्तानों में विशेष रूप से पाया जाता है। कई दिनों तक बिना कुछ खाए पिए रह सकता है क्योंकि यह अपने कूबड़ में भोजन इकट्ठा कर लेता है। यह एक बार में 90 लीटर तक पानी पी सकता है। ऊंट में गर्मी एवं उड़ती हुई बालू को सहन करने की विशेष क्षमता होती है। इसके पैरों में लगी गद्दी इसे रेगिस्तान की जलती हुई बालू से बचाए रखती है। बालू का तूफान आने पर यह अपनी नाक बंद कर लेता है। कानों और आंखों पर उगे लम्बे बालों के कारण इसके कान और आंख सुरक्षित रहते हैं।

बैक्ट्रियाई ऊंटों के दो कोहान होते हैं जबकि अरबी ऊंटों के एक ही कोहान होता है। रेगिस्तान में तेजी से चलने के कारण यह रेगिस्तान का जहाज भी कहलाता है। ऊंट को बहुत कम प्यास लगती है। कुछ लोग समझते हैं कि इनके पेट में पानी एकत्रित करने के लिए कोई थैली या विशेष अंग होता है। मगर ऊंट के शरीर में न कोई थैली होती है और न कोई विशेष अंग। गर्मी के कारण मनुष्य के शरीर में खून का दबाव बढ़ जाता है इसलिए उसे अधिक प्यास लगती है। मनुष्य की भांति गर्मी के कारण ऊंट के खून का दबाव नहीं बढ़ता इसलिए वह कई-कई दिनों तक पानी के बगैर रह सकता है।

उद्द [उद्द] सू. 1/7/15

Otter—ऊदबिलाव, जलमानुष।

आकार—लगभग 60 से 100 से.मी. लम्बा बिल्ली की शक्ल का प्राणी।

लक्षण—शरीर का ऊपरी हिस्सा भूरे रंग का होता है, जिसमें कुछ कत्थई-स्लेटी रंग की झलक दिखाई पड़ती है। इसके बड़े बालों के नीचे घने बालों की तह होती है। इसका कद छोटा और लम्बा होता है। सिर चपटा और चौड़ा। इसके पैर के पंजे बत्तखों के पंजों की भांति आपस में जुड़े रहते हैं।

विवरण—समुद्रों और नदियों में इसकी कई प्रजातियां पाई जाती हैं। यह जल और थल- दोनों स्थानों पर रह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सकता है परन्तु अधिक समय जल में ही व्यतीत करता है। यह जलीय स्थानों के किनारे बिल बनाकर रहता है।

यह बहुत ही चालाक और फुर्तीला है, जो आसानी से पकड़ में नहीं आता, परन्तु बचपन में पकड़े जाने पर इसे बड़ी आसानी से पालतू बनाया जा सकता है। चूहे से मिलती-जुलती-चूं-sssचूं-sss की तीखी आवाज करता है।

उद्दंसग [उद्दंशक] प्रज्ञा. 1/50

Bed Bug—खटमल।

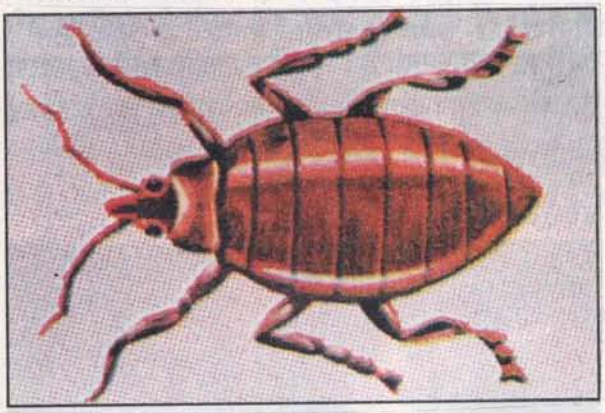

आकार—छोटा, चपटा एवं भूरे रंग का कीट।

लक्षण—यह मानव के समीप बिस्तर आदि में रहता है। इसका भोजन खून चूसना है। इसके पंख नहीं होते हैं।

विवरण—यह रात्रि में अपना भोजन प्राप्त करने के लिए निकलता है। दिन में बिस्तर आदि में छुपा रहता है। यह लगभग एक वर्ष तक बिना भोजन किए रह सकता है।

[विवरण के लिए द्रष्टव्य—सचित्र विश्व कोश, Nature, Incyclopedia in colour]

उद्देसग [उद्देशग] अणु. 3/75 जीव. टी.पृ. 32

Termite—दीमक

आकार—चींटी के समान।

लक्षण—इनके छः टांगें होती हैं। सिर के आगे दो चिमटेनुमा अंग निकले होते हैं। जबड़े बहुत मजबूत होते हैं।

विवरण—इनकी सफेद, भूरी, काली आदि अनेक रंगों वाली अनेक प्रजातियां पायी जाती हैं। दीमकों की बम्बियां कभी-कभी तीन मनुष्यों जितनी ऊंची होती हैं। लेकिन ठण्डी जलवायु वाले प्रदेशों में दीमक जमीन या लकड़ी के भीतर बिल बनाकर रहती हैं। दीमकें प्रायः लकड़ी खाती हैं। मेज, कुर्सियां और लकड़ी की अन्य चीजों को खा खा कर खोखला और कमजोर कर देती हैं। दीमकों की एक बाम्बी में एक राजा, एक रानी और हजारों लाखों मजदूर व सिपाही होते हैं। अण्डे देने का काम रानी दीमक करती है।

[विवरण के लिए द्रष्टव्य—सचित्र विश्व कोश, जानवरों की दुनिया, फसल पीड़क कीट, Nature]

उद्देहिया [उपदेहिका] प्रज्ञा. 1/50 उत्त. 36/137

Termite—दीमक

देखें—उद्देसग

उप्पाड़ [उत्पादय] प्रज्ञा. 1/50

A Kind of White Ant—दीमक

देखें—उद्देसग

उप्पाय [उत्पाद] प्रज्ञा. 1/50 [पा.]

Termite, White Ant—दीमक

देखें—उद्देसग

उरग [उरग] उत्त. 14/47, अनु. 708/5

Snake—सर्प। देखें—अही

उरब्भ [उरभ्र] सू. 2/2/19, ज्ञाता. 1/1/33 उवा. 2/21 प्रश्नव्या. 1/6

Sheep—भेड़, मेष, मेंढ़।

देखें—अमिल

उरुलुंचग [उरुलुंचग] प्रज्ञा. 1/50 [पा.]

Insect of Pumpkin—घीया अथवा कद्दू का कीट, उरुलुंचग।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आकार—2-5 मिलिमीटर लम्बा।
लक्षण—शरीर का रंग भूरा-कत्थई। मुंह के आगे संडासीनुमा-जबड़े।
विवरण—यह कीट विशेष रूप से घीया या कद्दू की वल्ली पर पैदा होता है।
[विवरण के लिए द्रष्टव्य—फसल पीड़क कीट, Nature, Cyclopedia in-Colour, सचित्र विश्व कोश]

उलाण [उलाण] नि.चू-2 पृ. 281
Crested Hawk-Eagle—शाहबाज, बाज, शिकरा, चिपका, चपाक।

आकार—कबूतर से कुछ बड़ा।
लक्षण—शरीर का रंग ऊपर से हल्का स्लेटी राख की भांति तथा नीचे से सफेद जिस पर जंग या ईंट की तरह बारीक आड़ी धारियां होती हैं। सिर सलेटी धूसर, गर्दन की तरफ तथा पीछे की ओर हल्का लाल-भूरा रंग, आंखें देखने में भयानक लगती हैं।
विवरण—विश्व में इसकी लगभग 6 जातियां पाई जाती हैं। यह शिकार पर तेजी से झपटकर या पीछा कर पकड़ लेता है। इसके पंजों की पकड़ इतनी तीव्र होती है कि एक बार आया हुआ शिकार छूट नहीं सकता।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—भारतीय पक्षी, सचित्र विश्व कोश, Nature, K.N. Dave पृ. 118]

उलूक [उलूका] सू. 2/2/13 भ. 18/109 अनु. 378
Indian great Horned owl—उल्लू, घुग्घु

आकार—जंगली कौवे के समान।
लक्षण—शरीर का रंग हल्का पीला तथा निचला भाग गहरा पीला होता है। पंखों की एक कलंगी सिर पर दिखाई देती है जो कभी-कभी लंबे कान होने का भ्रम भी उत्पन्न करती है। आंखों का रंग सुनहर होता है।
विवरण—इनकी अनेक किस्में पाई जाती हैं। जैसे-कुरैया अथवा करैल, घुग्घु, छिपक, दाबचिरी, चपक, थकार्वी आदि।
यह एक समतापी प्राणी है अर्थात इनके शरीर का तापमान वातावरण के साथ घटता-बढ़ता नहीं, सदा एक सा रहता है। जल के पास रहना इन्हें पसंद है। प्रायः नदी के किनारे, खंडहरों तथा वीरान स्थानों में अकेले या जोड़ों में आसानी से देखे जाते हैं। घुग्घु, ऊ-ऊ की बोली से पहचाना जाता है।

उसभ [वृषभ] आ.चू. 15/28 ज्ञाता. 1/1/25 प्रश्नव्या. 4/8
Bull—बैल, सांड़। देखें—आवल्ल

उस्सासाविस [उच्छ्वासविष] प्रज्ञा. 1/70
A kind of Cobra—उच्छ्वासविष।
देखें—निस्सासविस और नाग।

ऊरणी [ऊरणी] अनु. 330
Sheep—मेष, भेड़ देखें—अमिल

एगओवत्त [एकतोवृत्त] प्रज्ञा. 1/49
A kind of Conch Shell—शंख की जाति।
देखें—संख और संखनग।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एलग [एडक] प्रज्ञा. 1/64 जम्बू. 2/34 द. 5/22 अनु. 12
Sheep—भेड़, मेष, मेंढ़।
देखें—अमिल

ओभंजिया [ओभंजिया] प्रज्ञा. 1/51
A kind of Lobster—केकड़ा की एक जाति।
देखें—जलकारि

ओलाबी [ओलावी] आव. चू. 1 पृ. 425
Femal e = Crested-Hawk Eagle—मादा बाज, मादा शाहबाज। देखें—उलाण

ओवइय [ओवइय] प्रज्ञा. 1/50
A kind of Sykid—कीट की एक जाति, औपपातिक।
आकार—2 मिलीमीटर से 10 मिलीमीटर तक लम्बा।
लक्षण—लार्वा अवस्था में ही बनाए गए कोष्ठों में रहने वाले जीव हैं।
विवरण—पूल शलभ (कैगट कर्म), स्थून शलभ (बैमवर्ग), करंड शलभ आदि के नाम से जाने जाते हैं। ये कोष्ठों का निर्माण स्वयं पैदा किए हुए धागों और वानस्पतिक सामग्री से करते हैं। हर जाति की कोष्ठ बनाने की तकनीक भी भिन्न-भिन्न होती है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—फसल पीड़क कीट, Incyclopedia in colour, Nature]

ओहार [ओहार] प्रश्नव्या. 3/7, 23
Hawksbill—बाजचोंचा कच्छप, अस्थि बहुल कच्छप।
देखें—अट्ठिकच्छप

ओहिंजलिया [ओहिंजलिया] उत्त. 36/148, जीव. टी.प. 32
A Kind of Lobster—केकड़ा की एक जाति।
देखें—जलकारि

कंक [कङ्क] सू. 1/1/62 भग. 7/123 जीवा. 3/598
Bellied Sea-Eagle—कोहासा, सफेद-चील, कंक।
देखें—उक्कोस

कंथग [कंथक] ठाणं 4/472, उत्त. 11/16, 23/58
A speeies of Horse—कंथक घोड़ा (जो तोपों की आवाज से भी न डरे)
विवरण—कंथक घोड़ा एक जातिवान् घोड़ा होता है, जो युद्ध के मैदान में तोपों की भयंकर आवाज से भी विचलित नहीं होता।
[शेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—आइण्ण (आकीर्ण)]

कंदलग [कन्दलक] प्रज्ञा. 1/63
A kind of Horse—घोड़े की एक जाति।
देखें—अस्स (अश्व)

कंदलग [कन्दलक] प्रज्ञा. 1/63
Flying Squirral—उड़ने वाली गिलहरी
आकार—सामान्य गिलहरी की भांति।
लक्षण—शरीर मुलायम व घने छोटे बालों से ढका रहता है। इसकी पीठ पर साधारण गिलहरी के समान सफेद रंग की दो धारियां भी पाई जाती हैं। इसके कानों के पास वाले बालों का रंग कुछ काला तथा पीठ का रंग कत्थई होता है। आमतौर पर इस गिलहरी का शरीर 13.5 सेमी. से 20.5 सेमी. लम्बा एवं पूंछ की लम्बाई 9 से.मी. से 14 सेमी. तक होती है। इनकी लटकती हुई ढीली त्वचा पैराशूट जैसा काम करती है यानि शरीर को हवा में साधे रहती है।
विवरण—भारत, लंका, जापान और बोर्निया आदि देशों में पाए जाने वाला यह प्राणी, ऊंचे-ऊंचे वृक्षों पर निवास करता है। यह कड़े से कड़े फलों के छिलके बड़ी सरलता से अपने तेज दांतों से कुतर डालता है। एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष तक पहुंचने के लिए हवा में तैरता हुआ 80 मी. से भी अधिक का फासला तय कर लेता है। इसके पैरों में पांच-पांच अंगुलियां होती हैं। अगले पैरों से पिछले पैरों के मध्य शरीर के दोनों ओर झिल्ली होती है। जिस पर छोटे-छोटे मुलायम रोएं होते हैं। यह एक शाकाहारी एवं रात्रिचर प्राणी है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave, पृ. 25, Nature, विश्व के विचित्र जीव जंतु, सचित्र विश्व कोश]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंदलग [कंदलग] प्रज्ञा. 1/63

Chestnut bullied Nuthatch—सिरि, कठफोड़िया, कंदलग।

आकार—गौरेया से कुछ छोटा।

लक्षण—शरीर के ऊपर का रंग स्लेटी नीला, नीचे का रंग गहरा चैस्टनट (Chestnut)। छोटी दुम और लम्बी भारी नुकीली चोंच।

विवरण—रंग-भेद के आधार से इसकी 5 प्रजातियां पाई जाती हैं। यह शाखा की चिपकी सतह पर ऊपर नीचे की ओर तेजी से दौड़ता है। इसकी कुछ क्रियाएं तथा व्यवहार कठफोड़ा से कुछ वल्गुली तथा कुछ चूहे की तरह होती हैं। उत्तरी अमेरिका के जंगलों में लाल

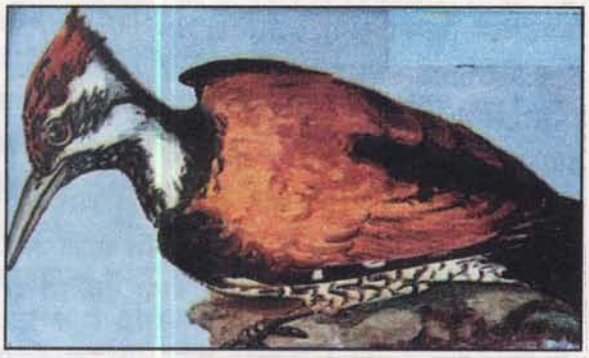

सिर वाला कठफोड़वा पाया जाता है, जो सर्दी के मौसम में वंजुफल व बीचफल ही खाता है। वंजूफल के अभाव में यह अन्य क्षेत्रों में चला जाता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 26]

कंबोय [कम्बोज] उत्त. 11/16

A Species of horse born in a Probince of Afghanistan—अफगानिस्तान के एक भाग में उत्पन्न घोड़ा।

देखें—आइण्ण (आकीर्ण) और अस्स (अश्व)

कच्छभ [कच्छप] प्रज्ञा. 1/55

Tortoise, Turtle—कच्छुआ, कच्छप।

आकार—गोल डब्बे के समान।

लक्षण—यह अस्थियों के खोल से पहचाना जाता है। जिसके दो भाग होते हैं- ऊपर की ओर केरापेस और नीचे की ओर प्लास्ट्रोन। खोल में शल्की ढालों की एक बाहरी परत होती है। अंदर की परत अस्थियों की पट्टियों से बनी होती है। शरीर खोल के अंदर रहता है तथा गर्दन, पैर और पूंछ खोल के बाहर स्वतंत्र रूप से गतिशील होते हैं।

विवरण—नदियों, समुद्रों आदि में रहने वाले कच्छुओं

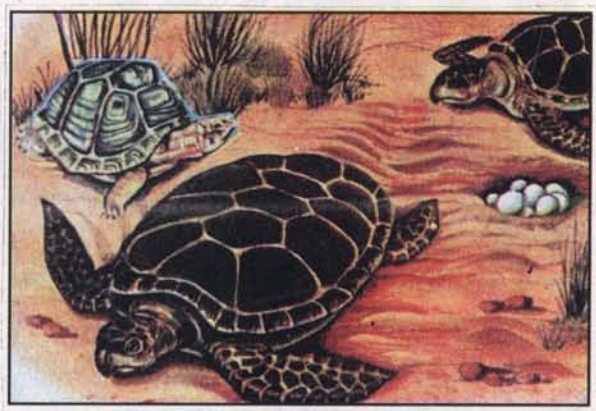

की विश्व भर में 300 से अधिक प्रजातियां पाई जाती हैं। इनकी लंबाई 4 इंच से 8 फीट तक तथा शरीर का वजन 700 kg. तक होता है। कुछ कच्छुए अस्थि बहुल एवं कुछ मांस बहुल होते हैं। मुंह में दांतों के स्थान पर हड्डी के प्लेट से रहते हैं, जिसके द्वारा ये बड़ी आसानी से मांस तक काट सकते हैं। आंखों में दो की बजाय तीन पलकें होती हैं। ये अपने मुंह और गुदा से पानी खींचकर उसे बाहर निकालते हैं जिससे दोनों स्थानों की रक्त शिराएं पानी में घुली हुई थोड़ी बहुत हवा सोख लें।

मादा कच्छप अपने अंडे मिट्टी में गड्ढा खोद कर देती है। अधिकांश कछुए मांसाहारी होते हैं।

कट्ठाहार [काष्ठाहार] प्रज्ञा. 1/50 उत्त. 36/137

Wood Worm] Furniture beatle—काष्ठहारक, घुन।

आकार—लगभग 2 मिलीमीटर से 9 मिलीमी. तक लम्बा।

लक्षण—शरीर का रंग सफेद-भूरा। प्रारम्भ में यह लट के आकार का होता है। इसका लार्वा या प्रारम्भिक दिन लकड़ी खाने में व्यतीत होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवरण—इसकी अनेक जातियां लकड़ी में छिपकर लकड़ी को खाती हैं तथा उसमें सुरंगें-सी बना लेती हैं। यह लकड़ी को भीतर ही भीतर कमजोर कर मिट्टी जैसी बना देती हैं।

[विवरण के लिए द्रष्टव्य—Nature, Incyelopedia in-Colur, सचित्र विश्व कोश, फसल-पीड़क कीट]

कणग [कनक] प्रज्ञा. 1/51 [पा.]

Grain-Worm—अनाज के घुन (कनक)।

[Sitophilus oryzae Linnaeus]

आकार—जूं के आकार का जंतु।

लक्षण—3 मिलीमीटर लम्बा लाल-भूरा कीट। जिसका थूथन सूंड की तरह थोड़ा आगे निकला होता है। एक जोड़ा अधोहनु मजबूत जवड़ा इसकी प्रमुख विशेषता है।

विवरण—इसकी अनेक जातियां हैं। यह अन्न के गोदामों में बहुलता से पाया जाता है। कभी-कभी अन्न के गोदामों से उड़कर आस-पास के खेतों में पहुंच जाता है।

[विवरण के लिए द्रष्टव्य—जानवरों की दुनिया, फसल पीड़क कीट, Nature]

कणिक्कामच्छ [कणिक्कामत्स्य] प्रज्ञा. 1/156

A kind of Rice Fish—तंदुल मत्स्य की एक जाति।

विवरण—वर्तमान में यह काणलिमत्स्य और कर्णफल नाम से जाना जाता है। शेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—तंदुल मत्स्य।

कण्णत्तिय [कण्णत्तिय कर्णत्रिक] प्रज्ञा. 1/48

Grey Jungle Fowl—जंगली मुर्गा, घूसर वन कुक्कुट।

आकार—देहाती मुर्गों के समान।

लक्षण—शरीर के ऊपर का रंग पीलापन लिए हुए भूरा तथा नीचे का रंग हरा-काला, नीला युक्त होता है। सिर पर लाल रंग की कलंगी से पहचाना जा सकता है।

विवरण—इसकी अनेक प्रजातियां विश्व-भर में पाई जाती हैं। यह बहुत शर्मीला किंतु सतर्क रहने वाला

प्राणी है। जरा-सी आहट पाते ही गर्दन ऊंची कर तथा दुम गिराकर छुप जाता है।

[विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 277]

कण्हसप्प [कृष्ण सर्प] प्रज्ञा. 1/70

Black-Cobra—कालासर्प अहीराज, कृष्ण सर्प (मलयालम), संखमुखी, संखचुर (बंगाली)।

आकार—लगभग 5-6 फीट लम्बा।

लक्षण—इसका फन शेष नाग से भी बड़ा होता है। फन के पीछे की ओर गाय के खुर की भांति काला और सफेद चिह्न होता है। फन के आगे प्रायः एक या दो धब्बे होते हैं।

विवरण—यह केवल मलाया महाद्वीपों में ही पाया जाता है। छेड़ने पर शीघ्र ही सिर उठाकर फन फैलाए धनुषाकार रूप में अपनी गर्दन टेड़ी करके खड़ा हो जाता है। काटते समय बहुत देर तक शत्रु के शरीर में दांत घुसेड़े रहता है ताकि काफी विष प्रवेश कर जाय और शिकार बचने न पाए।

[विवरण के लिए द्रष्टव्य—जानवरों की दुनिया, Indian Reptiles, common Indian Snakes]

कप्पास ट्ठिसमिंजिय [कर्पासस्थिमिंजिय] प्रज्ञा. 1/50 उत्त. 36/138

White fly in the kernel of cotton seed—कर्प्पासास्थि मिंजक, कपास की सफेद मक्खी।

आकार—लगभग 1 मि.मी. लम्बा कीट।

लक्षण—वयस्क होने पर सफेद पंख होते हैं जिन पर नसें दिखाई देती हैं। ऐसा प्रतीत होता है जैसे उन पर मोम लगा हो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवरण—यह सफेद मक्खी लगभग 50 तरह के पौधों पर आक्रमण करती है। इसका प्रकोप कपास पर सबसे अधिक होता है। जिससे कपास के पौधे की हर अवस्था की शारीरिक क्रिया गड़बड़ा जाती है।
[विवरण के लिए द्रष्टव्य—फसल पीड़क कीट, Harmanjacobl, Nature]

कमल [कमल] भ. 2/66 ज्ञाता. 1/1/24 अणु. 3/52
A Beautiful Deer—सुंदर हिरण।
देखें—किण्हमिय (कृष्ण-मृग)
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 298-299]

कमल [कमल] भ. 2/66, 9/168 ज्ञाता. 1/1/24 अंत 3/43 अणु. 3/52
Purple Moorhen—कैम, खारीम, कार्म, कमल।
आकार—देहाती कुक्कुट के समान।
लक्षण—शरीर का रंग नील रोहित। लम्बे लाल पैर और भारी लाल चोंच।
विवरण—भारत और बर्मा में पाए जाने वाला यह पक्षी दलदल के आस-पास सरकंडों की झाड़ियों में झुंड के साथ मिलता है। बैठते समय या उड़ते समय कई तरह की घूं-घू, कुड-कुड जैसी ध्वनि उत्पन्न करता है।
[विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 295, 298]

कमेड [कमेड] जीम्य. 1237
Squirrel—गिलहरी।
आकार—नेवले से छोटा।
लक्षण—शरीर का रंग सफेद काला से लेकर लाल-भूरा तक। पूंछ लम्बी, जिस पर घने बाल होते हैं। तीखे एवं मजबूत दांत जो जीवन भर बढ़ते रहते हैं।
विवरण—विश्व में इनकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। ये अधिकतर वृक्ष पर रहती हैं। कुछ गिलहरियां जमीन पर भी निवास करती हैं। कुछ गिलहरियां शाकाहारी एवं कुछ मांसाहारी होती हैं।

कमेड [कमेड] जीम्य. 1237
Lizard—छिपकली।
आकार—लगभग 4-15 इंच तक लम्बा।
लक्षण—शरीर का रंग विभिन्न प्रकार का। शरीर पतला, पूंछ लम्बी तथा पांच पंजों वाले चार छोटे पैर। पैरों में पदांगुलियों के अगले भाग छोटे प्यालियों के समान होते हैं। बहुसंख्यक दांत होते हुए भी यह भोजन को चबाता नहीं है।

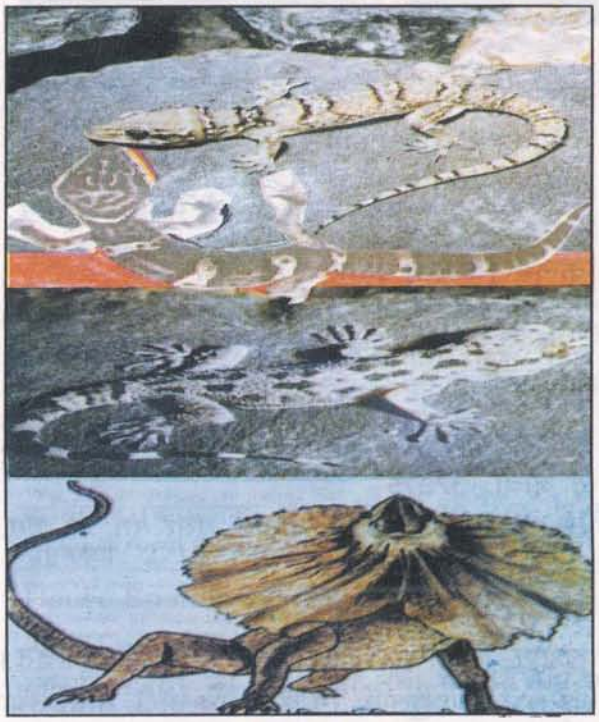

विवरण—घरों में रहने वाली छिपकलियों की लगभग 300 प्रजातियां हैं। ये मुख्यतः गर्म देशों में पाई जाती हैं। इनका मुख्य वर्ग गैको कहलाता है। इनकी सबसे बड़ी जाति बंगाल, मलाया प्रायद्वीप तथ पूर्वीय द्वीपों एवं दक्षिणी चीन तक पाई जाती है। आमतौर पर छिपकली अंडे देती है लेकिन कुछ प्रजातियां बच्चे भी देती हैं।

ये कीट, पंतग, मकड़ी, बिच्छु यहां तक की दूसरी छिपकलियों को भी खा जाती हैं। इन पर बिच्छु के डंक का असर नहीं होता। दक्षिण-भारत में पाए जाने वाली बरकुदिया छिपकली तथा ग्लास स्नेक [जो यूरोप, अफ्रीका, एशिया व उत्तरी अमेरिका में पाई जाती हैं।] नामक छिपकलियों के पैर नहीं होते। ब्रीडेड तथा गिलामोनस्टर इन दोनों छिपकलियों को छोड़कर शेष छिपकलियों में विष नहीं होता और न ही इनके काटने से किसी की मृत्यु होती है। ब्रीडेड तथा गिलामोनस्टर-ये दोनों छिपकलियां एशिया में नहीं पाई जातीं।

करभ [करभ] प्रश्नव्या. 1/6

Young of Camel—ऊंट का बच्चा।

देखें—उट्ट (ऊंट)

करभ [करभ] प्रश्नव्या. 1/6

Young of Elephant—हाथी का बच्चा।

देखें— कुंजर (हाथी)

कलभ [कलभ] ज्ञाता. 1/1/157

Tharty Years old Elephant—30 वर्ष का हाथी।

देखें—कुंजर (हाथी)

कलहंस [कलहंस] ज्ञाता. 1/33 प्रज्ञा. 1/79 औप. 6 जीवा. 3/275

Barheaded goose—अत्यंत धूसर रंग का हंस, कलहंस, स्वान, वीरवा।

आकार—घरेलू बत्तख से बड़ा।

लक्षण—पंखों का रंग धूसर, भूरा तथा सफेद मिश्रित। पैर छोटे तथा गुलाबी रंग के। चोंच छोटी, सीधी तथा

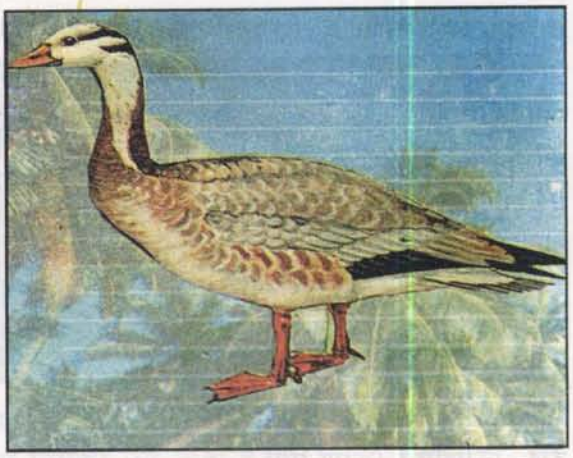

हल्की पीले रंग वाली। नर-मादा दोनों एक जैसे दिखाई देते हैं।

विवरण—सर्दियों के दिनों में उत्तर भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश में पाए जाने वाला यह पक्षी पथभ्रष्ट होकर दक्षिण में मैसूर तक पहुंच जाता है। ऊपर से गुजरते हुए झुंड के झुंड कई स्थानों में अआंग-अआंग ध्वनि करते हैं।

कलुय [कलुक] प्रज्ञा. 1/49

A kind of Worm—कृमि की एक जाति, कलुस।

देखें—अरक

कवि [कपि] सू. 2/2/6

Monkey—बंदर।

आकार—मुखाकृति एवं हाथ-पैर मनुष्य की भांति।

लक्षण—शरीर का रंग अनेक प्रकार का होता है। हाथों की पकड़ बहुत मजबूत होती है। अधिकतर बंदरों की पूंछ लम्बी और मजबूत होती है। पंजे के नाखून बड़े एवं मुड़े हुए होते हैं।

विवरण—इनकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं जैसे चिंपाजी, बबून, गौरिल्ला, रीसस बंदर, सुनहरा लंगूर, हुलक गिब्बन आदि।

जापान का मकाकू बंदर फलों को धोकर खाता है। दक्षिण अमेरिका का हाउलर बंदर बहुत ऊंची आवाज में चिल्लाता है। यह आवाज तीन किमी. तक सुनी जा सकती है। थुंथवाला बंदर चार फीट से कुछ लम्बा होता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

है।

ब्राजील का मार्मेसेट बंदर इतना छोटा होता है कि हम उसे अपनी हथेली पर बिठा सकते हैं। लंगूर की छलांग बहुत लम्बी होती है। वह 30-35 फीट की दूरी तक छलांग लगा सकता है।

लंगूर की सबसे बड़ी विशेषता है कि वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए छलांग भरता है। यदि दूसरा स्थान उसकी कल्पना से दूर होता है तब वह वहीं से वापस अपने पहले वाले स्थान पर आ जाता है।

कविंजल [कपिंजल] सू. 2/2/6120 उवा. 7/5, प्रश्नव्या. 2/12 प्रज्ञा. 1/79

Blue Tailed Bee-eater—पत्रिंगा, लाल सिर का पत्रिंगा, तीतर, पतेना, कपिंजल।

आकार—गौरेया के बराबर लगभग 7 इंच लम्बा।

लक्षण—शरीर का रंग चटक हरा। सिर तथा गर्दन का रंग लाल-भूरा। गर्दन के नीचे का भाग नीले रंग का। दुम के बीच के पतले पंख काले होते हैं। चोंच लम्बी, नुकीली और आगे की ओर मुड़ी हुई होती है।

विवरण—रंग-भेद के आधार पर इसकी 4 प्रजातियां पाई जाती हैं। यह दिन भर अबाबील की तरह हवा में उड़ता रहता है। अंडे देने के लिए मादा अपनी नुकीली चोंच से मिट्टी खोदकर कगारों में सुराख बना लेती है। यह बिल पांच-छह फुट तक गहरा होता है।

[विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 109, हिंदी शब्द सागर, हिंदी विश्व कोश]

कविंजल [कपिंजल] सू. 2/2/6120 उवा. 7/5 प्रश्नव्या. 2/12 प्रज्ञा. 1/79

Common Hawk, Cuckoo or Brainfever Bird—पपीहा, चातक, कपक, उपक।

आकार—मैना से कुछ बड़ा।

लक्षण—सुन्दर शिखर वाला काला और सफेद पक्षी। पंख में एक गोल धब्बा।

विवरण—यह कूक्कू परिवार का ही सदस्य है। मादा कोयल की भांति अपने अंडे अन्य पक्षियों के घोसले में देकर दायित्व मुक्त हो जाती है। एक दूसरे का पीछा करते हुए पियू-पियू पी-पी-पियू की ध्वनि करता है।

कविंजल [कपिंजल] सू. 2/2/6, 20 उवा. 7/5 प्रश्नव्या. 2/12 प्रज्ञा. 1/79

House Sparrow—गौरेया, गृह चटक।

आकार—बुलबुल से कुछ छोटा।

लक्षण—शरीर का रंग काला तथा बादामी धारियां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

युक्त होता है। नर के गले पर एक काला-कालर-सा होता है।

विवरण—विश्व भर में इसकी अनेक जातियां पाई जाती हैं। यह मनुष्य की बस्ती से अलग नहीं रह सकता। संध्या के समय अनेक गौरेया मिलकर बहुत शोर मचाती हैं। नर जोर से एकरागी हसी, हसी, हसी या चियर, चियर, चियर का गीत गाता है।

कविंजल [कपिंजल] सू. 2/2/6, 20 उवा. 7/5 प्रश्नव्या. 2/12 प्रज्ञा. 1/79

Grey Partrige—तीतर, सफेद तीतर।

देखें—कविल और तीतर

कविल [कपिल] भग. 7/119, ज्ञाता. 1/16/269-276

Black Partrige—काला तीतर, कविल।

आकार—धूसर तीतर के तुल्य।

लक्षण—शरीर का रंग भूरा काला। जिसमें सफेद रंग की काफी चित्तियां तथा धारियां होती हैं और सिर तथा पंखों पर सिंदूरी रंग का प्रभाव होता है।

विवरण—इसकी अनेक जातियां पाई जाती हैं। जैसे- पहाड़ी भटतीतर, हन्डेरी काला तीतर, चित्रित तीतर आदि। यह पेड़ों पर बैठकर बोलती रहती है। पीछा करने पर पंखों को फड़फड़ाकर बड़ी तेज उड़ान भरती है।

कवोय, कवोयग, कवोत, कवोतग [कपोत] सू. 2/2/58 भग. 15/52 प्रश्नव्या. 2/12 जीवा. 3/598

Blue Rock Pigeon—धूसर रंग का कबूतर।

आकार—घरेलू कौवे से कुछ छोटा।

लक्षण—स्लेटी-धूसर रंग का लगभग 13 इंच लम्बा शरीर। गर्दन पर चमकीले हरे पंखों का एक कंठ-सा होता है, जिसके नीचे एक बैंगनी पट्टी होती है जो सूर्य की रश्मियां पड़ने पर चमकती हैं। मुख का सिरा काला होता है, जिसके अगल-बगल में सफेद धारी होती है। पैरों का रंग—हल्का गुलाबी।

विवरण—विश्वभर में इसकी लगभग 289 प्रजातियां पाई जाती हैं। कबूतर एक शाकाहारी पक्षी है, जो अनाज के दाने, कंकर आदि खाकर अपना पेट भरता है। अपने भोले स्वभाव के कारण पक्षियों में इसका विशेष स्थान है। इसे घोंसला बनाना नहीं आता इसलिए मकान के कोनों, छज्जों, मिट्टी के टीलों या कुओं की दरारों में थोड़ा सा घास फूस डालकर मादा अंडे दे देती है। गूटर-गूं, गूटर-गूं की बोली द्वारा आसानी से पहचाना जा सकता है। वैज्ञानिक भाषा में इसे 'कोलम्बा लीविआ गैमैलिक' कहा जाता है। इसकी याददाश्त अन्य पक्षियों की अपेक्षा तीव्र होती है। 'पैसिंजर' नामक कबूतर अपनी लम्बी उड़ानों के लिए प्रसिद्ध है।

कसाहिय [कषाधिक, कषाहिक] प्रज्ञा. 1/71

Snake of White-Red Colour—गेरुएं रंग का सर्प, कषाधिक सर्प।

आकार—4-5 फीट लम्बा।

लक्षण—शरीर का रंग गेरुवां। पूंछ पतली एवं लम्बी।

विवरण—भारत, आस्ट्रेलिया आदि देशों में पाए जाने वाला यह सर्प देखने में अत्यन्त सुन्दर लगता है। कषाय की अधिकता के कारण इसे क्रोधी सर्प भी कहते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इसका विष भयंकर तथा जलन पैदा करने वाला होता है।

[विवरण के लिए द्रष्टव्य—जानवरों की दुनिया, रेंगने वाले प्राणी, Indian Reptiles, Nature]

काउल्ली [काउल्ली] सू.चू. पृ. 56

Little-Egret—छोटा बगुला, किलचिया, करचिया (बंगला)।

आकार—18-22 इंच लम्बा।

लक्षण—शरीर का रंग सफेद, चोंच और पैरों का रंग काला।

विवरण—विश्वभर में इसकी 64 प्रजातियां पाई जाती हैं। यह नदी-नालों, झीलों आदि के किनारे अकेला या झुंड में पाया जाता है। उड़ते समय गर्दन अन्दर की ओर कर लेता है।

काओदर [काकोदर] प्रश्नव्या. 1/8, प्रज्ञा. 1/70

Common Krait—करैत, काकोदर, काला गदैत, कालोदर, कालातरो (गुजराती), कंदर (मराठी), कातुविरियन (तमिल)।

आकार—लगभग 3-5 फीट लम्बा।

लक्षण—शरीर का रंग गहरा काला-नीला। कहीं कहीं पर सफेद चकते भी होते हैं। आंखें एवं पूंछ छोटी। मुख

गदन की अपेक्षा बड़ा होता है।

विवरण—भारत-पाकिस्तान, अफ्रीका आदि में इनकी लगभग छः प्रजातियां पायी जाती हैं। इनमें से कुछ सर्प पानी में एवं कुछ जंगलों में रहते है। इनका विष सीधा तंत्रिका तंत्र पर प्रभाव डालता हैं। इनके काटने पर पहले दर्द होता है। फिर कुछ समय बाद जहर तंत्रिका तंत्र एवं मस्तिष्क तक पहुंच जाने पर चलना-फिरना असंभव हो जाता है और व्यक्ति सांस भी नहीं ले पाता।

[विवरण के लिए द्रष्टव्य—Indian Reptiles, Nature]

काक [काक] ठाण. 2/325 भग. 3/33 प्रश्नव्या. 1/29 प्रज्ञा. 1/79 अनु. 546

House-crow—कौवा, देसी कौवा, घरेलू कौवा।

आकार—लगभग 17 इंच लम्बा और कबूतर से बड़ा।

लक्षण—शरीर का रंग काला सफेद। गर्दन भूरी एवं आंखें जल्दी जल्दी घूमने वाली।

विवरण—धूर्तता एवं चालाकी के लिए प्रसिद्ध यह पक्षी भारत, पाकिस्तान, ढाका आदि देशों में बहुलता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से पाया जाता है। रंग-भेद के आधार पर इसकी अनेक प्रजातियां हैं। यह धुआं देख कर ही अनुमान लगा लेता है कि अमुक स्थान पर भोजन बन रहा है। तब वह तत्काल ही उस स्थान पर पहुंच जाता है। कौए का स्वर-कक्ष सात मांसपेशियों से नियन्त्रित होता है जबकि अन्य पक्षियों में तीन या इससे कम स्वर संबंधी मांस पेशियां होती हैं। अत्यन्त चालाक, शैतान होने पर भी कोयल के अंडों को अपना समझकर सार संभाल करता है। इसके घोंसले के आधार पर ज्योतिषी लोग भविष्यवाणियां करते हैं। मानव-वस्ती के आस-पास रहने वाले इस प्राणी की उम्र बहुत लम्बी होती है।

कादंवग [कादंवक] प्रश्नव्या. 1/9

Barheaded gosse—कलहंस, वीरवा, कादंबक।

आकार—पालतू राजहंस की भांति।

लक्षण—शरीर का रंग धूसर-भूरा तथा सफेद होता है। सिर तथा ग्रीवा के पार्श्व सफेद और कंधरा के आर-पार दो विशिष्ट चौड़ी काली पट्टियां होती हैं।

विवरण—केवल भारत में पाए जाने वाला यह पक्षी झीलों में ही रहना पसंद करता है। इसकी कुछ जातियां रात्रिचर एवं कुछ दिवाचर होती हैं। इनके दल V आकृति या सीधे फीते की आकृति बनाते हुए आकाश में गमन करते हैं।

[विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 108]

कामदुहाधेणु [कामदुधाधेनू] उत्त. 20/36

A FAbulous cow Yielding all Desires—कामधेनु गाय।

विवरण— महाभारत-1/101 कालिकापुराण 91 आदि वैदिक ग्रन्थों में कामधेनु गाय का विस्तार से वर्णन प्राप्त होता है। वैदिक ग्रन्थों के अनुसार— दक्ष की बेटी, जिसका नाम सुरभि था। वह गायों की महाभाग माता सर्वलोक की उपकारिणी थी। शरीर का रंग सफेद बादलों के समान। चार पैर चार वेदों के प्रतीक तथा चार स्तन— धर्म, काम, अर्थ और मोक्ष के प्रतीक हैं।

कामंजुग [कामंयुग] प्रज्ञा. 1/79

Bronze Winged Jacana—पीपी, कुण्डई, कटोई (बिहार) पिहु, पिहूआ, कामंयुग।

आकार—तीतर के समान।

लक्षण—शरीर का रंग प्रायः भूरा और सफेद। शरीर के ऊपर वक्ष पर काला नैकलेस जैसा डिजाइन होता है। दुम नुकीली व नीचे झुकी हुई। इसके पैर की उंगलियां मकड़ी की भांति लम्बी होती है। नर-मादा दोनों देखने में लगभग एक जैसे लगते हैं।

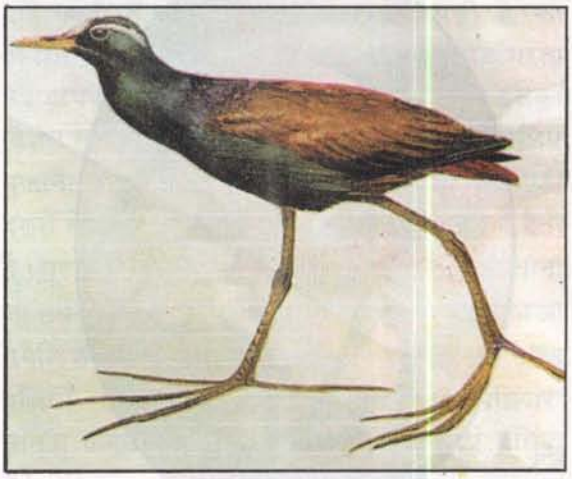

विवरण—जैकाना जैकेनिडी परिवार की एक जल-चिड़िया है। इसकी सात जातियां पाई जाती हैं जैसे—वीजन पुच्छ जैकाना, कास्य पक्ष जैकाना आदि। तालाबों में तैरता हुआ वनस्पति जैसे लिलि और सिंघाड़े की पत्तियों और शाखाओं पर अपने मकड़ी जैसे लम्बे पैरों की सहायता से यह पक्षी आसानी से चलता है। इसकी बोली टर्बान, टर्बान जैसी होती है।

कारंडव [कारण्डक] ज्ञाता. 1/1/33 प्रश्नव्या. 1/9 औप. 6 जीवा. 3/275, जम्बू 2/12

Coot—बत्तख, अयरी, ठेकरी, खुशकुल, सरार, कारण्डक।

आकार—बत्तख के तुल्य।

लक्षण—शरीर का रंग स्लेटी-काला। हाथी दांत जैसी सफेद नुकीली चोंच तथा ललाट शिल्क रहित।

विवरण—भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश आदि में पाए जाने वाला यह पक्षी नदियों, झीलों आदि के किनारे या पानी में झुंड के साथ देखा जाता है। उड़ान-भरने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से पूर्व पानी में तेजी से कुछ सरकता है, कुछ दौड़ता है, कुछ उड़ता है। काफी कोशिश से दौड़ने के बाद, फिर ऊपर उठता है किन्तु एक बार हवा में पहुंच कर फिर कुशलता पूर्वक उड़ता रहता है। साफ तथा तेज तूर्यनाद जैसी कूजन जो रात को अक्सर सुनाई देती है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 301, भारत के पक्षी, सचित्र विश्व कोश]

कालोइक [कालोइक] अंवि पृ. 226

Chinchilla—नकुल की एक जाति, मंगूसा, चिंचिला, कालोकी।

आकार—10 इंच लम्बा गिलहरी के समान दिखने वाला भुजपरिसर्प प्राणी।

लक्षण—अति सुन्दर कोमल कबूतरी रंग का फर होता है। लम्बी टांगें खरगोश की तरह प्रतीत होती हैं।

विवरण—यह प्राणी दक्षिण अमेरिका के चिली देश में विशेष रूप से पाया जाता है। यह सूखी चट्टानों को खोद सकता है। सूखी घास आदि खाने वाला शाकाहारी जीव है। इनकी सुन्दर खाल के कारण इन्हें बहुतायत में मारा गया, जिससे ये अब केवल चिली देश में ही स्वतंत्र रूप से पाए जाते हैं।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Nature, Man and animals, Incyclopedia in colour]

किण्हपत्त [कृष्णपत्र] प्रज्ञा. 1/51

Butterfly of Black wings—कृष्णपत्र वाली तितली।

आकार—पतंगों के समान बहुरंगी आकार वाली।

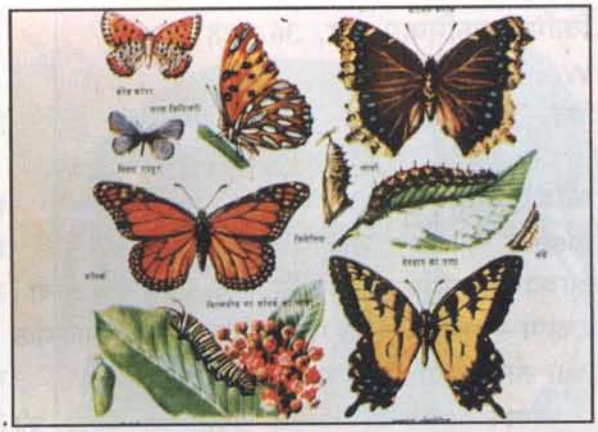

लक्षण—इनके छः पैर तथा शरीर तीन भागों में विभक्त होता है। पंखों पर चिमड़े (Scales) बने होते हैं।

विवरण—बहुरंगों वाली तितलियों की लगभग 5 हजार प्रजातियां पाई जाती हैं। ये आमतौर से धूप में बगीचों या बगीचों के आस-पास फुदकती दिखाई देती हैं। विश्राम अवस्था में अपने पंख ऊपर उठाए रहती हैं। इनका शरीर दुबला-पतला होता है। तितली के जीवन की चार अवस्थाएं होती हैं- अंडा, लार्वा, प्यूपा और वय प्राप्त कीट। तितली के लार्वा बहुत तेजी से खाते और बढ़ते हैं, जिससे इनके शरीर का खोल फट जाता है। ये अपने खोल कई बार बदलते हैं। इनका नया खोल पहले खोल से बहुत भिन्न होता है। फूलों फलों आदि का रस इनका मुख्य भोजन है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Nature, Man and animals incyclopedia in colour]

किण्हमिग [कृष्णमृग] आ.चू. 5/15 निसि. 7/10

Black Deer, Black buck—काला हिरण।

आकार—4 फीट लम्बा काले रंग का हिरण।

लक्षण—यह सामान्य हिरण के समान होता है लेकिन इसके सींग सुन्दर आकार लिए घुमावदार होते हैं।

विवरण—यह भारत एवं पाकिस्तान में पाया जाता है। 50 मील प्रति घंटा की रफ्तार से दौड़ सकता है। नर काले या गहरे भूरे रंग का होता है, परन्तु मादा पीले भूरे रंग की होती है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—राजनिघंटु पृ. 562, कैयदेवनिघंटु पृ. 456]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किमिय [कृमिका] उत्त. 36/128
Worm—कृमि
देखें—अरक

कीड [कीट] उत्त. 36/146
Insect—कीट।
आकार—लगभग .01 मि.मी. से 4-5 इंच तक लम्बा।
लक्षण—शरीर का रंग मनमोहक। बनावट आकर्षक तथा तीन भागों में विभक्त शरीर।
विवरण—भारत के विविध प्रकार के कीटों की 50,000 से भी अधिक प्रजातियां पाई जाती हैं। ये सभी प्रकार के वातावरण में रहने के अत्यधिक अनुकूल होते हैं। कुछ कीट गर्म प्रदेशों और गर्म रेगिस्तानों में रह सकते हैं। कुछ कीट अत्यधिक सर्दी में रह सकते हैं और तीव्र विष भी सहन कर सकते हैं।

कीडज [कीटज] अनु. 40.43
Silk-Worm, Silk-Cocoon—कृमिकोश, रेशम का कीड़ा।
देखें—कोसिकार कीड़ा

कीड़ी [कीड़ी] आवटीप-168
Ant—चींटी।
आकार—लगभग 0.1 मिली मी. लम्बा।
लक्षण—सामूहिक जीवन व्यतीत करने वाली श्रमशील प्राणी।
विवरण—चींटियों की विश्वभर में 8000 से अधिक किस्में पाई जाती हैं। सभी चींटियां बस्तियां बनाकर रहती हैं। विभिन्न स्थानों की चींटियों की शारीरिक संरचना भी भिन्न-भिन्न होती है। अफ्रीका के जंगलों में पाई जाने वाली चींटियों की पीठ पर कूबड़ होता है। ये पेड़ों पर मिट्टी का घर बनाकर रहती हैं। यूरोप में किसान व ग्वाले जाति की चींटियां पाई जाती हैं। किसान चींटियां पेड़ पौधे लगाती हैं। कई चींटियां गाएं भी पालती हैं। ये गायें असल में पौधे पर पाई जाने वाली एक तरह की जूं हैं। फौजी जाति की चींटियां बड़ी खूंखार होती हैं, हाथी भी इनके रास्ते से हट जाते हैं। अमरीकी वैज्ञानिकों के अनुसार चींटियां दीर्घ जीवी होती हैं।

कीर [कीर] अंत 5/32 प्रश्नव्या. 3/13
Parakeet—तोता, सुगा, सुवटा, कीर, रक्ततुण्ड।

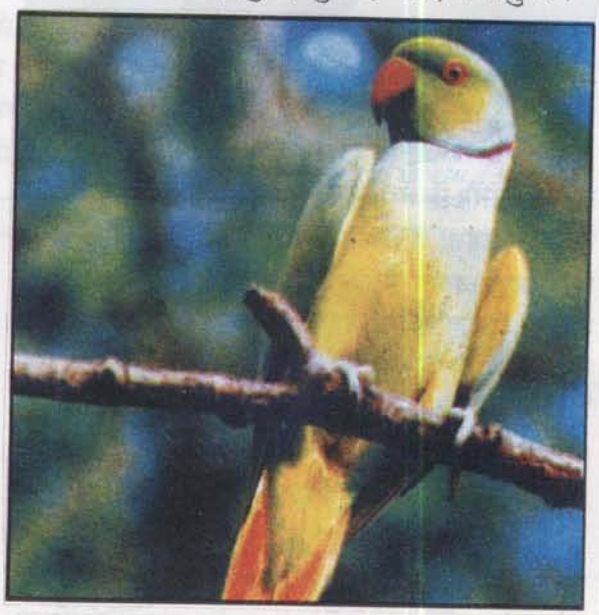

आकार—सामान्यतः 16 इंच से 1 फीट 7 इंच तक लम्बा।
लक्षण—सामान्यतः पूंछ हरी-नीली और चोंच लाल होती है। नर की गर्दन के चारों तरफ काली या गुलाबी पट्टी होती है जिसे कंठी कहते हैं।
भारतीय तोता प्रायः 35 सेमी. लम्बा तथा गुलाबी कंठी वाला होता है जिसके शरीर पर आंख से नाक तक काली धारी होती है।
विवरण—विश्व भर में इसकी 160 प्रजातियां पाई जाती हैं। कबूतर के बाद पक्षियों में बुद्धिमानता की दृष्टि से इसका दूसरा स्थान है। यह विद्याप्रेमी, मेधावी और तीक्ष्ण बुद्धि वाला होने के कारण मानव बोली की हू-ब-हू नकल कर सकता है। सर्कस में तोतों के कई आश्चर्यजनक करिश्मे दिखाए जाते हैं।
यह अपनी छोटी, मजबूत एवं हुक के समान मुड़ी तीखी चोंच से फलों पर आघात करता है। स्वामी भक्त एवं विशुद्ध शाकाहारी होने के कारण पक्षियों में इसका विशेष स्थान है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कीव [कीव] प्रश्नव्या. 1/9
Kiwi—किवी, कीव
आकार—30-45 से.मी. लम्बा मुर्गे के बच्चे के समान।
लक्षण—अति मुलायम बालों में इसके डैने (उड़ने वाले पंख) छिपे रहते हैं। चोंच लम्बी तथा चोंच के अंतिम सिरे पर नथुने होते हैं। डैने छोटे होने के कारण यह उड़ नहीं सकता।
विवरण—वर्तमान में किवी न्यूजीलैंड के उत्तर दक्षिण तथा स्टिवर्ट (Stewart) द्वीपों में एवं दक्षिणी द्वीप के पश्चिमी क्षेत्रों में विशेष रूप से पाए जाते हैं। किवी जंगलों में रहता है और दिन में बाहर नहीं निकलता लेकिन रात्रि के समय भोजन की तलाश में इधर-उधर घूमता नजर आता है, शत्रु को देखकर बहुत तेजी से भागता है और सीटी की भांति आवाज निकालता है। इसका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े, मिट्टी में पाए जाने वाले जीव तथा सरस फल हैं।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Nature, विश्व के विचित्र जीव जंतु, Incyclopedia in colour]

कुंकुण [कुंकुण] प्रज्ञा. 1/51 उत्त. 36/146
A kind of flea—पिस्सू की एक जाति, कुंकु।
देखें—पिसुय

कुंच, कोंच [क्रौंच] ठा. 7/41/2 सम.प्र. 241 भग. 9/149 ज्ञाता. 1/5/3 प्रश्नव्या. 1/9
Demoiselle-crane—कुंज, कुंच, कुरर, खर, क्रौंच, कर्करा।
अह कुसुम संभवे काले, कोइला पंचमं सरं।
छट्ठं च सारसा कुंचा णेसायं सत्तमं गओ। [ठाणं 7/41]
देखें—कुरर

कुंजर [कुंजर] आ.चू. 15/28 सू. 2/2/64 भग. 11/138
Elephant—हाथी।
आकार—लगभग 10 फीट ऊंचा तथा 5-6 टन वजन का विशाल प्राणी।

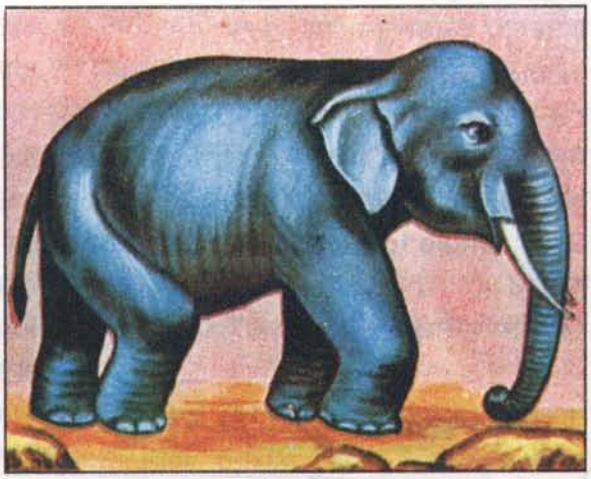

लक्षण—शरीर का रंग काला-कत्थई। मुख के पास दो लम्बें दांत एवं आगे लटकती हुई लम्बी सूंड। सूंड के अंत में एक या दो खंड होते हैं। जिनका प्रयोग वह अत्यंत कुशलतापूर्वक कर सकता है। सूंड का खंड अत्यन्त संवदेनशील एवं गंधग्राही होता है।
विवरण—भारत और अफ्रीका में पाए जाने वाला यह प्राणी अपने सूंड को आगे-पीछे, ऊपर-नीचे सभी दिशाओं में घुमा सकता है। सूंड को हाथी पांचवें हाथ-पैर की भांति काम में लेता है जिसके द्वारा 400-500 K.M. (किलोग्राम) वोझ उठा सकता है। यह एक पूर्ण शाकाहारी जीव है।
सूंड से भारी लट्ठा उठाकर हाथी अपने दांतों पर ठीक स्थिति में रख लेता है और सूंड से उसे उस स्थान पर पकड़े रहता है। हाथी की प्राण शक्ति इतनी तीव्र होती है कि वह आसपास के स्थान की गतिविधियां जान लेता है। मदोन्मत्त हाथी मनुष्य आदि के लिए बहुत खतरनाक होता है। वह मनुष्य आदि को आकाश में काफी ऊंचाई तक उछालकर मार देता है। हाथी के बच्चों के दांत नहीं होते। 4-5 वर्ष के हाथी के दांत आने प्रारम्भ हो जाते हैं।

कुंथु [कुंथु] प्रज्ञा. 1/50 उत्त. 36/137
Very Very Small Insect—कुंथु।
आकार—अति सूक्ष्म कीट।
लक्षण—सामान्य आंखों से दृष्टिगोचर न होने वाला।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—जीव विचार प्रकरण]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुंदुल्लुय [कुंदुल्लुय] पा. 393
Indian great Horned owl—उल्लू, घुग्घू।
देखें—उलूक

कुक्कुड (कुक्कुट) ठा. 7/41/1 भग. 12/154 उवा. 7/50 प्रश्नव्या. 1/9
Grey Jungle fowl—मुर्गा, जंगली मुर्गा, धूसर वन कुक्कुट।
देखें—कण्णत्तिय।

कुक्कुड [कुक्कुट] प्रज्ञा. 1/51 उत्त. 36/147
A kind of Flea—पिस्सू की एक जाति।
देखें—पिसुय

कुक्कुह [कुक्कुह] प्रज्ञा. 1/51
Scelsa—स्केल्स, कुक्कुह, कुकुम्बर मोजेक।
आकार—लगभग 4-6 मिलीमी. लम्बा, अंडाकार से दीर्घायत आकार का कीट।
लक्षण—शरीर का रंग सफेद, ढीले छिलके के अन्दर रहकर लकड़ी का रस चूसता है।
विवरण—विशेष रूप से अंगूर की वेल पर पाए जाने वाला यह कीट शाखाओं के मोड़ पर रहता है। इसके आक्रमण से पेड़-पौधे सूख जाते हैं।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—फसल पीड़क कीट, Nature, Incyclopedia in colour]

कुच्छिकिमिय [कुक्षिकृमिक] प्रज्ञा. 1/49
A Worm Found in the cavity of the abdomen—उदर प्रदेश में पैदा होने वाली कृमि।
आकार—0.1 मिलीमी. से कई फीट तक लम्बा।
लक्षण—शरीर का रंग सफेद-भूरा से कत्थई लाल तक। कुछ के शरीर खंडों में विभक्त होते हैं। सभी कीड़े पतले, मुलायम और बिना पैर वाले होते हैं।
विवरण—चपटे, गोल और लम्बे शरीर वाले इन कृमियों की अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं, जैसे फीता कृमि (Tapeworm), ऐस्केरिस (गोलकृमि), अंकुश-कृमि (Hood worm) आदि। ये प्राणियों के पेट में परजीवी के रूप में अपना पूरा जीवन व्यतीत कर देते हैं।

कुम्म (कूर्म) आचा. 6/6 सू. 1/7/15
Tortoise, Turtle—कछुआ, कूर्म, कच्छप।
देखें—कच्छभ।

कुरंग [कुरंग] प्रश्नव्या. 1/6 प्रज्ञा. 1/64 जम्बू 2/35

General-Deer—साधारण मृग, बादामी या तामड़े रंग का मृग।
आकार—लगभग 3-4 फीट की ऊंचाई वाला प्राणी।
लक्षण—शरीर का रंग काला-भूरा। पेट की ओर का भाग सफेद तथा आंखों के चारों ओर सफेद धब्बे। इसके एक जोड़ी 50 से 60 से.मी. वर्तुलाकार सींग होते हैं। मादा का रंग बादामी या तामड़ा होता है। मादा के सींग नहीं होते।
विवरण—राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र और कर्नाटक आदि में पाए जाने वाला यह प्राणी अत्यन्त भोला होता है। यह अकेला रहना पसंद नहीं करता। इसकी गिनती तीव्र-गति वाले प्राणियों में होती है।
विमर्श: सुश्रुत संहिता पृ. 188 में कृष्ण एवं ताम्र वर्ण से रहित मृग को कुरंग कहा है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—मानक हिंदी कोश, हिंदी शब्द सागर, Apte]

कुरर [कुरर] प्रश्नव्या. 1/29
Demoisella Crane—खर क्रौंच, कर्करा कूंज, कुरर।
आकार—तीन फीट ऊंची बत्तख।
लक्षण—शरीर का रंग धूसर, सिर तथा गर्दन काली।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निम्न ग्रीवा के पंख लम्बे एवं भालाकार, जो वक्ष तक फैले रहते हैं। आंखों के पीछे सफेद कर्ण-शिखाएं होती हैं।

विवरण—मैसूर से शीतकाल में दक्षिण वाले क्षेत्रों में आने वाले ये प्राणी काफी ऊंचाई तक उड़कर गोल चक्कर बनाते हुए मंडराते रहते हैं। सुरीली तथा उच्च तारत्व वाली तूर्यनाद जैसी ध्वनि काफी दूर तक सुनाई देती है। जमीन से उड़ते समय इनके झुण्ड काफी शोर गुल मचाते हैं। इनकी कुजन में कुरर्-कुरर् जैसी ध्वनि ऊंचे-नीचे कई तरह के स्वरों में सुनाई देती है।

कुररी [कुररी] उत्त. 20/50

River Tern—सरित गंगाचील, टिहरी, कुररी

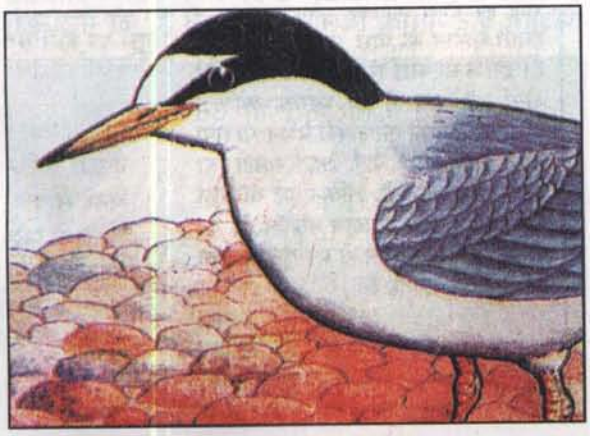

आकार—कबूतर से कुछ बड़ा।

लक्षण—शरीर का रंग भूरा-सफेद। दुम लम्बी तथा बीच से फटी हुई। गहरी-पीली चोंच तथा छोटी लाल टांगें।

विवरण—भारत, लंका, बर्मा आदि देशों में पाए जाने वाला यह पक्षी नदियों, झीलों और तालाबों के ऊपर पंखों को फड़फड़ा कर पानी में मछलियों की तलाश करता है। कभी-कभी तो बिल्कुल पानी के अन्दर डूब जाता है। किन्तु शीघ्र ही चोंच में शिकार को पकड़े हुए बाहर आ जाता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—भारतीय पक्षी, The Bird in sanskrit Literature]

कुररी [कुररी] उत्त. 20/50

Indian Wiskered Turn—टेहरी, कुररी, भारतीय गुम्फ कुररी

आकार—कबूतर के तुल्य।

लक्षण—शरीर का रंग धूसर-सफेद। बहुत छोटी और थोड़ी सी फटी हुई दुम। दुम के दोनों भाग वर्गाकार प्रतीत होते हैं। चोंच का रंग लाल होता है।

विवरण—भारत, बंगलादेश, बर्मा आदि देशों में पाए जाने वाला यह पक्षी पानी में बहुत कम जाता है, यद्यपि इसके पैर जाल युक्त होते हैं। शिकार करने के अलावा अधिकांश समय चट्टानों या मिट्टी के टीलों पर बैठ कर बिताता है।

शेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—कुररी [River Turn]

कुरल [कुरल] प्रज्ञा. 1/79

Osprey—मछलीमार, मछरंग, मत्स्य कुररी, कुरल।

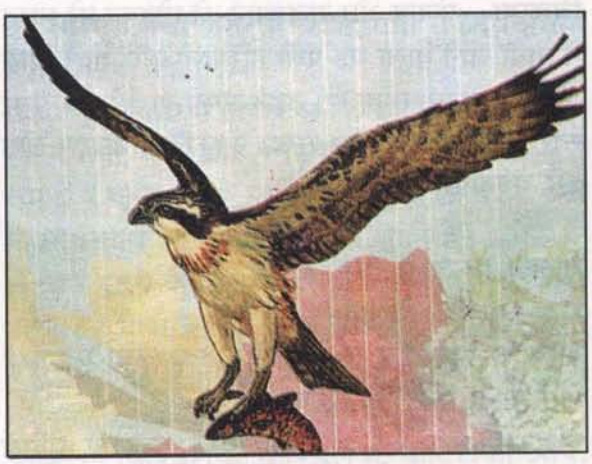

आकार—चील से काफी मिलता-जुलता।

लक्षण—गहरा भूरा बाज (श्येन), जिसका सिर भूरा और निचला भाग सफेद होता है। ऊपरी वक्ष में एक चौड़ी भूरी पट्टी या कंठी होती है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवरण—भारत, बर्मा, लंका आदि देशों में पाया जाने वाला यह पक्षी नदियों, झीलों और समुद्रों के ऊपर मछली पकड़ता दिखाई देता है। शिकार का उपयुक्त अवसर आते ही अपना पंख बंद कर शिकार पर झपटता है।

कुलक्ख [कुलाक्ष] प्रश्नव्या. 1/21

Red munia, Waxbill—लाल, लाल मुनिया, कुलक्ष, सिनिबाज, नकल खौर।

आकार—गौरेया के समान।

लक्षण—शरीर का रंग भूरा। चोंच लाल और पिछली पीठ गहरी लाल होती है। नर-मादा दोनों एक से प्रतीत होते हैं।

विवरण—पंजाब और राजस्थान को छोड़कर पूरे भारत में पाया जाने वाला यह पक्षी हरियाली और गीली घास में झुंड बनाकर रहता है। उड़ते समय या बैठे बैठे मधुर स्वर में चूं-चूं करता है। सुन्दर आकृति के कारण लोग इसे बहुतायत में पालते हैं।

कुलल [कुलल] दस. 8/53

Cat—मार्जार, बिलाव।

आकार—10 इंच से 3-4 फीट तक लम्बा एवं 1/2 फीट से 2 फीट तक ऊंचा।

लक्षण—शरीर का रंग काला, सफेद, मक्खनी, धूमिल पीला, नीला-मखमली, चित्तकबरा, धारीदार आदि। दांत लम्बे, आंखें बड़ी एवं पीले रंग वाली।

विवरण—विश्व भर में इनकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। इनके पाव गद्दीदार होते हैं। जिसके कारण

चलते समय आवाज नहीं होती। ये अपना शिकार अधिकतर रात्रि को करते हैं। इनकी लंबी मूंछें स्पर्शेन्द्रिय का काम करती हैं।

रात में आंखों की पुतलियां फैलने के कारण यह अंधेरे में अच्छी तरह देख सकता है। सिक्किम और असम के घने जंगलों में गोल्डन केट नामक बिलाव पाया जाता है, जिसकी त्वचा सुनहरे रंग की होती है। लद्दाख और जम्मू-काश्मीर में पालास नामक बिलाव पाया जाता है। जिसकी पूंछ लम्बी और झबरीली होती है। असम, पश्चिम बंगाल आदि में नदी-नाले के किनारे जंगलों में फिंशीग कैट नामक बिलाव पाये जाते हैं, जो मछलियों को पकड़कर खाते हैं। कई बिलाव, बिल्लियां इतनी खतरनाक होती हैं कि कुत्ते भी उन पर हमला करने से कतराते हैं।

कुलल [कुलल] सू. 1/11/27 प्रश्नव्या. 1/9

Crested Serpent Eagle—डोगरा चील, कुलल।

आकार—सामान्य चील से बड़ा।

लक्षण—गहरे भूरे रंग का पक्षी, जिसमें सुस्पष्ट काला और सफेद न्यूकल शिखर होता है। जो खड़े होने पर फैल जाता है। निचला भाग गेहूआं भूरा एवं सफेद बिन्दियों से युक्त होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शिकार को देखता रहता है और आसमान में बड़े-बड़े चक्कर लगाया करता है। 3 या 4 स्वरों की केक-केक-केक की ध्वनि से पहचाना जाता है।

विवरण—विश्व में इसकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। यह शाखा पर बैठ कर शिकार को देखता रहता है और आसमान में बड़े-बड़े चक्कर लगाया करता है। 3 या 4 स्वरों की केक-केक-केक की ध्वनि से पहचाना जाता है।

कुलाल [कुलाल] सू. 2/6/44
Cat—मार्जार, विलाव। देखें—कुलल

कुलाल [कुलाल] सू. 2/6/44
Mottled Wood Owl—उल्लू देखें—उलूक

कुलाल [कुलाल] सू. 2/6/4
Red Jungle fowl—जंगली मुर्गा, मुर्गा, वन कुक्कुट। देखें—कण्णत्तिय

कुलीकोस [कुलीक्रोश] प्रश्नव्या. 1/9
Flamings—बॉग हंस, राजहंस, हंस, छानराज बागो।
आकार—खड़ा होने पर 4 फुट ऊंचा घरेलू राजहंस की भांति।

लक्षण—शरीर का रंग गुलाबी-सफेद। लम्बी टांगें तथा लम्बी गर्दन। गुलाबी रंग की चोंच बीचोंबीच से नीचे की ओर मुड़ी रहती है।
विवरण—केवल भारत में पाया जाने वाला यह पक्षी देखने में अत्यन्त सुन्दर होता है। राजहंस की तरह भोंपू आवाज के कारण लोग इसे भी राजहंस के नाम से पुकारते हैं। इनकी टोलियां V आकृति या तिरछी लहर बनाती हुई या फिर सीधी रेखा में उड़ती हैं।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—भारत के पक्षी, K.N. Dave]

कोइल, कोइला [कोकिल, कोकिला] ठाणं 7/41 ज्ञाता. 1/5/3 प्रश्नव्या. 2/12, 4/18
Koel—कोयल, कोकिला, कूक्कू।
आकार—कौवे की अपेक्षा कुछ दुबली-पतली।

लक्षण—नर के शरीर का रंग चमकता हुआ काला। पीली हरी चोंच और गहरी लाल आंखें। मादा के शरीर का रंग भूरा तथा शरीर में काफी घनी सफेद चित्तियां और धारियां होती हैं।
विवरण—विश्व में इसकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। बगीचों, कुंज और घनी पत्तियोंदार पेड़ वाले खुले स्थानों में कू-कू-कू की ध्वनि से पहचानी जाती है। गर्मी के साथ-साथ इसकी बोली बढ़ती जाती है। प्रत्येक कू के साथ दूसरी कू जोर से बोलती है। यह एक परजीवी प्राणी है। मादा कोयल अपने अंडे कौवे के घोसले में बड़ी चालाकी से रख देती है।

कोंडलग [कुण्डलक, कोण्डलक, कोंटलक] औप. 6 जीवा. 3/275 जम्बू. 2/12
Kora, Water cock—कोरा, कोंडलग, कोगंरा, कांगाड़, जलमुर्गा।
आकार—तीतर से कुछ बड़ा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

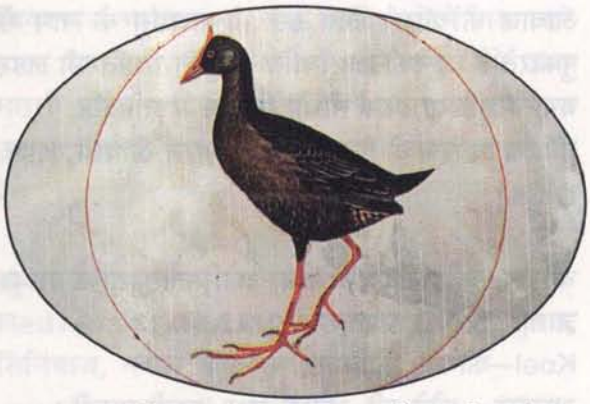

लक्षण—शरीर का रंग काला-भूरा। पैर लम्बे एवं लाल रंग वाले। चोंच हल्की लाल तथा सिर पर छोटी कलंगी।
विवरण—भारत, पाकिस्तान आदि में पाया जाने वाला यह पक्षी प्रायः सांध्यचर होता है। बादलों वाले दिनों में बड़ी सतर्कता से बाहर निकलता है। थोड़ी-सी आहट सुनते ही झाड़ियों में छुप जाता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 143]

कोकंतिय [कोकन्तिय] आ.चू. 1/52 ज्ञाता. 1/1/178 प्रश्नव्या. 1/6 जीवा. 3/275
Fox—लोमड़ी
आकार—कुत्ते के समान।
लक्षण—शरीर का रंग अनेक प्रकार का, मुंह नोकीला,

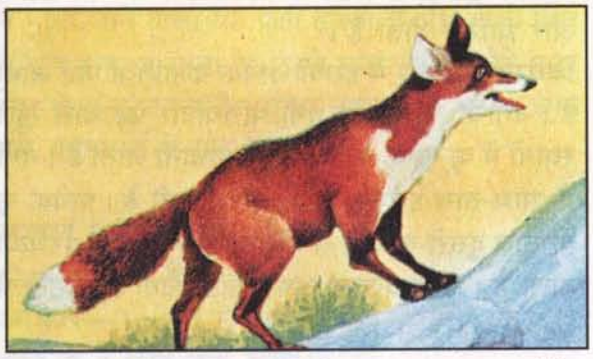

छोटे खड़े कान, पूंछ झबरीली एवं अंडाकार आंखें।
विवरण—संसार के अनेक भागों में पाया जाने वाला यह प्राणी अपने शत्रुओं को धोखा देकर बच निकलने तथा शिकार को खोज निकालने में बहुत कुशल होता है। यह रात्रिचर प्राणी है। दिन में सोता रहता है और रात में अकेले या जोड़े में शिकार करता है। यह आवाज और सूंघने की भाषा से अन्य लोमड़ियों से संपर्क स्थापित करता है। यह जमीन में विल बनाकर झाड़ियों और खेतों में रहता है। सफेद रोएं वाली आर्कटिक प्रदेश की लोमड़ी सबसे प्रसिद्ध है।

कोणालग [कोनालक] प्रश्नव्या. 1/9
Koral Water Cock—कोरा, कोंडलग, कोंगरा, कांगाड, जलमुर्गा।
देखें—कोंडलग

कोत्थलवाहग [कोत्थलवाहग] प्रज्ञा. 1/50
A kind of Insect—सड़ान पैदा करने वाला कीट, कुत्थिका।
आकार—2-5 मिलीमी. लम्बा।
लक्षण—शरीर का रंग चमकीला-भूरा। मल द्वार से विशेष प्रकार की गंध निकालता है।
विवरण—गंदे स्थानों पर रहने वाला यह कीट अत्यधिक सड़ान पैदा करता है। इसकी सड़ान से प्रारम्भिक अवस्था वाले पेड़-पौधे विनष्ट हो जाते हैं।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—फसल पीड़क कीट, Incyclapedia in Colour, Nature]

कोल [कोल] प्रश्नव्या. 3/18
Lemming—चूहे की एक विशेष प्रजाति, कोल (कर्नाटक)।
आकार—सामान्य चूहों से काफी बड़ा।
लक्षण—शरीर का रंग कत्थई-भूरा। पूंछ चूहों की अपेक्षा छोटी। दांत तीखे एवं मजबूत।
विवरण—भारत के कुछ स्थानों, उत्तरी अमेरिका और यूरोप में पाया जाने वाला यह प्राणी तीन-तीन फीट लम्बी कतार बनाकर पहाड़ों से उतरता है। दिन में जो कुछ मिलता है उसे खाता है। इनकी कुछ प्रजातियां समुद्र में डूबकर आत्महत्या भी करती हैं।

कोल [कोल] दस. 4/22
Wood-Worm, Furniture beetle—काष्ठ कीट
देखें—कट्ठाहार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोल [कोल] दस.1/6

Pig—सूअर

आकार—जंगली सूअर से लगभग मिलता-जुलता।

लक्षण—शरीर का रंग भूरा, काला, कत्थई, धारीदार आदि। दांत मजबूत एवं खोल युक्त। पूंछ छोटी एवं पतली।

विवरण—विश्व में इनकी अनेक प्रजातियाँ पाई जाती हैं। चीन और अमेरिका में सबसे अधिक सूअर पाले जाते हैं। भारत का बौना सूअर प्रसिद्ध है। अमरीका के फ्लोरिडा राज्य में ऐसे सूअर हैं जो मछली खाने के लिए पानी में डुबकी लगाते हैं। इनके बालों से ब्रश आदि अनेक चीजें बनती हैं।

कोलसुणग [कोलसुणक] आर.चू. 1/52 प्रज्ञा. 1/66 प्रश्नव्या. 1/6

Wild Pig, Wild Bor—जंगली सूअर, बनैला सूअर, वन्य वराह।

आकार—देशी सूअर से काफी मिलता-जुलता।

लक्षण—शरीर का रंग मटमैला, भूरा अथवा कालापन लिए हुए। खाल पर भूरे रंग के कड़क बाल। गर्दन की संरचना देशी सूअर की ही तरह जटिल व मजबूत। दो मजबूत एवं तीखे दांत मुंह से बाहर निकले होते हैं जिन्हें 'केनाइन दांत' कहते हैं।

विवरण—भारत, यूरोप, उत्तरी अफ्रीका, संपूर्ण दक्षिणी अफ्रीका, जापान, सुमात्रा आदि के घने जंगलों में पाया जाने वाला यह प्राणी अत्यंत बलिष्ठ एवं सुघड़ होता है। बाघ और तेंदुए भी इसके शिकार से कतराते हैं। सामूहिक जीवन व्यतीत करने वाला यह मूलतः शाकाहारी प्राणी है। घास और कास की जड़ें इसका सर्वप्रिय भोजन है। 40 K.M. प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ सकता है।

कोलसुनय [कोलसुणका] आ.चा.1/52 प्रश्नव्या. 1/66 जीवा. 3/620

Wild-Dog—जंगली कुत्ता।

आकार—भेड़िये के समान।

लक्षण—शरीर के ऊपर का रंग हल्का भूरा से लेकर हल्का लाल तक होता है। कुछ की पूंछ लम्बी एवं कुछ की छोटी होती हैं।

विवरण—भारत, आस्ट्रेलिया, जावा, सुमात्रा आदि के जंगलों में इनकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। ये बड़े भयानक एवं खूंखार होते हैं। इनकी टोलियां कभी-कभी बाघ, तेंदुआ, चीता आदि पर आक्रमण कर उन्हें मार डालती हैं।

कोलाहा [कोलाहा] प्रज्ञा. 1/70

A kind of Krait Snake—करैत सांप की एक जाति।

देखें—काकोदर

कोली [कोली] अंवि. पृ. 69

Spider—मकड़ी

आकार—लगभग .01 मी.मी. से 9 से.मी. तक लम्बा।

लक्षण—दो भागों में विभक्त शरीर, आठ टांगें, भोजन को चूसने के लिए जबड़े नुमे अंग। शरीर में तकुए या स्पिनरेह होते है, जिसके द्वारा यह तार कातती है।

विवरण—विश्व में 2000 विभिन्न किस्मों की मकड़ियां पाई जाती हैं। इनमें कुछेक पानी में रहती हैं। परन्तु अधिकांश जातियां घरों, बाग-बगीचों और जंगलों में रहती हैं। जब मकड़ी किसी कीड़े को पकड़ती है तो अपने विष-दंतों से कीड़े में थोड़ा सा विष डाल देती है। 'ब्लैक-विंडो' नामक काली मकड़ी के काटने पर आदमी बीमार पड़ जाता है। उष्णकटिबन्धीय क्षेत्रों में पाई जाने वाली दैत्याकार मकड़ी (Birdeating Spider) चिड़ियों और अन्य छोटे जन्तुओं को खा जाती है। दक्षिण यूरोप की वुल्फ मकड़ी (Wolf Spider) के काटने से मनुष्य की मृत्यु तक हो जाती है।

मकड़ियां एक दिन में इतना खा लेती हैं कि वह कई दिनों के लिए काफी होता है।

कोल्लग [कोल्लग] नि.चू. 2 पृ. 179

Jackal—सियार।

आकार—भेड़िए से कुछ छोटा।

लक्षण—शरीर का रंग हल्का भूरा और काला। लंबी नुकीली थूथन, बड़े तथा सीधे कान। गहरी छाती वाला

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुगठित शरीर। झबरीली पूंछ और न सिकुड़ने वाले पंजों से युक्त पतले पैर।

विवरण—भारतीय जंगलों एवं पहाड़ों पर रहने वाला यह प्राणी प्रायः श्मशान में देखने को मिलता है। यह मरे हुए जानवरों को खाना पसंद करता है। रात्रि के समय गांव के बाहर आकर हूआ-हूआ की आवाज करता है।

कोल्हुल [कोल्हुक] आव. चू. पृ. 465

Jackal—गीदड़, सियार।

देखें—कोल्लग

कोसिकारकीड [कोशिकारकीट] प्रश्नव्या. 3/22

Sikl-Worm, Silk-cocoon—रेशम का कीड़ा

आकार—लट, कृमि के समान।

लक्षण—प्यूपा अवस्था में यह कीट लट के सदृश होता है। जो अपने ग्रंथि से निकलने वाले पदार्थ के द्वारा रेशम के धागे का निर्माण करता है।

विवरण—शहतूत के वृक्ष पर पाए जाने वाले इस कीट में एक विशेष ग्रंथि होती है। जिसे रेशम ग्रंथि कहा जाता है। इन ग्रंथियों से एक विशेष प्रकार का पदार्थ उत्पन्न होता है। इल्लियां (Caterpillar) इस पदार्थ का उपयोग कर धागे सदृश संरचना बनाती हैं। यह धागे को अपने चारों ओर लपेट लेती हैं। इल्ली के चारों ओर रेशम का धागा लिपट जाने से गोल रचना बन जाती है। जिसे कृमिकोश या कोकून कहा जाता है। कृमिकोश में इल्लियां प्यूपा अवस्था में बदल जाती हैं। कृमिकोश को गर्म पानी में डालकर पश्विर्धित हो रहे कीट को मारकर रेशम निकाला जाता है।

कोहंगक, कोरंग [कोभंगक] औप. 6

Bronze Winged Jacana—जलकोपी (बंगाली), पीपी, कुनजै, क्रोधांगक, कामंयुग।

देखें—कामंजुग।

खंजण [खंजन] औप. 13

Large Pied Wagtail—मामुला, खंजन, बृहत् शबल खंजन।

आकार—बुलबुल से बड़ा।

लक्षण—काली और सफेद पक्ष वाली बड़ी वैगटेल चिड़िया, जो रंग-रूप में मैडपाई रॉबिन से मिलती-जुलती है।

विवरण—विश्व-भर में इसकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। नर किसी पहाड़ी से सुरीला गीत गाता रहता है। गीत मैग्पाई रॉबिन के गीत से काफी मिलता जुलता है।

खग्ग [खड्ग] खग्गी [खड्गी] ठाणं. 5/72, ज्ञाता. 1/5/35, प्रश्नव्या. 1/6

Rhinoceros—गेंडा (एक सींग वाला जंगली पशु)

आकार—लगभग 6 फीट ऊंचा, 12 फीट लम्बा।

लक्षण—शरीर का रंग काला एवं मोटी-मोटी परतें युक्त। नाक पर एक या दो सींग, जिनकी लम्बाई 2 फीट तक होती है। शरीर का वजन 2 टन तक। शरीर की खाल पर एक भी बाल नहीं होता।

विवरण—गेंडों की पांच प्रजातियां पाई जाती हैं—अफ्रीका का सफेद गेंडा (सैरेटोथीरियस साइमस),

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

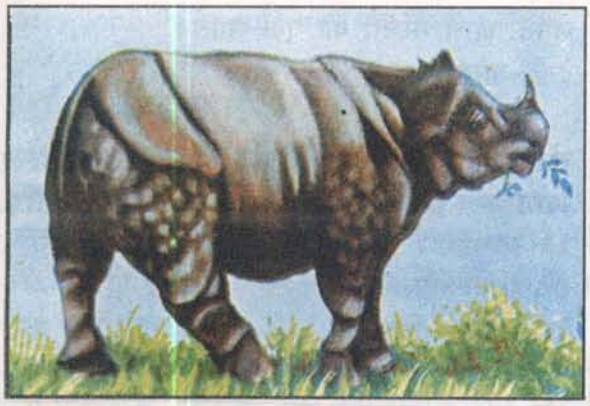

अफ्रीका का काला गैंड़ा या हुक वाला गेंडा (डाइसैरोस वाइकर्जिस), भारत का विशाल गेंडा (राइनोसेरिस थूनिकार्निस), जावा का गेंडा (राइोसेरिस सोंडेकस) तथा सुमात्रा का गेंडा (डाइसेरो राइनस सुमात्रेन्सिस)। यह ताकतवर होने पर भी बड़ा सुस्त प्राणी है। आंखें छोटी होने के कारण नजर पैनी नहीं होती किन्तु सूंघने, सुनने, की शक्ति तीव्र होती है।

गेंड़ा एक शुद्ध शाकाहारी प्राणी है। जो ज्यादातर समय घास आदि खाने में बिताता है, शेष समय पानी में पड़े-पड़े गुजारता है। इसके सींग ही इनके लिए रक्षा का आधार बनते हैं।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Nature, सचित्र विश्व कोश, Man and animals]

खज्जोत [खद्योत] अनु. 540

A fire-Fly, Glow-Worm—जुगनू, प्रकाश पैदा करने वाला कीट।

आकार—भंवरे से कुछ छोटा।

लक्षण—इनके पेट पर एक विशेष अंग होता है। इसमें बनने वाला रसायन-द्रव्य जब ऑक्सीजन के सम्पर्क में आता है तो जगमगाहट होती है।

विवरण—यह भंवरे की जाति का एक पतंग है जो बरसात के दिनों में अक्सर रात में पेड़ या झाड़ियों में देखा जाता है। इसकी कई प्रजातियां हैं। यह अपनी रोशनी के द्वारा पक्षियों को डरा कर भगा देता है।

खन्न [खन्न] जीव. 3/781

Chauepin—चाऊपिन, घंटी जैसी आवाज करने वाला मत्स्य, खन मछली।

आकार—लगभग 31/3 इंच लम्बा।

लक्षण—शरीर का रंग सुनहरा-काला। तैरते समय बिल्कुल घंटी की भांति आवाज करता है।

विवरण—अमेरिका में पाया जाने वाला यह मत्स्य तैरने में बड़ा कुशल होता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—जानवरों की दुनिया]

खर [खर] भग. 7/17, ज्ञाता. 1/159

Paddybird, pond Heron—अंधा बगुला, बगुला नामक जल पक्षी, खर।

आकार — पशु बगुला से कुछ बड़ा।

लक्षण—बैठे हुए इस पक्षी के शरीर का रंग मटमैला-भूरा। उड़ते समय चमकीले सफेद पंख सुस्पष्ट दिखाई देते हैं।

विवरण—भारत, लंका, नेपाल आदि में पाया जाने वाला यह पक्षी नदियों, झीलों और तालाबों के किनारे अकेला या झुंड के साथ शिकार खोजते हुए देखा जाता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—हिंदी शब्द सागर, मानक हिंदी कोश, भारतीय पक्षी, सचित्र विश्व कोश]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खर [खर] भग. 7/117 ज्ञाता. 1/1/159 प्रज्ञा. 1/18

Donkey—गधा।

आकार—घोड़े से छोटा।

लक्षण—पालतू गधे के शरीर का रंग काला, सफेद, सलेटी अनेक प्रकार का। जंगली गधे के शरीर का रंग सलेटी से लेकर गहरा भूरा तक होता है। पेट का निचला भाग सफेद तथा कान काले सिरे वाले नोकीले होते हैं।

विवरण—इनकी अनेक जातियां पाई जाती हैं। यह एक सीधे-स्वभाव का शाकाहारी पशु है। जिसका उपयोग बोझ आदि ढोने में किया जाता है। इसकी कोशिकाओं में निर्जलीकरण, सहन करने एवं जल का भंडारण करने की अद्‌भुत क्षमता होती है। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण यह जल की कमी वाले स्थलों में भी रह सकता है।

खलुंक [खलुंक] ठा. 4/468 उत्त. 27/3, 8

Restive ox, Restive bull—अयोग्य बैल।

विवरण—जो बैल गाड़ी खींचे वह मध्यम बैल, किंतु जो गाड़ी और रथ दोनों में काम आए वह उत्तम बैल होता है। जो किसी के काम न आए वह अयोग्य बैल की गिनती में आता है। अयोग्य बैल बार-बार चाबुक खाने पर भी कार्य में प्रयुक्त नहीं होता।

शेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—आवल्ल (बैल)

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—पाणिनि 4/4/80, अथर्ववेद 6/135/1]

खवल्लमच्छ [खवल्लमत्स्य] प्रज्ञा. 1/56

A kind of Chauepin Fish—चाऊपिन की एक जाति, खन्न मछली की एक जाति।

देखें—खन्न।

खाइडल, खाडहिल, खाडहिल्ल, खाडहिल्ल, खाडहेल्ल [दे.] प्रश्नव्या. 1/8 नंदी 38/4 प्रटीप. 10 आवहाटी पृ. 278

Squirrel—गिलहरी

देखें—कमेड (गिलहरी)

खार [खार] सू. 2/3/80 प्रज्ञा. 1/76

Duck-billed, Platypus—डकविल, प्लैटिपस, बत्तख चोंचा, खारी।

आकार—20 इंच लम्बा शरीर 12 1/2 इंच लम्बी एवं 2 इंच चौड़ी चोंच।

लक्षण—बत्तख जैसी चोंच एवं पैर वाले इस भुजपरिसर्प प्राणी के मल और मूत्र के निष्कासन का मार्ग एक ही होता है। बचपन में इसके छोटे-छोटे दांत होते हैं, जो जवान होने से पूर्व ही टूट जाते हैं।

विवरण—वर्तमान में केवल पूर्वी आस्ट्रेलिया और टस्मानिया में नदियों, झीलों तथा तालाबों के किनारे बिलों में रहने वाला यह प्राणी स्तनपायी होते हुए भी अंडे देता है। मादा के स्तन नहीं होते फिर भी यह बारीक छेद के द्वारा बच्चों को दुम से पेट पर चिपका कर दूध पिलाती है।

बिल के प्रायः दो दरवाजे होते हैं- एक पानी के भीतर और दूसरा जमीन के ऊपर। जो घास-फूस आदि से ढका होता है। अपने दुश्मनों को धोखा देने के लिए यह बिल में सुरंगें भी बना लेता है। यह तैरता है और गोता भी लगा सकता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Nature,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Incyclopedia in colour सचित्र विश्व कोश]

खुरदुग [क्षुरदुक] सू. 2/3/84
Skin Insect—चर्म कीट।
आकार—लगभग जूं के समान।
लक्षण—शरीर का रंग हल्का लाल-भूरा। मुंह पर संडासी की तरह एक डंक-सा होता है। जिसके द्वारा यह खून पीता है।
विवरण—यह जूं आदि के परिवार का ही सदस्य है। जो पशुओं के शरीर के ऊपर पैदा होता है और अपना पूरा जीवन परजीवी के रूप में बिताता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—सूत्रकृतांग चूर्णि पृ. 381]

खुल्लय [क्षुल्लय] प्रश्नव्या. 2/12 प्रज्ञा. 1/49
Shells—समुद्री शंख के आकार के छोटे शंख।
देखें—संखगण

गंड [गण्ड] प्रज्ञा. 1/65 जम्बू. 4/13 दसा. 10/14
Rinoceros—गेंडा (दो सींग वाला गेंडा) खग्ग, गंड।
विवरण—वर्तमान में एक मात्र अफ्रीका में पाए जाने वाले गेंड़े की नाक पर दो सींग होते हैं। इनमें से नीचे वाला सींग बड़ा एवं ऊपर वाला छोटा होता है। इन सींगों की लम्बाई 2 फीट तक होती है। राजा-महाराजाओं के शिकार के शौक के कारण भारतीय उपमहाद्वीप तथा जावा में दो सींग वाले गेडों का नामोनिशान ही मिट चुका है।
शेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—खग्ग (गेंडा)

गंडूयलग [गण्डूपदक] प्रज्ञा. 1/49
Earth Worm—केंचुआ।
आकार—पतले एवं मोटे रवड़ की भांति।
लक्षण—शरीर का रंग हल्का लाल तथा सफेद। शरीर कई छल्लों से बना होता है। एक लम्बे केंचुए के शरीर में 100 छल्ले तक हो सकते हैं।
विवरण—तालाब, नदी आदि के किनारे की मिट्टी तथा नमी वाले स्थानों की मिट्टी में पाए जाने वाले केंचुए

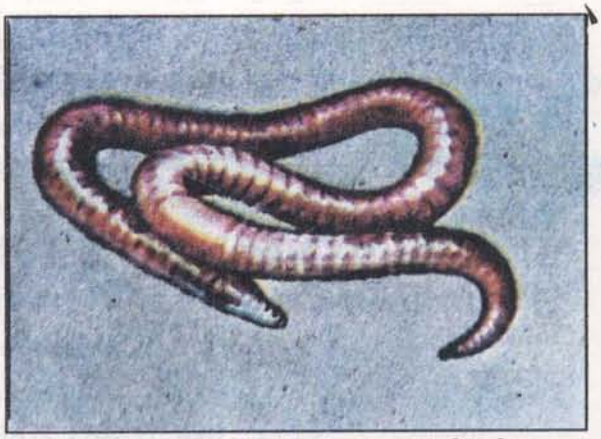

मिट्टी में ही।बल बनाते हुए आगे बढ़ते हैं और साथ साथ भोजन भी करते जाते हैं। बरसात के दिनों में अक्सर जमीन पर रेंगते हुए दिखाई देते हैं।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Nature, Incyclopedia in colour सचित्र विश्व कोश, फसल पीड़क कीट]

गंडूयलग [गण्डूपदक] प्रज्ञा. 1/49
A worm Found in the abdomen—गिंडोला, पेट की कृमि।
देखें—कुच्छिकिमिय

गन्धग [गन्धक] दसवै. 2/8
A kind of Snake—गन्धक सर्प
विवरण—गन्धक जाति में उत्पन्न सर्प मंत्रवादी के द्वारा बुलाए जाने पर मृत्यु के भय से अपना विष वापस पी लेते हैं। प्राणी-शास्त्रज्ञ इस मान्यता को विज्ञान की कसौटी पर अभी तक सिद्ध नहीं कर पाए हैं।
शेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—अगन्धग
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—अ.चू.पृ. 45, नि.चू. पृ. 87]

गंधहत्थि [गंधहस्तिन] ज्ञाता. 1/63, 1/5/16 भग. 1/7
Elephant of good breed—श्रेष्ठ हाथी
देखें—कुंजर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गंभीर [गंभीर] प्रज्ञा. 1/51
A kind of crab, A kind of Lobster—केकड़ा की एक जाति।
देखें—जलकारि

गद्दभ [गर्दभ] सू. 1/3/65 सम. 30/1/13 प्रज्ञा. 1/63
Donkey—गधा
देखें—खर।

गय [गज] प्रश्नव्या. 1/6 प्रज्ञा. 2/15
Elephant—हाथी
देखें—कुंजर (हाथी)

गरुल [गरुड़] सू. 1/6/21 ठाणं 2/271 भग. 2/94 प्रज्ञा. 2/30-31 जम्बू. 3/109

Golden Eagle—गरुल पक्षी, गरुड़ पक्षी।
आकार—चील से काफी बड़ा।
लक्षण—शरीर का रंग काला-भूरा। लम्बाई 82 से.मी. तथा पंखों का फैलाव 188 से 196 से.मी. होता है। चोंच छोटी एवं मजबूत।
विवरण—विश्व भर में इसकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं जैसे- भयानक गरुड़, सुनहरा गरुड़, हापी गरुड आदि। गरुड़ पक्षी की आंखें मनुष्य की अपेक्षा 8-10 गुना तेज होती हैं। यह लगभग 4 K.M. की दूरी से खरगोश को देख सकता है। यह बड़ा भयानक पक्षी है, पक्षियों के अतिरिक्त खरगोश, हिरण तथा 8-10 वर्ष के बच्चे को भी उठा ले जाता है।
सीटी जैसी किआ-किआ की ध्वनि द्वारा पहचाना जाता है।
प्रचलित मान्यतानुसार—यह अपने बच्चों की आंख खोलने के लिए पारस-पत्थर का प्रयोग करता है किन्तु प्राणि-शास्त्रविद् इस मान्यता को स्वीकार नहीं करते।

गलियस्स [गल्यश्व] उत्त. 1/12
Restive Horse—अविनीत घोड़ा
देखें—खंलुक

गवय [गवय] 1/6 प्रश्नव्या. 1/64 जम्बू. 2/35

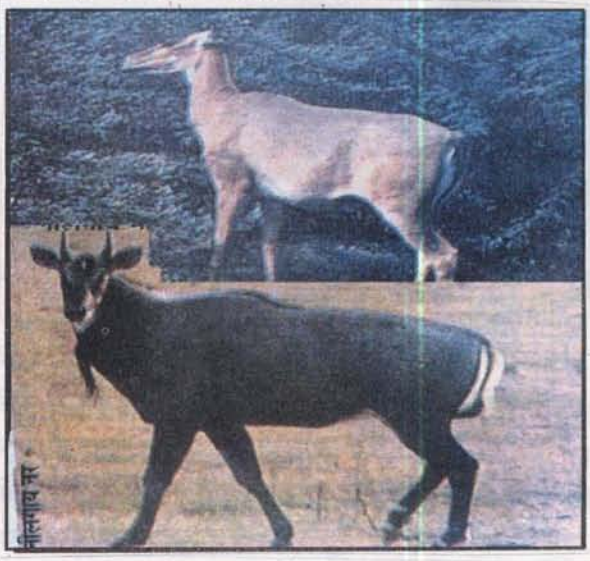

Blue bull—नील गाय, रोझ, गवय
आकार—घोड़े एवं गाय के तुल्य।
लक्षण—शरीर का रंग गहरा स्लेटी। छोटे तीखे और मजबूत सींग। मादा तथा बच्चे हल्के भूरे रंग के होते हैं। मादा के सींग नहीं होते। ठोढ़ी, होठ तथा चेंहरे का रंग सफेद होता है। पूंछ न अधिक छोटी और न अधिक बड़ी।
विवरण—हिमालय की तराई से दक्षिण में मैसूर तक पाया जाने वाला यह प्राणी दौड़ने और ऊंचा कूदने में माहिर होता है। 7-8 फीट तक की बाढ़ तो यह आसानी से लांघ जाता है। सर्दी, गर्मी को सहन करने की इसमें विशेष क्षमता होती है। यह लम्बे समय तक पानी के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बिना भी रह सकता है।

गवल [गवल] ज्ञाता. 1/1/33 उवा. 2/22 प्रश्नव्या. 1/30

Wild Buffalo—जंगली भैंसा, विशन।

आकार—सामान्य भैंसे से बड़ा और भयानक।

लक्षण—शरीर का रंग गहरा काला। बड़े और लम्बे सींग। आंखें बड़ी-बड़ी और डरावनी। अमेरिका में पाए जाने वाले जंगली भैंसों का रंग कुछ भूरा-काला होता हैं। ऊंट जैसे बाल, सिंह जैसे अयाल, मुड़े हुए पुट्ठे, लम्बी दुम और खुर इसकी विशेष पहचान है।

विवरण—भारत, अफ्रीका और उत्तरी अमेरिका में पाया जाने वाला यह प्राणी अत्यन्त भयानक और शक्तिशाली होता है। यह भीमकाय होते हुए भी तेजी से दौड़ सकता है। क्रोधावस्था में ट्रक को भी अपने मजबूत सींगों से उलट सकता है।

गवेलग [गवेलक] सू. 2/7/3 ठा. 7/41/1 ज्ञाता. 1/2/7

Sheep—भेड़, गाड़र, मेंढ़।

देखें—अमिल

गहरा [गहरा] प्रज्ञा. 1/79

White backed or Bengal Vulture—गिद्ध

आकार—मोर की भांति पूंछ छोड़कर।

लक्षण—शरीर का रंग काला-भूरा तथा सिर कलंगी रहित। ग्रीवा पतली एवं मजबूत चोंच युक्त।

विवरण—विश्व भर में इसकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। शहरों और गांवों के आसपास के क्षेत्रों में उपयोगी परिमार्जक का काम करता है। यह दीर्घ दृष्टि वाला प्राणी है, अपने भोजन को कई मीलों की दूरी से देख सकता है। दक्षिण-अमेरिका का कोंडोर नामक गिद्ध का वजन 9.09-11.3 K.G. तक तथा पंखों का फैलाव 10 फीट तक होता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 42, Nature, विश्व के विचित्र जीव जंतु]

गहरा [गहरा] प्रज्ञा. 1/79

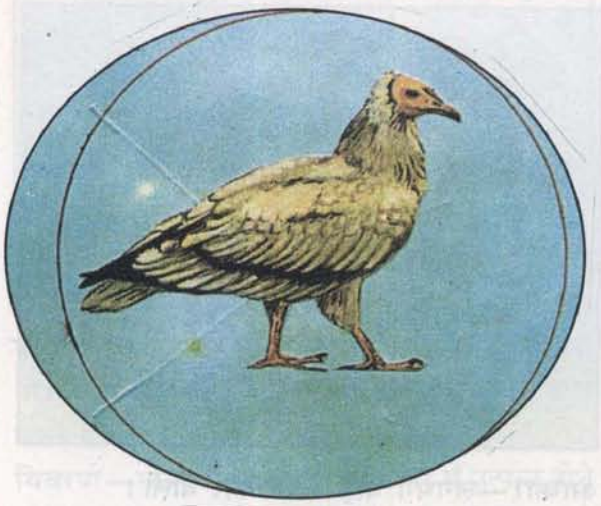

Ruffand Reeve—गेहवाला, बगवद, भट-जल रंक।

आकार—बटेर के तुल्य।

लक्षण—शरीर के ऊपरी भाग पर गहरी शल्क जैसी चित्रकारी। उड़ते समय पंखों का रंग सफेद प्रतीत होता है।

विवरण—भारत, नेपाल आदि देशों में पाया जाने वाला यह पक्षी लेक्स या हिल्स के नाम से भी जाना जाता है। इन पक्षियों की टोलियां किसी स्थान विशेष में एकत्रित होकर एक-दूसरों के साथ नोंक-झोंक या झड़प आदि करती हैं। उस समय का दृश्य बहुत ही रमणीय एवं दर्शनीय होता है।

गागर [गागर] प्रज्ञा. 1/56

Gagar-fish—गागर, गर्गर मत्स्य, गागूरा मत्स्य।

आकार—लगभग 5 फीट लम्बा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लक्षण—पिच्छिल अंग तथा पीले रंग वाला मत्स्य। पीठ पर छिलके एवं बहुत रेखाएं होती हैं।
विवरण—नदियों, समुद्रों आदि में इसकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। शत्रुओं से बचने के लिए यह अपने शरीर से विशेष प्रकार की गंध व रंग छोड़ता है। [विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—राजनिघंटु मांसादिवर्ग, Nature, रेंगने वाले जीव, जानवरों की दुनिया]

गाव-गाय [गो] ठा. 7/43/1 प्रज्ञा. 11/4
Cow—गाय

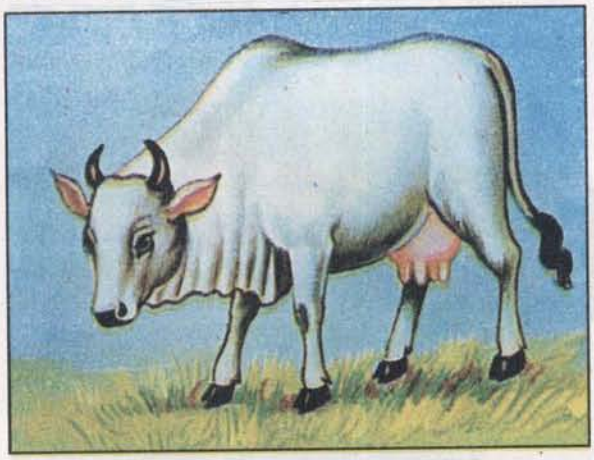

आकार—लगभग घोड़े के आकार वाली।
लक्षण—गायें अनेक नस्लों वाली और रंगों की होती हैं। भारतीय गायों के कंधे के पीछे कूबड़ होता है। दक्षिणी अफ्रीका की गायों के भी कूबड़ होता है। अमेरिका में गायों के कूबड़ नहीं होता। भारत और अफ्रीका की गायें अधिक सर्दी-गर्मी सहन कर सकती हैं।
विवरण—विश्व में इनकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। यूरोपीय गायों में जर्सी, ग्वेर्न्सी, हाल्स्टीन और स्विट्जरलैंड की भूरी गाएं खास तौर से दूध के लिए अच्छी मानी जाती हैं। दूध के लिए विकसित की गई नस्लों का शरीर मांसल नहीं होता बल्कि दुबला और बैडोल होता है। इंग्लैंड और स्काटलैंड में गाएं मांस के लिए पाली जाती हैं। गाय के बच्चे बछड़े कहलाते हैं जो बड़े होकर अनेक कार्यों में उपयोगी बनते हैं।

गावी [गौ] आ. चू. 1/44 जम्बू. 5/12
Cow—गाय
देखें—गाव, गाय

गाह [ग्राह] प्रज्ञा. 1/55
Crocodile, Geviyelis gentetices—घड़ियाल, गेवियल।

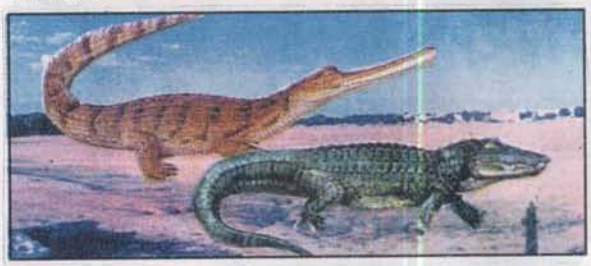

आकार—मगरमच्छ से बड़ा।
लक्षण—यह एक लम्बी थूथन वाला प्राणी है। ऊपर और नीचे के जबड़ों में हर तरफ दो दर्जन से अधिक पैने दांत होते हैं। शरीर कवच की पट्टियों से ढका होता है। शरीर पर गहरे भूरे रंग के धब्बे या धारियां होती हैं। वयस्क नर की थूथन के सिरे पर एक कूबड़ होता है जो एक मिट्टी के घड़े के समान दिखाई देता है। इसी कारण ये घड़ियाल के नाम से जाने जाते हैं।
विवरण—घड़ियाल की अनेक प्रजातियां हैं, जो उत्तर भारत आदि की महानदियों में पाई जाती हैं। कद में मगर से बड़ा होने पर भी यह बड़े जानवरों तथा मनुष्यों पर हमला नहीं करता। भोजन पचाने के लिए पत्थरों को निगलना इसका स्वभाव है। मादा घड़ियाल अपने अंडे नदी, समुद्र आदि के किनारे बालू या मिट्टी में गड्ढा खोद कर देती है।

गिद्ध [गृद्ध, गृध्र] आचा. 3/31 सू. 1/2/62 सम. 30/1/12 भग 7/22 प्रश्नव्या. 1/129
White backed, Bengal Vulture—गीध, गिद्ध।
देखें—गहरा

गोकण्ण [गोकर्ण] प्रश्नव्या. 1/6 प्रज्ञा. 1/64 जम्बू. 2/35
A Deer Antelope Picta—चौसींगा हिरण, गोकर्ण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आकार—सामान्य हिरण से कुछ बड़ा।
लक्षण—शरीर के ऊपर का रंग भूरा या धूमिल-भूरा तथा नीचे की ओर सफेद होता है। एक दूसरे के पीछे चार छोटे और पैने सींग होते हैं। सींग केवल नर के होते हैं। आगे के सींग 5-6 से.मी. तथा पीछे के सींग 12 से.मी. तक लम्बे होते हैं।
विवरण—भारतीय प्रायद्वीप के ऊंचे-नीचे पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाला यह प्राणी हिरणों में असाधारण होता है। इसकी दृष्टि, सूंघने तथा सुनने की शक्ति काफी विकसित होती है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—संकटग्रस्त वन्य प्राणी, Nature]

गोजलोय [गोजलोक] प्रज्ञा. 1/49
A kind of leech—गोजलौक, जौंक की एक जाति। देखें—जलोया

गोण [गो] आ.चू. 1/52 सू. 2/2/19
Ox, Bull—बैल, सांड़, खाग्गड़ देखें—आवल्ल (बैल)

गोणस [गोनस] प्रश्नव्या. 1/7 प्रज्ञा. 1/71
Russells Viper—गोनस, वोड्र, घोनस, गोनास।
आकार—4-7 फीट लम्बा।
लक्षण—शरीर का रंग सफेद-काला। ऊपर की चमड़ी चिकनी एवं मुलायम। मुंह देखने में गाय की नासिका के समान प्रतीत होता है।
विवरण—घने जंगलों, जलाशयों, नदियों आदि के किनारे पाया जाने वाला यह सर्प करैत, काकोदर की अपेक्षा कम विषैला होता है। यह अपने शिकार पर सहसा आक्रमण न करके, धीरे-धीरे करता है। प्रश्नव्या. टीका के अनुसार यह दुमुंही सर्प है।

गोमयकीडग [गोमयकीटक] प्रज्ञा. 1/51
Beetle—गोवरैला।

आकार—लगभग 1-2 इंच तक लम्बा।
लक्षण—शरीर का रंग काला-भूरा। इनके दो जोड़े पंख होते हैं। सामने वाले पंख सख्त होते हैं जो उसकी देह के लिए एक चिकने आवरण का काम करते हैं। पिछले पंख पतले होने के कारण उड़ने के समय इसकी मदद करते हैं।
विवरण—गोबर में रहने वाले या गोबर में उत्पन्न होने वाले इस कीट की हजारों प्रजातियां पाई जाती हैं। इसके पतले पंख, सख्त पंखों के नीचे दबे रहते हैं। अपने जीवन में गोवरैला को कई अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है, जैसे—अंडा, लार्वा, प्यूपा और अन्त में गोबरैला।

गोमाऊ [गोमायु] ज्ञाता. 1/4/23
Jackal—श्रृंगाल, सियार देखें—कोल्लग

गोम्ही [गोम्ही] प्रज्ञा. 1/50
Centipede—कानखजूरा
आकार—1 इंच से 1 फीट तक लम्बा।
लक्षण—इनका शरीर अनेक खण्डों में विभक्त होता है। प्रत्येक खण्ड से एक जोड़ी टांगें निकलती हैं। इनके जबड़ों के साथ एक जोड़ा जहरीला चिमटानुमा अंग होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

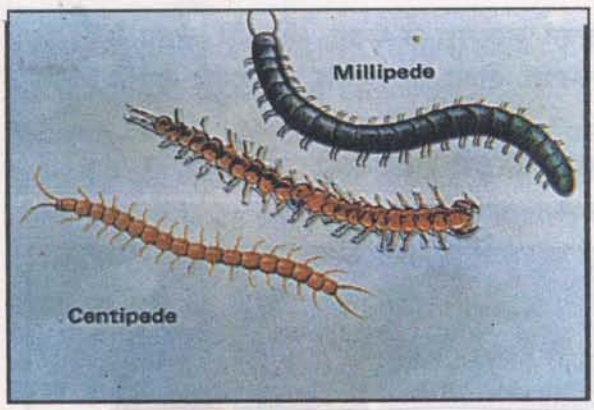

विवरण—इनकी रंग-बिरंगी अनेक जातियां पाई जाती हैं। इनके पैरों की संख्या अधिकांशतः 100 से अधिक होती हैं। ये अधिकतर अंधकार और सीलन की जगहों में रहते हैं।

गोरक्खर [गौरखर] प्रज्ञा. 1/63

Wild Donkey, Wild Ass—जंगली गधा, गौर-खर, घोड़खर (गुज.)।

आकार—घोड़े से छोटा परंतु पालतू गधे से बड़ा।

लक्षण—शरीर का रंग सलेटी से गहरा भूरा तक होता है। कान काले सिरे वाले तथा नुकीली होते हैं। गहरे भूरे रंग की अयाल से बनी एक गहरी लकीर होती है जो इसकी पीठ से लेकर गुच्छेदार पूंछ तक पहुंचती है।

विवरण—कच्छ की खाड़ी के शुष्क खारे क्षेत्र में पाया जाने वाला यह प्राणी तेज दौड़ने में दक्ष होता है। जबकि तिब्बत, लद्दाख और सिक्किम के जंगली गधे दौड़ने में इतने दक्ष नहीं होते।

जंगली गधों की कोशिकाओं में निर्जलीकरण, सहन करने एवं जल का भंडारण करने की विशिष्ट क्षमता होती है।

ोरमिग [गौरमृग] आ.चू. 5/15 निसि. 7/10, 17/12

White Deer—गौरमृग, सफेद हिरण।

आकार—कृष्ण मृग की भांति।

लक्षण—शरीर का रंग सफेद और कुछ काला। सींग लम्बे एवं घुमावदार।

विवरण—सौराष्ट्र, असम और मध्य प्रदेश में पाया जाने वाला यह प्राणी सामान्य मृगों से कुछ कमजोर होता है। सफेद शरीर होने के बावजूद भी धूप में आंखें खोल पाने में पूरी तरह समर्थ होता है। दौड़ते समय लम्बी कुलांचें भरता है।

विमर्श: वाजसनेयि संहिता 24, 32 ऐतरेय ब्राह्मण 2-8 में इसका अर्थ बैल की एक जाति किया है।

गोरहग [गोरथक] दस. 7/24

Calf—तीन वर्ष का छोटा बछड़ा।

देखें—गाय (गो)

गोलोम [गोलोमन्] प्रज्ञा. 1/49 निसि. 10/38

A kind of Leech—गोलोम, जौंक की एक जाति।

देखें—जलौक

गोह [गोध] सू. 2/2/58 भग. 8/222 प्रश्नव्या. 2/12 प्रज्ञा. 1/76

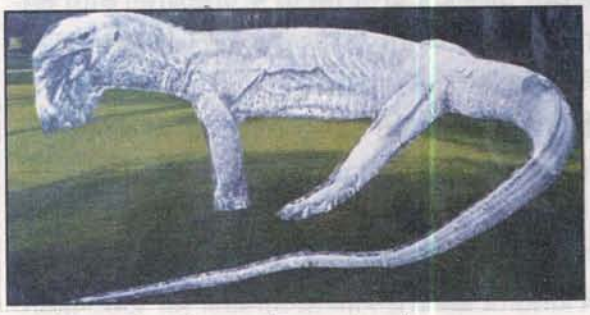

Lizard—गोह; विषखपरिया, चंदनगो।

आकार—नकुल से बड़े आकार वाला भुजपरिसर्प प्राणी।

लक्षण—भारतीय गोह के शरीर का रंग हल्की काली आड़ी धारियों से युक्त होता है। जबकि इंडोनेशिया के गोह के शरीर का रंग गहरा जैतूनी होता है। खाल खुरदरी, जीभ सांप की तरह लम्बी, चिकनी एवं दो भागों में विभक्त होती है।

विवरण—गोह की अनेक जातियां हैं, जिनमें कुछ पानी में भी तैर सकती है। प्राचीन काल में गोहों का उपयोग लड़ाई के समय किलों की ऊंची दीवारों पर चढ़ने के लिए किया जाता था। वर्तमान में भी डाकू, चोर आदि इसका उपयोग करते हैं। इसके पैरों की पकड़ बहुत मजबूत होती है जिस पर चिपक जाती है, उससे छुटाना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आसान कार्य नहीं होता। भारतीय गोहों में कबरा गोह सबसे बड़ी एवं खतरनाक होती है। इंडोनेशिया महाद्वीपों में पाया जाने वाला कोमोदो ड्रैगन विश्व का सबसे बड़ा गोह है। इसकी लम्बाई 3 1/2 मी. तक होती है। यह बहुत शक्तिशाली एवं भयंकर होता है।
विमर्श : राजनिघंटु पृ. 562 में गोह को घड़ियाल का पर्यायवाची माना है।

गोह [गोध] सू. 2/2/58 भग. 8/222 प्रश्नव्या. 2/12 प्रज्ञा. 1/76
Yellow wagtail—पीलक, पानपीलक, पीलाखंजन।
आकार—गौरेया से कुछ छोटा।
लक्षण—शरीर के ऊपरी भाग का रंग पीला-हरा या

जैतूनी हरा, नीचे का रंग पीला एवं पूंछ लम्बी होती है।
विवरण—विश्व भर में इसकी लगभग 5 प्रजातियां पाई जाती हैं। यह दलदल वाले खेतों तथा चारागाहों में दुम ऊपर नीचे झटकता हुआ कूदता भागता रहता है। यह बड़ी सतर्कता के साथ जल्दी-जल्दी पंख फड़फड़ाने के बाद रुक-रुक कर लहरदार घुमाव में चक्कर लगाता रहता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 41 yellow wagtail]

घरोइल [गृहकोकिल] सू. 2/3/80 प्रज्ञा. 1/76
Kind of Lizard—छिपकली की एक जाति, घरेलू छिपकली।
देखें—कमेड (छिपकली)

घुण [घुण] ठा. 4/56
Wood-Worm, A Weevid—घुण
देखें—कट्ठाहार

घूय [घूक] ज्ञाता. 1/8/72 प्रश्नव्या. 3/9
Indian Great Horned Owl—उल्लू, घुग्घू
देखें—उलूक

घुल्ला [घुल्ला] प्रज्ञा. 1/49
A kind of Shell—घोंघरी, छोटा शंख।
देखें—संख और संखनग

घोडग [घोटक] सू. 2/2/22, प्रज्ञा. 1/63
Horse—घोड़ा।
देखें—अस्स (अश्व)

चउरग [चकोरक] प्रश्नव्या. 1/9
Common or Blue Legged bușTurd-Quail—विषसूचक, चलचंचु, चकोर।
आकार—बरसाती बटेर की अपेक्षा छोटा।
लक्षण—शरीर का ऊपरी भाग बादामी भूरा तथा नीचे का भाग जंग जैसा धूमिल-पीला होता है। चिबुक, कंठ और वक्ष काली धारियों से भरा होता है। मादा बड़ी और अधिक रंग-बिरंगी होती है। नीली-धूसर चोंच, पीले पैर तथा सफेद आंखें इसके विशिष्ट लक्षण हैं।
विवरण—विश्व में इसकी लगभग 8 प्रजातियां पाई जाती हैं। मादा अन्य मादाओं को डुराने-धमकाने तथा नर को अपनी उपस्थिति की सूचना देने के लिए ढोल जैसी भारी डर-र-र-र-र की आवाज निकालती है। प्राचीन कहावत के अनुसार चकोर एक पहाड़ी तीतर है, जिसको चंद्र प्रिय है तथा अंगारे खाने के लिए प्रसिद्ध है। वर्तमान प्राणी शास्त्रियों के अनुसार अंगारे खाने की कहावत सत्य नहीं है।

चंदण [चंदन] प्रज्ञा. 1/49 उत्त. 36/129
Chandana—चंदनिया, अक्ष।
आकार—3-4 इंच लम्बा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लक्षण—शरीर का रंग हल्का लाल।
विवरण—पानी एवं जमीन पर रहने वाला यह कीट केंचुए के समान प्रतीत होता है। कभी-कभी रुद्राक्ष एवं बेहड़ा के वृक्षों पर भी नजर आता है। जन साधारण भाषा में इसको चंदनिया, अक्ष के नाम से जानते हैं। [विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—जीव टी. पृ. 31, जीव विचार वृत्ति, जीव विचार प्रकरण]

चकोर [चकोर] प्रश्नव्या. 1/9
Common or Blue Legged Busturd Quail—गुन्द्रा, गूलु, चकोर देखें—चउरग

चक्कलड़ा [चक्कलड़ा] चक्कवुंडा [चक्कवुंडा] चक्कुलेंडा [चक्कुलेंडा] आव.टी.प. 163 आव. म.टी.प. 467
Jones Saind Boya—जोंस सैण्ड बोआ, दुमुंही-सर्प, राजसर्प, श्रेष्ठ सर्प, तेलिया सर्प, सेवी पम्बू (तमिल), वला (मराठी), अनसप (गुजराती)।

आकार—छोटा, मोटा एवं मांसल बनावट वाला सर्प।
लक्षण—शरीर का रंग चॉकलेटी भूरा, जबकि बच्चों का रंग अधिक ललाई लिए होता है। पीठ पर काले पट्टे पाए जाते हैं। आंखें छोटी, पूंछ मोटी एवं भौंही (इंडी) होती हैं। सारे शरीर की मोटाई लगभग समान होने के कारण दो मुंह वाला सर्प प्रतीत होता है।
विवरण—भारत में इसकी तीन प्रजातियां पाई जाती हैं। यह एक मी. तक लम्बा एवं एक K.G. तक हो सकता है। वैज्ञानिक भाषा में इसे 'ऐरिक्स जोइनाई' कहते हैं। स्थानीय भाषा में इसे दुमुंही, दुंबी, धनराई, आंधवोगा आदि कहते हैं। इसका नाम दुमुंही होते हुए भी यह एक मुंह वाला होता है। मादा अंडे न देकर बच्चे देती है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—रेंगने वाले जीव, जानवरों की दुनिया]

चक्काग, चक्कवाग [चक्रवाक] ज्ञाता. 1/9/20, 30 प्रश्नव्या. 1/9 प्रज्ञा. 1/48 सूर्य 5/5
The Ruddy Sheldrake, Brahminy duck—चकवा, चकवी, सुर्खाव, चक्रवाक।

आकार—पालतू बत्तख से बड़ा।
लक्षण—शरीर का रंग नारंगी भूरा। सिर और ग्रीवा का रंग कुछ फीका। कभी-कभी ग्रीवा के नीचे हल्का काला कालर भी होता है। इसके पंख काले, सफेद तथा चमकीले हरे होते हैं।
विवरण—भारत, लंका, बर्मा में पाया जाने वाला यह पक्षी पानी के बजाय अधिकतर पंक-मैदानों में और बलुवा तटों पर सर्दियों के दिनों में झुंड के साथ देखा जाता है। पानी के किनारे राजहंस की भांति विहरण करता है।

चडग [चटक] सू. 2/2/6
House Sparrow—चिड़िया, गृह चटक, गौरेया। देखें—अड़

चमर [चमर] प्रश्नव्या. 1/6 प्रज्ञा. 1/64
A kind of Ox called yak—चवरी गाय (याक)
आकार—गाय की अपेक्षा कुछ बड़ा।
लक्षण—इसका शरीर नीचे लटका हुआ, सिर झुका

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हुआ तथा पैर छोटे होते हैं। पूरे शरीर पर खुरदरे, लंबे, काले-भूरे बाल होते हैं। मादा छोटे सींगों वाली तथा आकार में छोटी होती है।

विवरण—तिब्बत, लद्दाख और उत्तरी कुमाऊ की पहाड़ियों में पाया जाने वाला यह प्राणी 816 K.G. तक हो सकता है। इसमें हिमालय के बर्फीले क्षेत्र तथा ठंडी जलवायु में रहने की क्षमता होती है। याक घास और झाड़ियां खाता है तथा मुंह या खुरों से बर्फ हटाकर घास ढूंढ लेता है। यदि पानी नहीं मिलता है तो बर्फ खा लेता है। यह पहाड़ियों पर आसानी से चढ़ सकता है और बर्फीली नदियों को तैर कर पार कर सकता है। इसके बाल के चवर आदि बनाए जाते हैं।

चम्मटिट्ठल [चर्मस्थिल] प्रश्नव्या. 1/9

A Bat—चमगादड़ देखें—अडिल

चास [चाष] प्रज्ञा. 1/79, 17/124 उत्त. 34/5

ROLLER, Blue Jay—नीलकंठ, सबजक, चाष, पाला पित्ता (तेलुगू) पालकुर्वी (तमिल)।

आकार—कबूतर से कुछ छोटा और लंबोतरा पक्षी।

लक्षण—बहु चटक रंग वाला। सिर का भाग बड़ा। चोंच काली और भारी। पूंछ नीली-पीली। पंखों पर हरे नीले, फिरोजी रंग की झलक।

विवरण—भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश आदि में पाए जाने वाले चाष पक्षियों की तीन प्रजातियां हैं। नर्मदा नदी के दक्षिण में इसे मराठी में चाशा, तेलुगू में पाल पित्ता और तमिल में पाल कुर्वी कहते हैं। दुनिया भर के प्राणी शास्त्री इसे कारेसिअस बेंगाकेसिस नाम से

जानते हैं।

यह खेतों वाले खुले प्रदेशों और कम घने पर्णपाती जंगलों में अकेले या झुंड के साथ रहना पसंद करता है। भारी स्वर में किट्-किट् काएं-काएं की सी आवाज करता है। मनोरंजन के समय कलाबाजियां खाना, गोता लगाना, कर्कश स्वर में चिल्लाना इसका विशेष स्वभाव है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—भारत के पक्षी, कैयदेवनिघंटु पृ. 466]

चिड़ग, चिडिग [चटक] प्रश्नव्या. 1/9 प्रज्ञा. 1/79

Indian Pipit—रुगेल, चरचरी, चिड़िया।

आकार—गौरेया के समान।

लक्षण—शरीर के ऊपर का रंग गहरा-हरा। नीचे का रंग पीला-गेहुआं। वक्ष में भूरे रंग की धारियां तथा चोंच बहुत नाजुक।

विवरण—विश्व भर में इसकी अनेक प्रजातियां पायी जाती हैं। हल चलाए गए या कटे हुए खेतों में, चरागाह या घासवाली पथरीली भूमि में रहना पसंद करता है। 'वेगटेल' पक्षी की भांति लहरदार तरीके से उड़ता हुआ पाईपिट, पाईपिट या टसीप-टसीप ध्वनि करता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave-Indian Pipit]

चित्तचिल्लय [चित्तचिल्लड] आ. चू. 3/59, 1/52

Panther—तेंदुआ, गूलदार, चित्तचिल्ल।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आकार—सिंह और बाघ से कुछ छोटा।
लक्षण—भारतीय तेंदुए के शरीर की त्वचा सुंदर,

मुलायम पीली या भूरे रंग की होती है, जिस पर छोटे छोटे धब्बे होते हैं। काले तेंदुए का शरीर काला होता है। तेंदुआ वृक्ष पर आसानी से चढ़ सकता है।
विवरण—भारत, अफ्रीका आदि देशों में पाया जाने वाला यह प्राणी स्तनधारियों में सबसे फुर्तीला, काफी निडर तथा तंग किए जाने पर या घिर जाने पर भयंकर युद्ध करता है। यह प्रायः पेड़ या पानी वाले स्थानों के पास चट्टानी झाड़ियों में रहना पसंद करता है। शिकार पर अचानक आक्रमण करके उसे मार गिराता है। यदि शिकार इतना बड़ा होता है कि एक समय में पूरा न खाया जा सके तो शिकार (लाश) के अवशिष्ट भाग को पेड़ पर घसीट ले जाता है और किसी शाखा से बांध देता है, ताकि दूसरा जानवर उसे न खा सके।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—भारत के संकटग्रस्त वन्य-प्राणी, Nature, सचित्र विश्व कोश, जानवरों की दुनिया]

चित्तपक्ख [चित्रपक्ष] प्रज्ञा. 1/51
Moth of Spotted Wings—चित्तिदार पंख वाला पतंगा।
देखें—पतंग

चित्तपत्त [चित्रपत्रक] उत्त. 1/148
Butterfly of Spotted wings—चित्तिदार पंख वाली तितली। देखें—किण्हपत्त

चित्तलणा [चित्रलक] प्रज्ञा. 1/66, जम्बू. 2/136
White Spotted Antelope—चीतल (हिरण की एक जाति)
आकार—सामान्य मृग की भांति।
लक्षण—शरीर का ऊपरी रंग भूरा-पीला धब्बे युक्त तथा नीचे का रंग सफेद होता है। मादा के सींग नहीं होते।
विवरण—भारत के अनेक स्थानों पर पाया जाने वाला यह प्राणी मृग जाति में सबसे अधिक सीधे स्वभाव का है। पालतू चीतल बाजारों, गलियों में घूमते हुए नजर आते हैं।
द्रष्टव्य—राजस्थानी शब्द कोश

चित्तलि [चित्रल, चित्रलन्] प्रज्ञा. 1/71
A kind of Cobra—नाग की एक जाति, चित्रल, चित्तलि।
देखें—नाग
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—जानवरों की दुनिया, Common Indian Snake, Indian Reptiles]

चिल्ललक [चिल्ललक] प्रश्नव्या. 1/6 प्रज्ञा. 1/89, दसा. 7/24
Cheetah—चीता।
आकार—सिंह और तेंदुआ से बड़ा।
लक्षण—शरीर के ऊपर का रंग लाली लिए हुए पीला

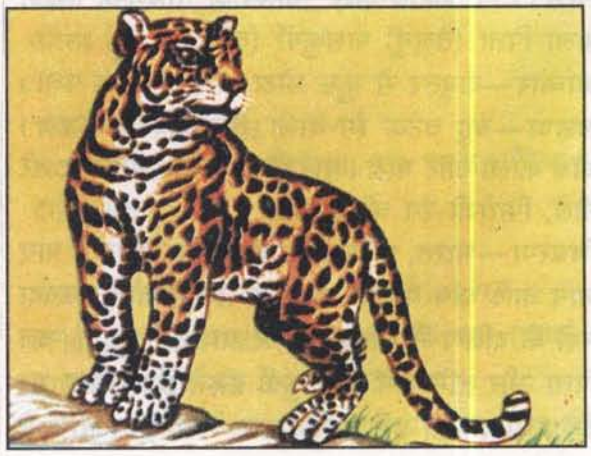

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धब्बेदार होता है। पूंछ पर काले घेरे होते हैं। पैर लम्बे तथा सिर का भाग छोटा होता है।

विवरण—सभी प्राणियों में तेज दौड़ने वाला यह प्राणी भारत, अफ्रीका आदि के घने जंगलों में पाया जाता है। यह कुशल शिकारी एवं अच्छा तैराक भी होता है। शिकार पर बड़ी चतुराई से छलांग लगाकर हमला करता है। यह 30-40 फीट तक छलांग आसानी से लगा सकता है।

चोर [चोर] ठाणं 1/3/15 भग. 9/150/71

Ratel—चोरा, रेटेल

आकार—भालू से काफी छोटा।

लक्षण—शरीर पर घने बाल होते हैं, जिनका रंग हल्का भूरा तथा सफेद नीला होता है। पीठ का रंग निचले भाग के रंग से कुछ हल्का। पंजों के नाखून काफी बड़े होते हैं जिनकी सहायता से यह पेड़ पर आसानी से चढ़ सकता है।

विवरण—शहद खाने का शौकीन यह प्राणी अफ्रीका व भारत में पाया जाता है। घने बालों के कारण मधुमक्खियां डंक नहीं मार पातीं। दिन में अपनी मांद में सोता है और रात को शहद की तलाश में निकलता है। शहद के अलावा यह चूहों तथा अन्य छोटे-मोटे जानवरों को भी पकड़कर खा जाता है। यह इतना शक्तिशाली होता है कि धातु की दीवारों वाले कटघरों को छोड़कर अन्य कटघरों को आसानी से तोड़ सकता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—हरियाणवी शब्द कोश, सचित्र-विश्व कोश, Nature, Incyclopedia in Colour]

छगल [छगल] प्रश्नव्या. 1/6

Goat—बकरा/बकरी।

देखें—अय (अज)

छप्पय [षट्पद] जम्बू. 2/12

Louse—जूं, छप्पय

देखें—जूया

छप्पय [षट्पद] जम्बू. 2/12

A Black bee—भंवरा

आकार—लगभग गोबरैला के समान।

लक्षण—छह टांगों वाला काले रंग का कीट, जो फूलों तथा वृक्षों पर गुंजन करता रहता है।

विवरण—भंवरा बीटल [Beetle] गण का सदस्य है। इसके शरीर पर काला चमकीला कवच होता है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह किसी एक फूल या एक वृक्ष पर ही आश्रित नहीं होता। अपना भोजन अनेक फूलों व वृक्षों से ग्रहण करता है। इसके काटने से कई बार शरीर पर सूजन आ जाती है।

छणविच्छुय [छनगवृश्चिक] प्रज्ञा. 1/51

Scorpion of dung—गोबर का बिच्छु

विवरण—ये बिच्छु पुराने गोबर के ढेर आदि में पैदा होते हैं। इनका आकार सामान्य बिच्छु से छोटा होता है।

पूर्ण विवरण के लिए द्रष्टव्य—विच्छुत व जलबिच्छु

छीरल [क्षीरल] प्रश्नव्या. 1/8

Snake-Skink—नागर बामणी, सांप की बामणी, बामणी, क्षीरल (उ.प्र.)।

आकार—छिपकली से काफी पतली एवं लंबी।

लक्षण—शरीर कुछ चपटा तथा पैर पूर्ण विकसित होते

हैं। थूथन से मलद्वार तक की लम्बाई 85 M.M. तक हो सकती है। पूंछ की लम्बाई मुख्य शरीर से कुछ ज्यादा होती है। निचली पलकों पर आर-पार देखने के लिए पारदर्शक खिड़की होती है। प्रौढ़ का रंग भूरा तथा शरीर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

के प्रत्येक चकते के आधार वाले भाग में एक काला धब्बा होता है। बच्चों के पूंछ का रंग लाल होता है। जैसे-जैसे अवस्था बढ़ती है वैसे-वैसे ललाई कम होती जाती है।

विवरण—इनकी विश्व में 600 प्रजातियां पाई जाती हैं, उनमें एक हैं—स्नेक स्किंक। वैज्ञानिक भाषा में इसे रिओपा पंकटाटा कहते हैं। यह एक निरापद एवं सरल स्वभाव का प्राणी है। इसे हाथ से पकड़ा जा सकता है।

प्रश्नव्या. टीका में इसे कांटों वाला प्राणी माना है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Indian Reptiles, Nature]

छीरविरालिया [क्षीरविडालिका] भग. 7/66, 23/1 प्रज्ञा. 1/76

Skunki civet cat, Weasel—गंध विलाव, स्कंक।

आकार—बिल्ली के तुल्य।

लक्षण—मुखाकृति नकुल के समान एवं पूंछ लम्बी। शरीर का रंग काला-सफेद।

विवरण—नई दुनिया और मध्य अमेरिका से सं.रा. अमेरिका तक पाया जाने वाला यह प्राणी अपने दुश्मन को धमकाने के लिए जमीन पर पैर पटकता है, फुफकारता है और दुम ऊपर उठा लेता है, यदि दुश्मन फिर भी नहीं डरता तो स्कंक तरल दुर्गन्ध की पिचकारी मारता है। चित्तिदार स्कंक या गंध विलाव जो स्कंक में सबसे छोटा होता है, अपने दुश्मन को भगाने के लिए अगली टांगों से खड़ा होकर शरीर के पिछले हिस्से को उठा लेता है और आगे की ओर झुकी हुई सफेद दुम को लहराता है। स्कंक की इस विचित्र मुद्रा को देखकर दुश्मन डर कर भाग जाता है।

विमर्शः कैयदेवनिघंटु, पृ. 452 में मार्जार के छह भेदों में एक भेद है—सुगंधित वृषण। बहुत संभव है, छीरविरालिया शब्द भी इसी का ही पर्यायवाची होना चाहिए।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Nature; Incyclapedia in colour, विश्व के विचित्र जीव जंतु]

छुंदिका [छुंदिका] अंवि पृ. 69

Moles, Shrewls—छछुंदरी

आकार—चूहे के समान, किन्तु लम्बा।

लक्षण—शरीर का रंग काले से लेकर सफेद तक। लम्बाई 2 इंच से 6-7 इंच तक।

विवरण—इनकी तारामुखी, रोमिपुच्छी, रेगिस्तानी आदि अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। छछुंदर आमतौर से भूमि के अन्दर रहते हैं। दिन में चट्टानों की दरारों, शहतीरों और पत्तियों में छुपे रहते हैं और अंधेरा पड़ने पर शिकार की तलाश में निकलते हैं।

यह अपने वजन के बराबर प्रतिदिन आहार करता है। मादा अपने वजन से 2-3 गुणा आहार करती है। कुछ छछुंदरों के अगले पैर फावड़े का काम करते हैं। उनके तीखे पंजे भी खोदने के किसी औजार से कम नहीं होते। रात भर में छछूंदर सौ गज लम्बा बिल खोद सकता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ये बड़े खूंखार होते हैं। कभी-कभी ये एक दूसरों को मार डालते हैं।

छेलिय [छेलिय] जम्बू. 3/31
Lamb—छोटी बकरी देखें—अय (अज)

जंबुय [जंबुक] प्रश्नव्या. 3/9
Jeckal—सियार, गीदड़। देखें—कोल्लग

जमग [जमक] जीव. टी. पृ. 286
Black Winged Kite—शकुनि, कपासी, मसुनवा, कृष्णपक्ष चील, जमग।
आकार—जंगली कौआ से बड़ा।
लक्षण—एक नाजुक मिजाज बाज, जो ऊपर से राख जैसा धूसर तथा नीचे से सफेद होता है। आंखों के ऊपर काली धारी और कंधों पर काले धब्बे होते हैं।
विवरण—भारत, लंका आदि देशों में पाया जाने वाला यह पक्षी घने जंगलों और सूखे मैदानों में रहना पसंद नहीं करता। शिकार को पकड़ने के लिए अपने अचल पंखों को शरीर से ऊपर उठाए हुए धीरे-धीरे नीचे उतरता है। जमीन से कुछ दूर पहले पंख बंद कर शिकार पर गिरकर पंजों से पकड़ लेता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave-Black Winged Kite]

जरग्गव [जरद्गव] सू. 1/3/38 अणु. 3/36
Old Ox—बूढ़ा बैल देखें—आवल्ल

जरुल [जरुल] प्रज्ञा. 1/51
Beetle of Tree—वृक्ष का भृंग, जरुल, कृमिकोश।
आकार—तितली से कुछ छोटा।
लक्षण—यह वृक्षों के पत्तों को खाकर अपना जीवन यापन करता है। शरीर का रंग हल्का-काला जिसमें कहीं-कहीं लाल धब्बे होते हैं।
विवरण—विशेष रूप से जरुल और शहतूत के वृक्षों पर पाई जाने वाली मादा कीट पत्तों पर अंडे देती है। अंडे क्रमशः लार्वा, प्यूपा की अवस्थाओं से गुजर कर तितली के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—फसल पीड़क कीट, Incyclopedia in Colour, जानवरों की दुनिया]

जलकारि [जलकारिन्] प्रश्नव्या. 1/10 उत्त. 36/148
Lobster, Crab—केकड़ा, जलकारि, जलचरा (उ.प्र.)
आकार—शरीर का आकार गोल, चपटा, लम्बा अनेक प्रकार का।
लक्षण—एक फीट तक की लम्बाई वाले इस प्राणी का

शरीर कई भागों में विभक्त होता है। अपने पांच जोड़े पैरों में से चार को यह चलने के काम में लाता है। अगले जोड़े जो कि चिमटे के समान होते हैं, उनसे शिकार पकड़ता है। केकड़े की आंख एक बाहर निकले हिस्से पर होती है, जिससे ये किसी भी दिशा में देख सकते हैं।
विवरण—केकड़ों की अनेक प्रजातियां हैं, जो अधिकांशतः समुद्रों एवं उनके किनारों पर पाई जाती हैं। आंखों की अपेक्षा इनमें सूंघने व स्पर्श करने की शक्ति ज्यादा होती है। यह जीवित व मृत दोनों प्रकार के कीटों को खाता है। हरमिट नामक केकड़ा अपनी रक्षा के लिए घोंघे अथवा शंख के खाली घर में घुस जाता है। इसी घर को लादे वह सौ मील से भी अधिक की दूरी तय कर लेता है। यह अपने वजन से दस-बारह गुणा वजन लादे आसानी से घूम फिर सकता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Nature, Incyclopedia in colour, जानवरों की दुनिया]

जलचारिय [जलचारिक] प्रश्नव्या. 1/10
Crab, Lobster—केकड़ा
देखें—जलकारि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जलविच्छुय [जलवृश्चिक] प्रज्ञा. 1/51
Scorpion of Water—जल का विच्छु।

आकार—सामान्य बिच्छु से छोटा।
लक्षण—इसकी आगे की टांगें कुछ मोटी पंजे के समान होती है।
विवरण—पानी में पाये जाने वाले इस बिच्छु की पूंछ एक नली के समान होती है जिसके द्वारा पानी में रहते हुए भी यह सांस लेता रहता है। यह पानी में पड़ी पत्तियों के समान प्रतीत होता है।
शेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—बिच्छुत

जलोउया [जलोत्तुक] प्रज्ञा. 1/49
A kind of Leech—जलोयुक (जलायुष्क), जौंक की एक जाति। देखें—जलोय (जौंक)

जलोय-जलूग [जलौक] उत्त. 36/129 भ. 13/153 अणु. 3/46 प्रज्ञा. 1/49
Leech—जौंक
आकार—केंचुए की जाति के प्राणी, जो आकार में केंचुए से छोटे एवं मोटे होते हैं।
लक्षण—सामान्य तौर पर देखने से शरीर में कई छल्ले नजर आते हैं।
विवरण—अधिकांशतः पानी में रहते हैं। शरीर के एक सिरे पर खून चूसने के लिए मुख होता है। मछलियों व अन्य कीटों पर चिपक कर उनका खून चूसते हैं। समुद्रों, नदियों, झीलों आदि में इनकी पचासों प्रजातियां पाई जाती हैं।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—सचित्र विश्व कोश, Incyclopedia in colour, जानवरों की दुनिया]

जलोय [जलौक] प्रज्ञा. 1/78, 49 भग. 13/153 उत्त. 36/129
Alpine Swift—बड़ी बतासी, जलौक।
आकार—बुलबुल से कुछ बड़ा।
लक्षण—शरीर का रंग ऊपर से गहरा भूरा, नीचे से सफेद। वक्ष के आर-पार एक गहरी भूरी पट्टी तथा दुम छोटी एवं चौकोर। पंख बहुत लम्बे, नोकीले तथा धनुष जैसे होते हैं।
विवरण—विश्व भर में इसकी 4 प्रजातियां पाई जाती हैं। काफी तेज तथा काफी देर तक उड़ने वाला यह चर्म पक्षी 130 से 150 K.M. प्रति घंटे की रफ्तार से उड़ सकता है। टीलों तथा गुफाओं के बाहर की ओर निकली चट्टानों की दरारों में लार द्वारा चिपकाए पंख, तिनकों आदि की गिद्दी सी बनाकर मादा अंडे देती है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 166]

जालग [जालक] उत्त. 36/129
A kind of Worm—जालक, कीट की एक जाति।
देखें—कृमि।

जालग [जालक] प्रश्नव्या. 1/18 उत्त. 36/129
Spider—मकड़ी देखें—उक्कल

जाहक [जाहक] सू. 2/3/80 प्रश्नव्या. 1/8
Hedgehog—जाहक, झाऊ चूहा, कांटों वाला चूहा।
आकार—सेही से काफी छोटा।
लक्षण—सेही की भांति शरीर पर काले सफेद रंग के कांटे होते हैं। कांटों के नीचे मोटे-मोटे बाल होते हैं। घ्राणेन्द्रिय तीव्र और दृष्टि निर्बल होती है।
विवरण—भारत (नील गीरि पर्वत एवं पंजाब, राजस्थान आदि मैदानी भाग) यूरोप, चीन और एशिया में इनकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। इनके शरीर की लम्बाई 8-9 इंच, टांगें छोटी, आंखें भी छोटी होती हैं। शरद ऋतु में अपने बिलों में सोते रहते हैं।
चूहों को पकड़ने में यह बिल्ली से भी दक्ष होता है। सांप इसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। यह सांप को आसानी से खा जाता है। अपनी रक्षा के लिए Hedgehod गेंद की तरह गोल होकर, कांटों को खड़ा कर अपने कोमल अंगों को पेट के नीचे छिपा लेता है। भारत में इसे जाहक, झाऊ चूहा, कांटों वाला चूहा आदि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाम से जाना जाता है।

विमर्श : राजनिघंटु पृ. 601 में जाहक को कृष्ण गिरगिट का पर्याय तथा कैयदेवनिघंटु पृ. 461 में सर्प आदि का पर्यायवाची माना है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Nature, Man and animals, सचित्र विश्व कोश]

जीवंजीव [जीवंजीव] प्रज्ञा. 1/78 जम्बू. 2/12

Common or Blue legged bustard Quail—गुद्रा, गूलु, चकोर, विषदर्शन, जीवंजीव।

देखें—चउरग (चकोर)

जुगमच्छ [युगमत्स्य] प्रज्ञा. 1/56

A kind of fish—मछली की एक जाति।

देखें—झस

जुवंगव [युवंगव] आ.चू. 4/28

Young Ox—तरुण बैल देखें—आवल्ल

जूया [यूका] प्रज्ञा. 1/50

Louse—जूं

आकार—यह पिस्सू आदि की श्रेणी का बहुत छोटा प्राणी है।

लक्षण—छः टांगों वाला बिना पंख का कीट। इसके मुख पर कांटे या चिमटे के समान अंग होता है जिससे यह खून चूसता है।

विवरण—ये परजीवी हैं अर्थात, परिपक्व अवस्था में गाय, भेड़, कुत्ते, मानव आदि के बालों में निवास करते हैं तथा उनके शरीर का खून चूसते हैं। इनके अण्डों को लीख कहा जाता है। ये कई बीमारी फैलाने में सहायक होते हैं। इनकी कई जातियां पाई जाती हैं।

झस [झस] प्रश्नव्या. 1/5

Fish—मछली, मत्स्य

आकार—लंबी, गोल, चपटी, बेलनाकार आदि अनेक प्रकार की।

लक्षण—मछलियों का शरीर तीन भागों में विभक्त होता है—सिर, धड़ और दुम। शरीर के ऊपर, नीचे,

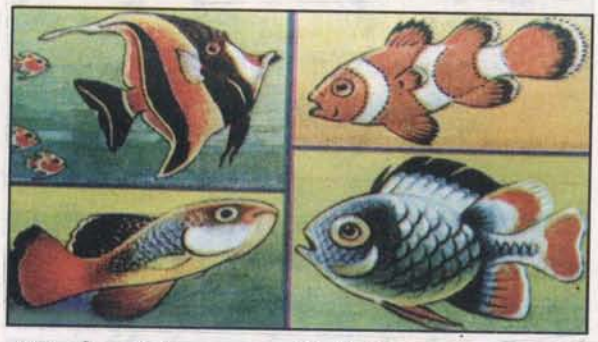

पीछे और दोनों बगल पखनियों के आकार के सुफने रहते हैं, जिन्हें पखनियां भी कहते हैं। ये सुफने ही मछलियों के हाथ पैर हैं और उन्हीं के सहारे ये इधर-उधर फिरती और अपना संतुलन कायम रखती हैं। ये मुंह द्वारा पानी खींचकर उसे अपने गले के दोनों ओर के गलफड़ों से बाहर निकालती हैं तो गलफड़ों की तहों की रक्त शिराएं पानी में घुली हुई प्राण वायु को सोख लेती हैं।

विवरण—मछलियों की लगभग विश्व भर में 15000 प्रजातियां पाई जाती हैं। मछलियों में सबसे बड़ी ह्वेल मछली है जिसकी लम्बाई 50 फुट तक होती है। मछलियों का वजन 100 ग्राम से 150 टन तक हो सकता है। प्रवाल द्वीप के आस-पास की कुछ मछलियां अत्यधिक रंगीन व सुन्दर होती हैं। अधिकांश मछलियां अंडे देती हैं। कुछ मछलियां तो ऐसी हैं जो 8 से 10 लाख तक अंडे देती हैं।

झिंगिरा [झिंगिरा] प्रज्ञा. 1/50 [पा.]

Cricket—झिंगुर

आकार—टिड्डे के समान।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लक्षण—शरीर का रंग कत्थई-भूरा। इनकी लम्बी टांगें फुदकने में सहायता करती हैं। सिर पर लम्बे एंटीना निकले होते हैं।

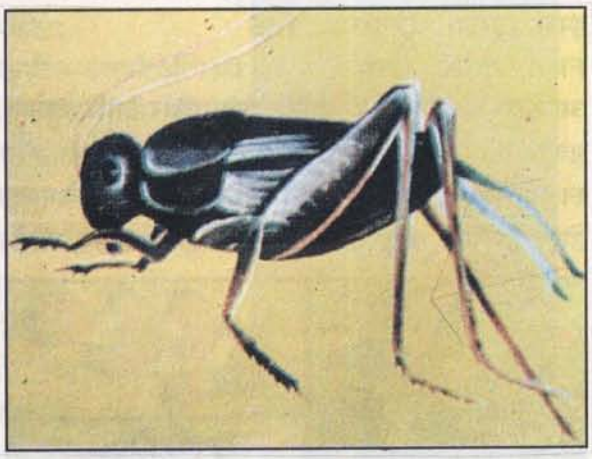

विवरण—900 प्रकार की विभिन्न प्रजातियां पाई जाती हैं। नर अपने शरीर से रगड़ पैदा कर के आवाज उत्पन्न करता है। बैठने पर अपने पंखों को समेट लेता है। यह अपनी पीठ पर लगे हुए भूरे चौड़े पंखनुमा लाउडस्पीकर की मदद से तेज आवाज निकालता है। ये पंख लाउडस्पीकर के अलावा उड़ने वाले पंखों और वाद्य यंत्रों का भी काम देते हैं। झींगुर को प्रकृति का सर्वोत्तम थर्मामीटर कहा जा सकता है। इसके गले से बजने वाली घंटी के आधार पर कई लोग तापमान का पता लगाते हैं।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Nature, सचित्र विश्व कोश, समानान्तर शब्द कोश, राजस्थानी शब्द कोश Incyclopedia in colour]

झिंगिरिडा [झिंगिरिडा] प्रज्ञा. 1/50 [पा.]

Cricket—झिंगुर देखें—झिंगिर।

झिल्लिया [झिल्लिका] प्रज्ञा. 1/50

Cricket—झिंगुर देखें—झिंगिरा।

टिट्टिभी [टिट्टिभी] विपा. 1/3/20

Plover—टिटहरी, टिटीरी, टिटूरी, जिर्रिआ मिरवा, छोटा वाटन।

आकार—तीतर से कुछ बड़ा।

लक्षण—प्रायः शरीर का रंग कांस्य भूरा या वलुई-भूरा होता है। पैर लम्बे एवं पतले होते हैं। उड़ते समय काले पंखों में एक सफेद पट्टी चमकती है।

विवरण—भारत में इसकी लगभग छः प्रजातियां पाई जाती हैं। जैसे—रक्तवैटल टिट्टिभ, पीतवैटल टिट्टिभ, लघु वलयित टिटहरी आदि। कई टिटहरियों की चोंच कबूतर जैसी भी होती हैं। उड़ते समय यह पक्षी बहुत सतर्क रहता है।

यह रात को पैर ऊपर करके सोता है तथा अपने अंडों को सूर्य की गर्मी से बचाए रखने के लिए उन पर पानी डालता रहता है। खतरे के समय या उड़ते समय दो अक्षर वाली टी-ई के बीच-बीच में यदा-कदा कुछ ऊंचे स्वर वाली ट्विट, ट्विट, ट्विट जैसी ध्वनि करता है।

डंस [दंश] जम्बू. 2/40

A kind of Large Sized Mosaquito—डांस

आकार—लगभग .01 मि.मी. से 1 इंच तक लम्बा।

लक्षण—तीन भागों में विभक्त शरीर। मुख के आगे एक डंक नुमा अंग होता है, जिससे यह खून चूसता है।

विवरण—विश्व में इनकी हजारों प्रजातियां पाई जाती हैं। ये दिन-रात अपने शिकार के लिए घूमते हैं। इनकी अधिकतर प्रजातियां खून चूसने वाली एवं मांस खाने वाली होती हैं। इनके काटने से कई बार शरीर में दाफड़ भी हो जाते हैं।

डोल [डोल] उत्त. 36/147

Locust—टिड्डी, फड़का, विट्टिल (तमिल), मिद्था

(तेलुगू), रिड (सिंधी, पंजाबी), पुल मोडु (मलयालम), झिटिका (उड़िया), जिट्टी (कन्नड़), नाकतोड़ (मराठी)।

आकार—लगभग 2 इंच से 5 इंच की लम्बाई वाला।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रंग-बिरंगा जंतु।

लक्षण—दो भागों में विभक्त शरीर तथा बीच की टांगें लम्बी एवं जुड़ी हुई, सिर पर एन्टीना के समान दो छोटे सींग।

विवरण—विश्व भर में टिड्डियों की 15 जातियां तथा अनेक उपजातियां पाई जाती हैं। रेगिस्तानी टिड्डी, प्रवासी टिड्डी और बम्बई टिड्डी—ये तीनों भारत में पाई जाती हैं। इनके विशाल दल बन जाते हैं जो अकल्पनीय वृंदों में उड़ान भरते हैं और अपने जन्मस्थान से सैकड़ों-हजारों मील तक उड़कर फसलों को चौपट कर डालते हैं। तमिल में इसे 'विट्टिल', तेलुगू में मिद्था, सिंधी और पंजाबी में टिड, मलयालम में पुलपोंडु, उड़िया में सिटिका, कन्नड़ में जिट्टी, मराठी में नाकतोड़ और हिंदी में फड़का कहते हैं।

ढंक [ढंक] प्रज्ञा. 1/76, जम्बू. 2/40, 137 जीवा. 115

Jungle Crow—जंगली कौवा, डाल कौवा, द्रोण-काक, ढींकड़ा (राजस्थानी), बड़ा काक।

आकार—घरेलू कौवे से बड़ा।

लक्षण—शरीर का रंग गहरा चमकीला-काला। चोंच संड़ासी के समान मजबूत पकड़ वाली। शरीर की लम्बाई लगभग इक्कीस इंच तक होती है।

विवरण—भारत, पाकिस्तान, लंका आदि में इसकी लगभग 20 प्रजातियां पाई जाती हैं। नर-मादा में कोई विशेष अन्तर दिखाई नहीं देता। मानव बस्ती के आस-पास अकेले या जोड़ों में या अस्थाई टोलियां बनाकर रहना पसंद करते हैं।

शेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—काक

ढिंक [ढिंक] प्रश्नव्या. 1/9

Jungle Crow—जंगली कौवा, डाल कौवा,द्रोण काक, ढिंक कौआ, बड़ा काक।

देखें—ढंक

ढिंकुण [ढिंकुण] प्रज्ञा. 1/51 उत्त. 36/146

Flea—पिस्सू, ढिंकुण।

आकार—जूं के समान।

लक्षण—शरीर का रंग-काला-भूरा। छः टांगें मजबूत पकड़ वाली। कुछ के पंख होते हैं कुछ के नहीं।

विवरण—इसकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। यह भेड़, कुत्ते आदि के खून से अपना जीवन निर्वाह करता है अर्थात यह परजीवी प्राणी है। बीमारियों के फैलाने में इसका बहुत बड़ा योगदान रहता है, जैसे—प्लेग, मलेरिया आदि।

ढेलियालग [ढेलियालग] प्रश्नव्या. 1/9

Femal Common Peafown—मयूरनी, मोरनी।

देखें—बरहिण

णउल [नकुल] सू. 2/3/80 प्रज्ञा0 1/76

Mongoose—नकुल

आकार—चित्तिदार लिंगनेश (मांस) से पतला एवं छोटा।

लक्षण—शरीर का रंग कत्थई-भूरा। सिर नुकीला। आंखों का रंग लाल एवं पूंछ अपेक्षाकृत लम्बी।

विवरण—भारत में इसकी छः प्रजातियां पाई जाती हैं। बहुत फुर्तीला व तेज होने के कारण यह सांप को

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आसानी से मार देता है। दुश्मन को भगाने के लिए अपनी रक्षक ग्रंथियों से तेज गंध वाला द्रव्य छोड़ता है। बिल में रहने वाला यह प्राणी पानी में भी आसानी से तैर सकता है।

णंदीमुह [नंदीमुख] प्रज्ञा. 1/9 औ प. 6

Black beaded oriol—पीलक कृष्णशीर्ष ओरिओल, णंदीमुख।

आकार—मैना के तुल्य।

लक्षण—स्वर्ण की भांति पीला शरीर। सिर, कंठ तथा ऊपरी वक्ष बिल्कुल काला। चमकीली गुलाबी चोंच। गहरी लाल आंखें। मादा के सिर का काला रंग हल्का होता है।

विवरण-विश्वभर में इसकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। उड़ते समय बांसुरी की सी आवाज निकालता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 78]

णंदियावत्त [नन्द्यावर्त] प्रज्ञा. 1/49 जम्बू. 3/178, 4/28

A kind of Conch Shell—शंख की एक जाति।

देखें—संख और संखनग

णक्क [नक्र] प्रज्ञा. 1/56

A kind of Timfish—तिमि मत्स्य की एक जाति।

विमर्श—Apte, Williams अदि कोशों में नक्र शब्द का अर्थ मगरमच्छ, घड़ियाल किया है। किंतु प्रज्ञापना 1/56 में नक्र शब्द तिमि, तिमिंगल के अन्तर्गत आया है। अतः नक्र शब्द का अर्थ तिमि तिमिंगल मत्स्य की एक जाति होनी चाहिए। कारण कि घड़ियाल, मगरमच्छ का वर्णन प्रज्ञा. 1/55 में किया जा चुका है।

णागिंद [नागेन्द्र] आ.चू. 15/28/12

King Cobra—शेषनाग, शंखचूड।

देखें—भुयईसर

णीणिया [नीनिका] प्रज्ञा. 1/51 [पा.]

A kind of Caipsid bug—कैपसिट कीट की एक जाति।

देखें—अंधिया।

णेउर [णेउर] प्रज्ञा. 1/49 दसा. 10/12

A kind of Worm—कृमि की एक जाति, झिटिका (उड़िया) नउरा (तमिल), निरा (मलयालम)

आकार—1 मिलीमी. से कुछ इंच तक लम्बा।

लक्षण—शरीर का रंग हल्का भूरा। नवजात वृक्षों एवं पौधों के तनों में निवास करता है।

विवरण—इसकी अनेक जातियां पाई जाती हैं। यह पौधों आदि के तनों में रहकर उनका गुदा खाता है, जिससे पौधे दिन-प्रतिदिन सूखते जाते हैं। यही कीट पूर्ण वयस्क होने पर तितली का-सा रूप धारण कर लेता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—फसल पीड़क कीट, Incyclapedia in Colour]

णेउर [णेउर] प्रज्ञा. 1/51

A kind of Insect—कीट की एक जाति।

देखें—णेउर (II)

तउसमिंजिया [त्रपुषमिंजका] प्रज्ञा. 1/50 उत्त. 36/138

Tausmingiya—कटसरैया कीट, हल्दी कस्तूरी कीट, खीरा कीट।

आकार—जूं से कुछ बड़ा।

लक्षण—शरीर का रंग भूरा-सफेद। मुंह के आगे दो चिपटे नुमा अंग।

विवरण—कटसरैया, हल्दी, कस्तूरी और खीरा की बेल पर उत्पन्न होने वाला यह कीट अपने चिमटे नुमा अंग से रस पीता है। अत्यधिक मात्रा में इसका आक्रमण पौधे के लिए घातक होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—फसल पीड़क कीट, सचित्र विश्व कोश]

तंतवग [तन्तवक] उत्त. 34/148

Cockroach—तिलचट्टा।

आकार — लगभग 4-5 C.M. लम्बा कीट।

लक्षण — सामान्यतः शरीर का रंग भूरा लाल। सिर पर दो बड़ी पीछे की ओर मुडी हुई सींग जैसी मूंछें।

विवरण—इनकी लगभग 3500 प्रजातियां पाई जाती हैं, जिनमें अधिकांशतः उष्ण कटिबंध स्थानों एवं कुछ ठंडे स्थानों में पाई जाती हैं। यह एक रात्रिचर कीट है। दिन डूबते ही अपने भोजन की खोज में निकलता है। खाने-पीने के मामले में बड़ा विचित्र होता है। एक महीने तक तो यह बिना खाए-पिए रह सकता है। सिर्फ पानी ही मिल जाए तो दो माह तक बिना खाए रह सकता हैं, और अगर सूखा खाना मिल जाए तो पांच महीने तक पानी की भी चिंता नहीं करता।

सर्दी-गर्मी को सहन करने की इसमें अद्‌भुत क्षमता होती है। 48 घंटे फ्रीज में रख देने के बाद भी मरता नहीं है। इसके पैरों के जोड़ों पर काले छोटे-छोटे बाल इतने संवदेनशील होते हैं कि जरा-सी आहट सुनते ही सेकंड के 54 हज़ारवें हिस्से में वहां से खिसक जाता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Nature, Incyclopedia in Colour]

तंदुलमच्छ [तंदुलमत्स्य] प्रज्ञा. 1/56

A kind of Fish, Ricefish—तंदुलमच्छ, मत्स्य की एक जाति।

विवरण—तिमि, तिमिंगल आदि मत्स्यों के आंख के भौओं में तंदुल नामक मत्स्य रहते हैं, जिनका आकार चावल के दाने के बराबर होता है। वे अपने मन में ऐसा विचार करते हैं, यदि हमारा शरीर इन मत्स्यों के समान होता तो मुंह से एक भी प्राणी न निकल पाता, हम संपूर्ण को खा जाते। इस प्रकार के अशुभ अध्यवसाय के द्वारा मृत्यु को प्राप्त कर वे नरक में जाते हैं। शेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—तिमि।

(1) दिगम्बर परम्परा के अनुसार तंदुल नामक मत्स्य कान में रहता है।

तणविंटिय [तृणवृन्तक] प्रज्ञा. 1/50 [पा.]

A kind of Trogoderma Gramarium everts—खपराकीट की एक जाति। देखें—पुष्पविंटिय

तणाहारा [तृणाहारा] प्रज्ञा. 1/50 उत्त. 36/137

Grop Pest—तृणाहारक, पत्राहारक। देखें—पत्ताहारक

तयाविस [त्वचाविष] प्रज्ञा. 1/70

A kind of Cobra—त्वचाविष (चमड़ी में विष वाले) देखें—नाग

तरच्छ [तरक्ष] प्रश्नव्या. 1/6 आ.चू. 1/52 भग. 03/209 ज्ञाता 1/1/178

Hyena—लकड़बग्घा।

आकार—कुत्ते से बड़ा।

लक्षण—शरीर का रंग चितकबरा। अगली टांगें पिछली टांगों से कुछ बड़ी। इसके पंजे और जबड़े इतने मजबूत होते हैं कि बड़े से बड़े बैल की हड्डियों को तोड़कर चबा डालता है।

विवरण—यह भारत, अफ्रीका और एशिया के पश्चिम भागों में पाया जाता है। ताकतवर और बड़ा जानवर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होते हुए भी डरपोक होता है। इसलिए यह प्रायः दूसरे जानवरों द्वारा शिकार किए गए जानवरों के बचे-खुचे भाग को खाता है। चितकबरे लकड़बग्घे को चिंघाड़ने वाला लकड़बग्घा भी कहते हैं। क्योंकि भोजन पाने पर यह एक प्रकार की भयानक आवाज करता है।

विमर्श : राजनिघंटु पृ. 563 में तरक्ष शब्द का अर्थ लकड़बग्घा तथा कैवदेवनिघंटु पृ. 442 में तेंदुआ, बाघ और पृ. 451 में भेड़िए का पर्यायवाची माना है।

तिड्ड, तिड्डय [तिड्ड, तिड्डय] वृ. टी. पृ. 675 अनु. टी. पृ. 4

Locust—टिड्डी देखें—डोल

तित्तिर [तितिरि] सू. 2/2/6, 20 प्रश्नव्या. 1/9 उवा. 7/50

Common Sandgrouse—भट तीतर, तीतर

आकार—कबूतर के समान।

लक्षण—शरीर का रंग पीलापन लिए हुए। वक्ष में एक पतली काली आड़ी रेखा। मादा के पूरे शरीर में काले धब्बे तथा चित्तियां होती हैं। पूंछ छोटी एवं नुकीली।

विवरण—असम को छोड़कर पूरे भारत में पाया जाने वाला यह पक्षी 10-12 पक्षियों के झुंड में रहना पसन्द करता है। उड़ते समय दो स्वर वाली कुट-रो जैसी बोली द्वारा पहचाना जाता है।

तत्तिर [तित्तिरि] सू. 2/2/6 ज्ञाता. 1/17/36 उवा. 7/50 प्रश्नव्या. 1/9

Grey Partridge—तीतर, धूसर तीतर।

आकार—कबूतर से कुछ बड़ा रोम पक्षी।

लक्षण—पंखों का रंग पीला-सफेद तथा पीला-लाल। काले रंग की धारियां होती हैं। पूंछ छोटी एवं धूसर रंग की।

विवरण—असम को छोड़कर भारत के शुष्क स्थानों पर पाया जाने वाला यह पक्षी भागने में काफी तेज होता है। पीछा करने पर उड़ते समय कतीइतर-कतीइतर या पतीइला-पतीइला जैसी ध्वनि करता है।

तिंदुग [तिन्दुक] उत्त. 36/138

Beetle of Ebony tree—तेंदु के फल का भृंग

आकार—मक्खी से कुछ बड़ा।

लक्षण—शरीर का रंग हल्का भूरा।

विवरण—यह तेंदु नामक फल के ऊपर रहने वाला कीट है। फल के अन्दर छेद कर फल को नष्ट कर देता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—फसल पीड़क कीट, सचित्र विश्व कोश]

तिमि [तिमि] प्रज्ञा. 1/56

A Kind of Fish, Timifish—तिमि मत्स्य, वज्राभ, कुलिश।

विवरण—तिमि-तिमिंगल आदि मत्स्य स्वयंभू समुद्र में रहते हैं। शरीर की लम्बाई 1000 योजन की होती है। ये छह मास तक अपना मुंह खोलकर नींद लेते हैं। नींद खुलने के बाद आहार में लुब्ध होकर अपना मुंह बंद कर लेते हैं, तब उनके मुंह में जो मत्स्य आदि प्राणी आते हैं, उनको वे निगल जाते हैं। विज्ञान ने अभी तक जितने प्राणी की खोज की है, उन सबकी लम्बाई-मोटाई तिमि, तिमिंगिल आदि मत्स्यों से अत्यन्त कम है, जो कि वैज्ञानिकों के लिए एक खोज का विषय है। (जिनेन्द्र कोश-भाग-4 पृ. 129)

विमर्श : कैयदेवनिघंटु में तिमि को सौ योजन विस्तृत कहा है।

तिमिंगल [तिमिंगल] प्रज्ञा. 1/56

Timingal Fish—तिमिंगल मत्स्य देखें—तिमि

तिल्लहटिका [तिल्लहटिका] नंदी टी. पृ. 133

Squirrel—गिलहरी देखें—कमेड (गिलहरी)

तुरग [तुरग] आ.चू. 15/28 भग. 11/138 ज्ञाता. 1/16/283 प्रश्नव्या. 3/5

Horse—घोड़ा देखें—अस्स (अश्व)

तेदुरणमज्जिया [तेदुरणमज्जिया] प्रज्ञा. 1/50 [पा.]

A Kind of Insect—तेदुरणमज्जिया देखें—हालाहल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तोट्ठा [तोट्ठा] प्रज्ञा. 1/51
Silk-worm, Silk-Cocoon—कृमिकोश, रेशम का कीट। देखें—कोसिकारकीड
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—फसल पीड़क कीट, Incyclopedia in colour]

दंस [दंश] आ. चू. 6/61 सू. 1/3/12 ज्ञाता. 1/1/17
A kind of Large Sized Mosaquito—डांस
देखें—डंस

दगतुंड [दगतुंड] प्रश्नव्या. 1/9
Laggar-falcon—लग्गर, रघट खगान्तक, दगतुंड।
आकार—जंगली कौवें से कुछ बड़ा।

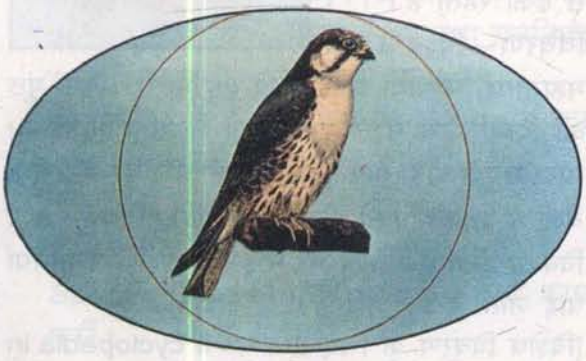

लक्षण—राख जैसा भूरा बाज (श्येन) जिसके निचले भाग में भूरी धारियां होती हैं। आंखों के आगे-पीछे से पतली भूरी मूंछ जैसी धारियां नीचे की ओर जाती हैं।
विवरण—केवल भारत में पाए जाने वाला यह पक्षी शिकार करने में दक्ष होता है। उड़ते हुए शिकार पर झपट्टा मारने तथा उनका पीछा करने में इनके जोड़े मिल कर काम करते हैं। कबूतरों के लिए यह यमराज के तुल्य होता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 221]

दगरक्खस [जलराक्षस] सू. 1/7/15
Seadevil—जलराक्षस (मनुष्य की आकृति वाला जलचर प्राणी जो समुद्रों में रहता है।)
आकार—मनुष्य की आकृति से मिलता-जुलता जलचर प्राणी।
लक्षण—शरीर के आगे का भाग दैत्य के समान, और पीछे का भाग मछली के तुल्य होता है। सिर पर दो लम्बे सींग तथा हाथ बड़े-बड़े। चमकता हुआ लाल-काले रंग का शरीर।
विवरण—15वीं शताब्दी में इसे Adriatic Sea में सर्वप्रथम देखा गया। वैज्ञानिकों के मतानुसार वर्तमान में यह विलुप्तप्राणी है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Man and animals, सूत्र. चूर्णि पृ. 158]

दद्दुर [दर्दुर] औ. 51 जीवा. 3/10 सूर्य. 20/2 प्रज्ञा. 2/49
FROG—मेंढक
देखें—मंडुक्क

दद्दुर [दर्दुर] औप. 57 जीवा. 3/10 प्रज्ञा. 2/49
Frog-Bird, Night-Jar—छिपक, दाब-चिरी, चपक, नाइटजार।

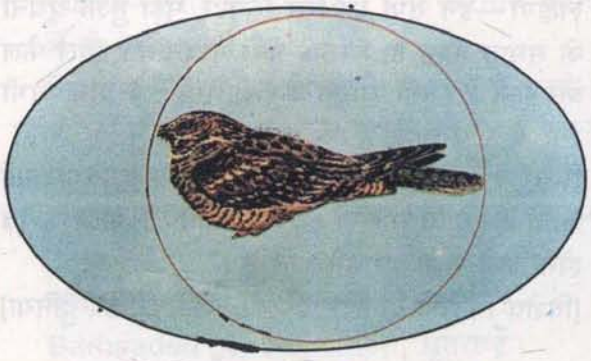

आकार—मैना से कुछ छोटा।
लक्षण—शरीर का रंग धूमिल पीला तथा गेहुंआ। जिस पर धूसर बिन्दियां होती हैं।
विवरण—मुलायम पंखों वाला यह पक्षी रात्रि में ही शिकार करता है। झांड़-झंखाड़ वाले क्षेत्रों में अकेला रहना पसंद करता है। बिना पंख फड़फड़ाए यह काफी दूर तक उड़ सकता है। इसकी बोली चुक-चुक-चुक-र-र-री की होती है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 171, चरक 1/27]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दब्भपुप्फ [दर्भपुष्प] प्रश्नव्या. 1/7 प्रज्ञा. 1/70

Leaf-nosed snake—दर्भपुष्फ सर्प, दर्भकुसुम, पत्रपुष्फ।

आकार—लगभग 4-5 फीट तक लम्बा।

लक्षण—शरीर का रंग भूरा लाल। पत्ता या दर्भ की भांति मुख।

विवरण—घने जंगलों में पाया जाने वाला यह सर्प साधारण सर्पों की अपेक्षा विषैला होता है। क्रोधावस्था में पत्र के आकार का फन फैलाकर फुफकारता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Encyclopedia in colour, Indian Reptiles, Indian Common Snake]

दव्वीकर [दर्वीकर] प्रज्ञा. 1/70

The Expanded hood of a Snake, A snake having Hood—फन वाले सांप।

आकार—छोटे, बड़े लगभग सभी आकार के।

लक्षण—इन सर्पों का सिर चिपटा, मुड़ा हुआ थूथनी के समान होता है, जिसके पीछे गरदन की खाल फैल कर फन का रूप धारण कर लेती है। ये प्रायः सभी रंगों में पाए जाते हैं।

विवरण—फन वाले सर्पों की अनेक जातियां पाई जाती हैं। ये अन्य सर्पों की अपेक्षा विषैले, शीघ्र कुपित होने वाले तथा डरावने होते हैं।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—जानवरों की दुनिया]

दिट्ठिविस [दृष्टिविष] प्रज्ञा. 1/70

A kind of Cobra—दृष्टिविष (दृष्टि में विष वाले)

विवरण—दृष्टिविष नाग की ही एक प्रजाति है। यह दृष्टि से विष-प्रक्षेप करता है। वर्तमान में प्राप्य सर्पों में इस प्रकार की जाति का सर्प प्राणी-शास्त्रज्ञ के लिए अभी तक खोज का विषय है।

दिली [दिली] प्रज्ञा. 1/58

A Kind of Crocodile—घड़ियाल की एक जाति

देखें—ग्राह

दिलिवेढ़य [दिलिवेष्टक] प्रश्नव्या. 1/6

Sea-horse Hippocampus—पंछ से लपेटने वाला जलीय प्राणी, समुद्री घोड़ा।

आकार—4-30 सेमी. लम्बा घोड़े के आकार का प्राणी।

लक्षण—मुंह शेष शरीर से लगभग समकोण पर मुड़ा होता है। दोनों आंखों को यह अलग-अलग घुमा सकता है। पानी में खड़े-खड़े तैरता है। शरीर छोटी-छोटी हड्डी की प्लेटों से ढंका रहता है।

विवरण—विश्व के सभी महासागरों में पाया जाने वाला यह मत्स्य अपनी पूंछ को किसी पौधे में लपेटकर जल में खड़ा रहता है। मादा-समुद्री घोड़ा अपने अंडे नर की पीठ पर बनी एक थैली में देती है। इसी थैली में अण्डों का निषेचन तथा विकास होता है। विश्व भर में इनकी सैकड़ों प्रजातियां पाई जाती हैं।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Incyclopedia in colour, Man and Animals]

दिव्वा [दिव्या] प्रज्ञा. 1/71 [पा.]

Koral—कोरल, दीप्ति युक्त चमकीला सर्प।

आकार—2 से 3 फीट लम्बा।

लक्षण—सिर छोटा तथा शरीर पर अत्यन्त सुंदर चित्रकारी। विषदंत बहुत लम्बे।

विवरण—इनकी अनेक जातियां अमेरिका महाद्वीप में पाई जाती हैं। ये असाधारण मनोहर होते हैं। उन पर अत्यन्त सुंदर चित्रकारी बनी रहती हैं। उन्हें देखने से ऐसा प्रतीत होता है मानो चमकते हुए चटकीले लाल और पीले मूंगे के छिलके एक के पीछे एक जड़ दिए गए हों। आश्चर्य की बात है कि ये सर्प अत्यन्त विषैले होते हैं।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—जानवरों की दुनिया,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Poisonous Snakes of Southern Africa]

दीविग [द्विपिक] आ.चू. 1/52 ज्ञाता. 1/1/39 प्रश्नव्या. 1/6

Leopard—चित्तिदार तेंदुआं।

आकार—सामान्य तेंदुए से कुछ बड़ा।

लक्षण—मोटे, कोमल तथा सुंदर फर वाली त्वचा। वर्फीले प्राकृतिक आवास के साथ मेल खाती हुई गुलाब के गुच्छे जैसी पीले स्लेटी धब्बों से युक्त शरीर।

विवरण—भारत एवं अफ्रीका के घने जंगलों में यह अक्सर घने वृक्ष के ऊपर पाया जाता है। यह एक कुशल शिकारी है, जो अपने शिकार को वृक्ष के ऊपर ले जाकर वृक्ष की डालियों से बांध देता है।

विमर्श : अथर्ववेद, 4, 8, 7, 6 और मैत्रायणी संहिता 2, 1, 9 में द्विपिन का अर्थ तेंदुआ तथा राजनिघंटु पृ. 591 में व्याघ्र का पर्यायवाची माना है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Nature, संकटग्रस्त वन्य प्राणी]

दीविय [द्विपिक] प्रश्नव्या. 1/9

Spotted Dove—चित्रक फाखता, चित्ता फाखता, पर्की।

आकार—मैना और कबूतर की भांति।

लक्षण—शरीर का रंग सफेद चित्तिदार तथा गुलावी भूरा। पश्चग्रीवा पर शतरंज जैसे सफेद-काले धब्बे। नर-मादा दोनों एक से होते हैं।

विवरण—भारत, लंका आदि देशों में पाया जाने वाला

यह पक्षी न छेड़ने पर काफी निडर और पालतू सा हो जाता है। अन्य पण्डुकों की तरह ही जल्दी-जल्दी पंख फड़फड़ाकर तेज तथा जोरदार उड़ान भरता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 11]

दुलि [दुलि] उशाटी. पृ. 400

Tortoise, Turtle—कच्छप

देखें—कच्छभ

दुहओवत्ता [द्वितआवर्त] प्रज्ञा. 1/49

A Small Shell or A kind of Shell—द्वि आवर्त (शंख का एक प्रकार)।

देखें—संख और संखनग

दोल [दोल] प्रज्ञा. 1/51

Locust of green colour—हरे रंग की टिड्डी, खडमाकड़ी (गुजरात)

आकार—टिड्डी के समान।

लक्षण—शरीर का रंग हरा। प्रायः वरसात के दिनों में ही देखी जाती है।

विवरण—मकई, बाजरा आदि के खेतों में इनके दल फसलों को अत्यधिक नुकसान पहुंचाते हैं। इनका डंक भी मधुमक्खी के समान खुजली पैदा करता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—जीव विचार प्रकरण]

धत्तरट्ठ [धार्त्तराष्ट्र] प्रश्नव्या. 1/9

Barheaded goose—कलहंस, धृतराष्ट्र।

देखें—कलहंस

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—हरिवंश पुराण 2/91/36 वेणीसंहार 1/6]

धवलवसह [धवलवृषभ] अनु. 353

White Ox—सफेद बैल

देखें—आवल्ल

धेणु [धेनु] आ.चू. 4/28, दश. 7/25 उत्त. 20/36

Cow—गाय देखें—गाव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नंदमाणग [नदमाणक] प्रश्नव्या. 1/9
Song Birds—गायक चिड़िया, नंदमाण।
आकार—गौरेया के समान।
लक्षण—शरीर का रंग कुछ भूरा तथा सफेद धब्बों से युक्त। चोंच छोटी एवं पूंछ लम्बी होती है।
विवरण—भारत में पाया जाने वाला यह पक्षी अपनी गायन-कला के द्वारा पहचाना जाता है। मधुर बोली के कारण लोग इसे बड़े शौक से पालते हैं।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—सचित्र विश्व कोश, K.N. Dave पृ. 124]

नंदावत्त [नन्दावर्त्त] प्रज्ञा. 1/51, उत्त. 35/147
A Kind of Spider—मकड़ी की एक जाति।
देखें—कोली

नाग [नाग] प्रज्ञा. 2/30 जम्बू. 3/185
Cobra—नाग
आकार—सामान्य सर्पों की तुलना में लम्बे एवं बड़े आकार वाले।

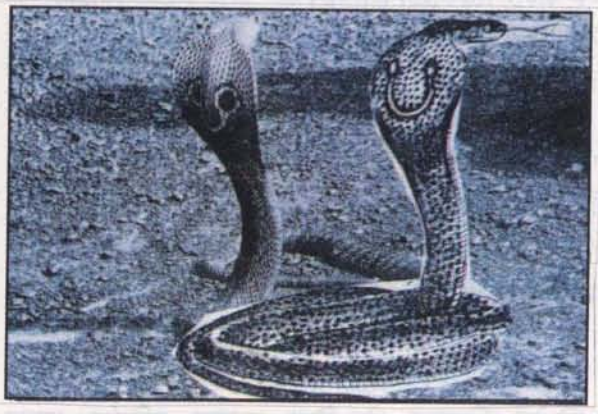

लक्षण—सिर चिपटा, मुडा हुआ, थूथनी के समान होता है, जिसके पीछे गर्दन की खाल फैलकर फन का रूप धारण कर लेती है। यह फैलाव पसलियों के फैलते ही खाल के तन जाने से होता है। इनका रंग जैतूनी या गहरे भूरे से लेकर बिल्कुल काला तक होता है, जिसमें जहां-तहां पीलापन और कालिमा लिए हुए पट्टियां होती हैं। शरीर की लम्बाई 11 फुट से 18 फुट तक होती है।
विवरण—भारत वर्ष के अतिरिक्त यह बर्मा, इन्डोचीन, दक्षिणी चीन, अंडमान द्वीप समूह आदि में पाया जाता है। इनकी अनेक जातियां हैं जैसे— शेष नाग, महानाग, नागराज, शंखचूड आदि। नागराज विश्व का सबसे अधिक विषमय तथा घातक सर्प है। यह बहुत ही फुर्तीला एवं शीघ्रगामी होता है। यह दौड़ में घोड़े को भी पछाड़ देता है। अफ्रीका में अनेक प्रकार के नाग पाए जाते हैं। उनमें वृक्ष कोबरा अथवा माम्बा अत्यंत भयानक एवं विषैला सर्प है, जो 13 फीट तक लम्बा होता है। प्रसव काल तथा वर्षा के पश्चात इसका क्रोध और भी तीव्र हो जाता है। जरा-सी भी छेड़छाड़ करने पर यह सीधा शत्रु पर टूट पड़ता है। इसके विष का प्रभाव शरीर में बहुत तीव्रता से होता है। क्योंकि इसका विष सीधा तंत्रिका तंत्र पर प्रभाव डालता है। इसके काटने पर पहले दर्द होता है। फिर कुछ समय बाद विष तंत्रिका-तंत्र और मस्तिष्क तक पहुंच जाता है। अतः इसके द्वारा डसा गया प्राणी मृत्यु को ही प्राप्त होता है।

नाग [नाग] उत्त. 13/30 दसा. 10/18
Elephant—हाथी।
देखें—कुंजर (हाथी)

निस्सासविस [निःश्वासविष] प्रज्ञा. 1/70
A Kind of Cobra—निःश्वास विष (श्वास में विष छोड़ने वाले)
आकार—प्रायः 8-10 फीट लम्बा।
लक्षण—शरीर का रंग काला किंतु सफेद चकत्तों से युक्त। क्रोधित होने पर निःश्वास के साथ विष छोड़ता है।
विवरण—इनकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं, जैसे—पफ ऐंडर, बुलस्नेक आदि। अफ्रीका का पफ ऐंडर नामक सर्प फेफड़ों में खूब हवा भरकर नथुनों से ऐसी तीव्रता से निकालता है कि सनसनाती हुई उसकी फुफकार बड़ी दूर तक सुनाई देती है। उत्तरी अमेरिका का 'बुलस्नेक' अर्थात सांड़ सर्प ऐसी तेजी से आवाज निकालता है कि वह 30 या 35 गज दूरी तक सुनी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जा सकती है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—जानवरों की दुनिया, Snakes of Southern Africa]

नीय [नीच] उत्त. 36/148
A Kind of Cockroach—तिलचट्टा की एक जाति
देखें—तंतवग

नीलच्छाय [नीलच्छाय] ज्ञाता. 1/7/13
Fairy Blue bird—ललिता (मलयालम), पाना-काराख कुरुबी (तमिल) नील-परी।
आकार—मैना से कुछ बड़ा।
लक्षण—शरीर का रंग गहरा नीला जिसमें सफेद एवं काले धब्बे से होते हैं। आंखें लाल तथा पैर काले। पूंछ अपेक्षा कृत लम्बी एवं झबरीली।
विवरण—केवल भारत में पाया जाने वाला यह एक शाकाहारी प्राणी है। यह अन्य शाकाहारी पक्षियों के साथ फल वाले वृक्षों पर देखा जाता है। पूंछ के तेज झटकों के साथ हर दो पल पश्चात एक-दो सुर वाली तालवाद्यी कठोर सीटी-व्हीट् अर्थात पीपिट दोहराता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 71, 138, अष्टांग हृदय-1939]

नीलपत्त [नीलपत्र] प्रज्ञा. 1/51
Butterfly of Blue Wings—नील पत्र वाली तितली
देखें—किण्हपत्त

नीलमिग [नीलमृग] आ.चू. 5/15 निसि. 7/10, 17/12
Blue Deer—नीलमृग
देखें—किण्हमिय

पंगुल [पंगुल] प्रश्नव्या. 1/37
The Spotted owlet—खकूसट, खूसटिया, चुगद, बिन्दुकित उलूक।
आकार—मैना से कुछ बड़ा।
लक्षण—गोल, बड़ा सिर वाला उल्लू। शरीर का रंग-धूसर भूरा तथा सफेद चित्ति युक्त। आगे की ओर झुकी हुई पीली आंखें। नर-मादा दोनों एक से प्रतीत होते हैं।

विवरण—भारत, लंका, नेपाल आदि देशों में पाया जाने वाला यह पक्षी गांवों, खंडहरों तथा पुराने पेड़ों के कोठरों में देखा जाता है। यह एक समतापी प्राणी है। इसके शरीर का तापमान वातावरण के अनुसार घटता, बढ़ता नहीं है सदा एक सा रहता है। इसकी आवाज काफी रुक-रुक कर सुनाई देती है। कभी-कभी यह चहचहाट या खिलखिलाकर हंसने जैसी ध्वनि उत्पन्न करता है, जिसे सुनने पर ऐसा भ्रम होता है, मानो एकान्त अंधेरे में कोई हंस रहा हो।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave, पृ. 177, 178]

पक्खिविराली [पक्षिविडाली] भग. 13/9 प्रज्ञा. 1/79
Flying fox, the large fruit Bat—उड़ने वाली लोमड़ी, बड़ी चमगादड़।
आकार—लोमड़ी के समान मुखाकृति वाला प्राणी।
लक्षण—शरीर का रंग काला-कत्थई तथा भूरा। अगले पैर पंखों में परिवर्तित होने वाले। दो बड़े कान तथा तीखे-दांत।
विवरण—भारत, एशिया, अफ्रीका आदि देशों में पाया जाने वाला यह एक स्तनधारी प्राणी है। इन्हें टेरोपस जिगैटियस नाम से जाना जाता है। दिन भर बांस, आम, कटहल आदि के वृक्ष पर लटके रहते हैं, रात को फलों की खोज में निकलते हैं, ये गले से एक विशेष तरह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की ध्वनि निकालते हैं। जो सामने की किसी वस्तु से टकराकर जब लौटती है तो उस वस्तु की स्थिति आकृति, चरित्र और गुणों के बारे में सारी सूचना ले आती हैं।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 197]

पडागा [पताका] प्रज्ञा. 1/56
A fish having a flag, Monster—पताका वाली मछली।
आकार—कछुए की मुखाकृति वाली मछली।
लक्षण—शरीर का रंग गहरा-भूरा। पंख सिलवटे (सिल्क) युक्त। पंख (पताका) की लंबाई 6 फुट। कुल शरीर की लम्बाई लगभग 50 फुट।
विवरण—महासमुद्रों में पाया जाने वाली यह मछली अत्यन्त तीव्रता से तैरती है। तैरते समय शरीर 6-7 फुट पानी से ऊपर रहता है। सर्वप्रथम ब्राजील के समुद्री तट के पास प्राणी-शास्त्री माइकन जोहन, निकल और E.G.B. मीड वाल्डो ने सन् 1905 में इस मछली को देखा था।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Man and Animals]

पडागा [पताका] प्रज्ञा. 1/71 [पा.]
Flying-Snake, Golden Tree-Snake—पताका वाला सर्प, उड़ने वाला सर्प, कालाजीन, माल-कारावला।
आकार—लगभग 3-5 फीट लम्बा।
लक्षण—शरीर का रंग काला, जिस पर हरी-पीली

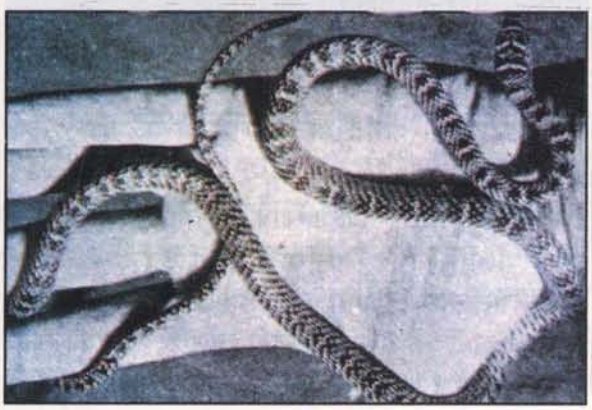

धारियां होती हैं। आंखें बड़ी एवं गोल। भिन्न-भिन्न देशों में इनका रंग भी भिन्न भिन्न होता है।
विवरण—भारत, लंका, बर्मा, आस्ट्रेलिया आदि देशों में इनकी अनेक जातियां पायी जाती हैं।
यह सर्प एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर जाते समय अथवा वृक्ष से नीचे जमीन पर आने के लिए एक विशेष प्रकार की छलांग भरता है। यह 50 मीटर तक हवा में उड़ सकता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Indian Reptiles, common Indian Snake, Snakes of Southern Africa]

पडागातिपडागा [पताकातिपताका] प्रज्ञा. 1/56
Sea Cow, Flying Fish—समुद्री गाय, उड़ने वाली मछली।
आकार—गाय की आकृति वाली मछली।
लक्षण—शरीर का रंग काला-सफेद। सींग बड़े और काले, ललाट पर सफेद पट्टा। गले की लं. 20 फीट। कुल शरीर की लं. 60 फीट।
विवरण—महासमुद्रों में पाई जाने वाली इस मछली के शरीर पर पंख (पताका) होते हैं। जो तैरते समय पानी से 4 फीट तक ऊपर रहते हैं। पंख का रंग काला त्रिकोण सा दिखाई देता है। सर्वप्रथम इसे विश्व महायुद्ध के समय ग्रेट ब्रिटेन के कैप्टन FW Deen ने देखा था।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Man and Animals सचित्र विश्व कोश]

पड्डिका [पड्डिका] विपा.टी.प. 48
Calf—पाड़ी, बछिया।
देखें—गाव (गाय)

पत्तविच्छुय [पत्रवृश्चिक] प्रज्ञा. 1/51
Scorpion of Leaf—पत्रबिच्छु, पत्रवृश्चक।
विवरण—पुराने पत्तों के ढेर में उत्पन्न होने वाला यह बिच्छु साधारणतया अन्य बिच्छुओं की अपेक्षा छोटा एवं खतरनाक होता है।
[शेष-विवरण के लिए द्रष्टव्य—विच्छुत]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पत्ताहार [पत्राहार] प्रज्ञा. 1/50 उत्त. 36/137
Crop Pest– पत्राहारक
आकार—शुंडी के समान।
लक्षण—शरीर का रंग अनेक प्रकार का।
विवरण—इन कीटों का शरीर मुलायम एवं अनेक पैर वाला होता है। इनकी प्रारम्भिक अवस्था लार्वा है, जो पत्तों को खाती है।

पयंग [पतंग] प्रज्ञा. 1/51 उत्त. 36/146
Moth—पतंग
आकार—तितली के समान।
लक्षण—तीन भागों में विभक्त शरीर एवं छः पैर। पंखों पर चिमड़े (Scales) बने होते हैं।

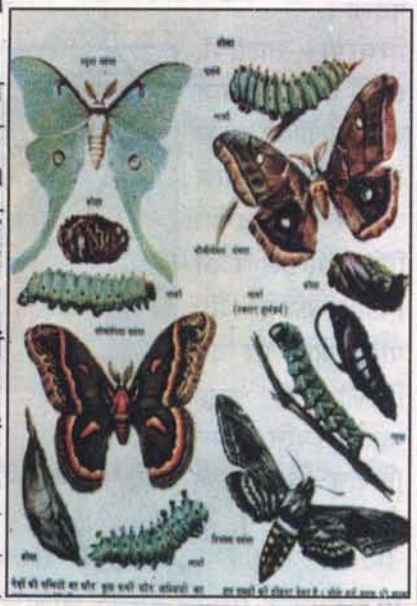

विवरण—पतंगों की लगभग 5 हजार प्रजातियां पाई जाती हैं। तितली की भांति पंखों का रंग अनेक प्रकार का होता है। पतंगें रात में ही भोजन के लिए निकलते हैं। इनका शरीर मोटा और थलथल होता है जिस पर रोएं उगे रहते हैं। ये विश्राम करते समय अपने पंख फैलाए रहते हैं। इनके जीवन की चार अवस्थाएं होती हैं—अंडा, लार्वा, प्यूपा और वय प्राप्त कीट। इनके लार्वा इतनी तेजी से खाते और बढ़ते हैं कि इनकी चमड़ी का खोल फट जाता है। ये जीवन में अपने खोल कई बार बदलते हैं। इनका नया खोल पहले से बहुत भिन्न हुआ करता है। फूलों, फलों का रस इनका मुख्य भोजन है।

पयलाइया [पयलाइआ] सू. 2/3/80 प्रज्ञा. 1/76
Beaver—बीवर, प्रचलिका
आकार—ऊद बिलाव से बड़ा।
लक्षण—शरीर की लम्बाई 80 से.मी. से 1 मी. तक। पूंछ की लम्बाई 30 से.मी. से 35 से.मी. तथा वजन 21-30 k.g. तक होता है। पूंछ लम्बी झबरीली तथा दांत तीखे होते हैं।

विवरण—यूरोप तथा उत्तरी अमेरिका में पाया जाने वाला यह एक शाकाहारी प्राणी है। यह मोटे-से-मोटे वृक्षों को बड़ी तेजी से काट डालता है। यह प्राणी जगत का एक कुशल इंजीनियर कहलाता है। यह पानी पर बांध बनाकर बांध में अपना घर बनाता है। बांध बनाने में कई बीवर मिलकर काम करते हैं।
विमर्श : राजनिघंटु पृ. 607 में प्रचालाकी शब्द प्रयुक्त हुआ है, जिसे मोर का पर्यायवाची तथा कैयदेवनिघंटु पृ. 473 में गिरगिट का पर्यायवाची माना है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—विश्व के विचित्र जीव-जंतु]

परस्सर [परस्सर] प्रज्ञा. 1/66 जम्बू. 2/136 भग. 7/122
आकार—4 फीट लम्बा भालू की प्रजाति का जन्तु।
लक्षण—मजबूत एवं बड़े नाखून वाला पंजा, टांगें छोटी।
विवरण—वर्तमान में यह आस्ट्रेलिया में पाया जाता है। दिन में अपने बिल में छुपा रहता है और रात में भोजन के लिए बाहर निकलता है। यह पूर्ण शाकाहारी जीव है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Nature, सचित्र विश्व कोश]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परासर [परासर] प्रज्ञा. टी.प. 9
A fabulous animal—अष्टापद, शरभ, परासर, परिसर।
देखें—परिसर

परिसर [परिसर] आ.चू. 1/5/52
A fabulous animals—अष्टापद, शरभ, परिसर
आकार—बिल्ली से कुछ बड़ा।
लक्षण—शरीर पर चार पैर तथा नेत्र ऊपर की ओर होते हैं।
विवरण—सिंह और हाथी से भी अधिक बलवान आठ पैर वाला जानवर जो बर्फीली पहाड़ियों पर रहता है तथा हाथी को भी अपनी पीठ पर उठा सकता है। जानवरों का खून पीने वाला यह प्राणी बादलों की गर्जना से जब कभी आकाश में छलांग लगाने के पश्चात पीठ के बल गिरता है तो अपने पीठ पर के पैरों से संभल कर खड़ा हो जाता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—महापुराण-27/70, Williums, महाभारत 117/12-15]

पल्लोय [पल्लोय] उत्त. 36/129
Wood-Worm—पल्लोय, काष्ठकीट
देखें—काष्ठाकार

पसय [प्रशय, पसय] प्रज्ञा. 1/64 जम्बू. 2/35
Indian Bison—गौर, दो खुरवाला जंगली पशु
आकार—सामान्य भैंसे के समान।
लक्षण—मजबूत एवं विशाल देहवाला जंगली पशु। अमेरिकी बाइसन की तुलना में इसके हाथ-पैर छोटे व सफेद रंग के होते हैं। बालों का रंग गहरा भूरा, गहरा जामुनी, भूरा या काला होता है। सिर पर बालों का गुच्छा एवं भारी मजबूत सींग होते हैं।
विवरण—यह जंगली भैंसे की ही एक प्रजाति का प्राणी है। 6 से 12 के झुंडों में अरुणाचल प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक तथा केरल के घने उष्ण कटिबंधीय वनों में पाया जाता है। यह इतना शक्तिशाली होता है कि बाघ भी इस पर हमला करने से घबराता है। सुश्रुत संहिता में प्रशय के स्थान पर पृषत् शब्द मिलता है, जिसका अर्थ चित्तलमृग किया है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—सचित्र विश्व कोश, Nature]

पाठीण [पाठीन] प्रश्नव्या. 1/5
A Kind of Fish—पाठीन मत्स्य, पठिन मत्स्य, वागुस, वागुजारक कण्टक पार्श्व, वर्तुल मत्स्य
आकार—5-6 फीट लम्बा।
लक्षण—शरीर का रंग सलेटी। मुंह चौड़ा एवं शरीर पतला।

विवरण—तालाबों, झीलों आदि में पाया जाने वाला यह मत्स्य अपनी चिकनी खाल के कारण प्रसिद्ध है। विदेशों में इसे "Cat Fish" कहते हैं। पकड़े जाने पर यह बिल्ली की तरह कर्कश ध्वनि उत्पन्न करता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—रेंगने वाले जीव, कैयदेवनिघंटु पृ. 474]

पायकुक्कुड [पादकुक्कुट] ज्ञाता. 1/17/14/1
Red Jungle Fowl—लाल वनकुक्कुट, पाद कुक्कुट, जंगली मुर्गा।
देखें—कुलाल

पायहंस [पादहंस] प्रज्ञा. 1/79
Cottonteal—गिर्रिआ, गुड़गुड़ा, पाय हंस।
आकार—कबूतर से कुछ बड़ा।
लक्षण—शरीर पर सफेद रंग की प्रधानता। चोंच छोटी एवं राजहंस जैसी। नर के शरीर का ऊपरी भाग चमकीला-काला। किन्तु सिर, ग्रीवा तथा नीचे का भाग सफेद होता है। मादा में ये बातें दिखाई नहीं देतीं।
विवरण—भारत, लंका, वर्मा आदि देशों में पाया जाने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाला यह पक्षी झीलों, नदियों आदि के किनारे झुंड के साथ देखा जाता है। यह काफी तेज उड़ने वाला एवं मौका पड़ने पर बहुत खूबी से गोता भी लगा सकता है। उड़ते समय विशिष्ट प्रकार की गुनगुनाहट सुनाई देती है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 118]

पारिप्पव [पारिप्लव] प्रश्नव्या. 1/9 प्रज्ञा. 1/79

Whitebreasted Waterhen—जलमुर्गी, डोक, जलकुक्कुटी।

आकार—तीतर से कुछ छोटा।

लक्षण—शरीर का रंग स्लेटी-धूसर और भूरा। चोंच का आधार चमकीला लाल। लम्बी हरी टांगें और पैर बड़े होते हैं।

विवरण—विश्व भर में इसकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। यह अपना अधिक समय पानी में ही बिताता है। सरकण्डों के नीचे बैठा हुआ जोर से तीखी तथा एकाएक बंद होने वाली किर्रिक-क्रेम-रेक-रेक जैसी बोली निकालता है।

पारेवय [पारापत] प्रज्ञा. 1/79 जम्बू. 3/35 उत्त. 34/6

Common green Pigeon, Nilgiri wood Pigeon—सामान्य हरा कबूतर आदि।

विमर्श—प्रज्ञा. 1/75 प्रश्नव्या. 4/7 में कवोय शब्द के बाद पारेवय शब्द आया है इससे यह स्पष्ट होता है कि कवोय एवं पारेवय दोनों भिन्न-भिन्न प्रकार के कबूतर हैं। Apte, williams आदि कोश में भी कापोत शब्द का अर्थ धूसर रंग का कबूतर एवं पारावत शब्द का अर्थ कबूतर की एक जाति किया है। इसलिए यहां पर भी पारावत शब्द से कापोती रंग के कबूतर को छोड़कर शेष सभी कबूतरों का ग्रहण करना चाहिए।

विवरण के लिए द्रष्टव्य—कापोत

पाहुया [प्राभृता] प्रज्ञा. 1/50 [पा.]

A kind of Insect—कीट की एक जाति

देखें—कीड (कीट)

पिंगलक्ख [पिंगलाक्ष] जीवा. 3/275 औ. 6

Painted Stork—जंघिल, डोख, कनकरी, झींगरी, विचित्र बलाक।

आकार—सफेद बलाक से कुछ बड़ा।

लक्षण—शरीर के ऊपर का रंग चमकीला हरा-काला। सिर पर कुछ मुड़ी हुई लम्बी, भारी पीले रंग की चोंच। पिच्छहीन चेहरा मोम जैसा पीला होता है। नर-मादा दोनों एक से प्रतीत होते हैं।

विवरण—भारत, पाकिस्तान, लंका, बर्मा आदि देशों में पाया जाने वालां यह पक्षी झीलों, तालाबों आदि के किनारे झुंड या जोड़ों के साथ देखा जाता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 395]

पिंगुल [पिंगुल] प्रश्नव्या. 1/9

The Spotted owlet—खकूसट, खूसटिया, चुगद।

देखें—पंगुल

पिपीलिया [पिपीलिका] प्रज्ञा. 1/50 उत्त. 36/137

Ant—चींटी

देखें—कीड़ी।

पियंगाला (पियंगाला) प्रज्ञा. 1/51

Blister Beetle—फालामास्टर

आकार—गोबरैला से कुछ बड़ा।

लक्षण—दो जोड़ी पंख तथा तीन जोड़ी पैर वाला कीट।

विवरण—इसकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। इसके शरीर में केनथरीडिन नाम का द्रव्य होता है, जिसके कारण मनुष्य के शरीर पर (चमड़ी पर) फाला

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हो जाता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Incyclopedia in Colour, Nature]

पिसुग [पिसुग] जीव. 3/624
Assassin Bug—चींचड़, पिस्सू।
आकार—खटमल के समान।
लक्षण—इसका मुख आगे की ओर चोंच की तरह मुड़ा होता हैं, जिससे यह खून चूसता है।
विवरण—इसकी 3000 से भी अधिक प्रजातियां पाई जाती हैं। यह गाय, भैंस, भेड़ आदि के शरीर पर आसानी से देखा जा सकता है।

पिसुया [पिशुका] प्रज्ञा. 1/50 [पा.]
Flea—पिस्सू
आकार—जूं के आकार वाले छोटे कीट।
लक्षण—छः टांगें तथा बिना पंख का कीट।
विवरण—ये कई प्रकार के होते हैं जो भेड़-कुत्ते आदि के खून से अपना जीवन निर्वाह करते हैं। अर्थात यह परजीवी प्राणी है। बीमारियों को फैलाने में इनका बहुत बड़ा योगदान रहता है, जैसे—प्लेग मलेरिया, आदि।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Nature, फसल पीड़क कीट]

पीलग [पीलक] भग. 7/123 [पा.] जम्बू. 2/137
Golden oriole—पीलक
आकार—मैना के समान लगभग साढ़े नौ इंच लम्बा।
लक्षण—शरीर का रंग—पके हुए आम की भांति पीला। पंख और पूंछ चमकीली काली। चोंच के सिर की ओर जाती स्पष्ट काली रेखा तथा लाल चोंच। मादा का रंग जैतूनी हरा होता है जिस पर महीन भूरी धारियां होती हैं।
विवरण—असम को छोड़कर भारत में पाया जाने वाला यह पक्षी प्रातः काल रुक-रुक कर सीटीनुमा मधुर आवाज के द्वारा पहचाना जाता है। इसकी 30 प्रजातियां पाई जाती हैं। यह अपना घोसला पेड़ों पर लटकते हुए प्यालेनुमा बनाता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 77]

पुंसकोइल, पुंसकोइलग [पुंस्कोकिलक] ठाणं 10/103 भग. 16/91
Crow-Peasant, Coucal—महुका, कुका, कूक्कू, कोयल।
आकार—जंगली कौवे के तुल्य।
लक्षण—शरीर का रंग चमकीला काला। चोंच पीली-हरी और आंखें गहरी लाल होती हैं। मादा का रंग भूरा होता है जिस पर सफेद चित्तियां और धारियां होती हैं।
विवरण—विश्व में इसकी अनेक जातियां पाई जाती हैं। ये परजीवी प्राणी हैं क्योंकि ये अपना घोंसला नहीं बनाते और अंडे भी कौवे के घोंसले में देते हैं। कू-कू की मधुर आवाज के द्वारा पहचाने जाते हैं।

पुलग [पुलक] प्रज्ञा. 1/58
A Kind of Crocodile—घड़ियाल की एक जाति।
विमर्श : राजनिघंटु पृ. 601 में पुलक को गोह का पर्यायवाची माना है।
देखें—गाह

पुलय [पुलक] आ.चू. 15/28/12 ठाणं 10/163
Worm—कीट, लट
देखें—अरक

पुलाकिमिय [पुलाकिमिय, पुलाकृमिक] भग. 15/186 प्रज्ञा. 1/49
A Kind of Worm—मलद्वार में उत्पन्न होने वाली कृमि।
आकार—2-10 मिलीमी. लम्बा।
लक्षण—शरीर का रंग सफेद, सूई की भांति नुकीला मुख।
विवरण—मनुष्य के मलद्वार में उत्पन्न होने वाला यह परजीवी प्राणी है। इसका शरीर कई छल्लों से मिलकर बनता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुप्फबिंटिय [पुष्पवृन्तक] प्रज्ञा. 1/50
Trogoderma granarium Everts—खपरा कीट
आकार—कुछ अंडाकार तथा लगभग 2.5 m.m. लम्बा कीट।
लक्षण—लाल-भूरा रंग का शरीर। पूंछ के भाग पर रोएं गुच्छों में होते हैं। पौधे के फल, फूल, स्कंध आदि पर चिपक कर अपना आहार करते हैं।
विवरण—गर्म एवं शुष्क प्रदेशों में इनकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। विभिन्न प्रकार की दरारों, सुराखों, बोरों की सीवन आदि इनके निवास स्थान हैं।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—फसल पीड़क कीट]

पूयण [पूतन] सू. 1/3/73
Sheep—गाड़र, भेड़।
देखें—अमिल

पोंडरीय [पौण्डरीक] सू. 2/1/1-10 ठाणं. 10/139 प्रज्ञा. 1/79
Spotted-billed, Grey Pelican— हवासिल, कुरेर, विंदुचंचु, धूसर- पेलिकन।
आकार—गिद्ध से बड़ा।
लक्षण—नाटी-मोटी एवं बड़े आकार का जलीय पक्षी। शरीर का रंग धूसर और धूसर सफेद होता है। टांगें छोटी एवं मजबूत होती हैं।

विवरण — भारत, पाकिस्तान आदि देशों में झीलों, नदियों के किनारे पाया जाने वाला यह पक्षी झुंड में रहना पसंन्द करता है। बृहद् आकार के बावजूद यह पानी से निकल कर आसानी से कुशलता पूर्वक उड़ सकता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 210, 231]

पोत्तिय [पोत्तिक] प्रज्ञा. 1/51, उत्त. 36/146
A Wasp—ततैया, टांटियों (राज.), वर्र, बीरड़ (हरियाणा)।
आकार—लगभग 1-1/2 इंच लम्बा।
लक्षण—शरीर पर पीले व काले रंग की धारियां होती

हैं। पूंछ के भाग पर एक जहरीला डंक होता है।
विवरण—समूह में रहने का आदी यह एक सामाजिक प्राणी है। लकड़ी, मिट्टी आदि से अपना छत्ता बनाता है, जिसमें अनेक घर या छेद होते हैं। इसके शुष्क जहर में मौजूद 0.4 प्रतिशत मैग्निशियम कई रोगों के लिए लाभकारी होता है। इसके काटने पर भयंकर दर्द तथा सूजन भी आ जाती है। अनेक बार डंक शरीर में रह जाता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—जीव विचार प्रकरण]

फलविंटिया [फलवृन्तका] प्रज्ञा. 1/50
Clerck or Materna (लिनायस)—फल चूस शलभ।
आकार—1 से.मी. तक लम्बा कीट।
लक्षण—शरीर का रंग हल्का भूरा तथा पीला सफेद।
विवरण—भारत में इनकी लगभग 20 प्रजातियां पाई जाती हैं। यह फलों के बाह्य छिलके को क्षति पहुंचा कर रसपान करता है। इस क्षति से न केवल फल गिर जाते हैं वरन् अन्य कीटों द्वारा आक्रमण के लिए भी रास्ता प्रशस्त हो जाता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—फसल पीड़क कीट]

बंसीमुह [बंशीमुख] प्रज्ञा. 1/49
A Kind of Worm—वंशीमुख, वसीमुहा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आकार—लगभग 1-4 इंच लम्बा।
लक्षण—शरीर का रंग काले से लेकर हरा तक होता है। मुंह के आगे सुई की भांति नुकीला डंक सा-होता है।
विवरण—इसकी विश्व भर में 300 से अधिक प्रजातियां पाई जाती हैं। यह एक प्रकार के कृमि के ही अन्तर्गत आता है।

बग [बक] प्रज्ञा. 1/79
Little Egret—किलचिया, कारचिया-बगला, छोटा बगुला। देखें—काउल्ली

बरहिण [बर्हिन] प्रज्ञा. 1/79 औ. 6 जी. 3/274
Common Peafown—मोर, मयूर।
आकार—लगभग 6-7 फीट तक लम्बा।
लक्षण—शरीर का रंग कुछ भूरापन लिए हुए। 3-4 फीट लम्बी नेत्राकार चमकदार चित्रों से सजी हुई दुम। ग्रीवा के नीचे भाग में धात्विक हरी तथा भूरी बिन्दियां होती हैं। ग्रीवा का रंग चमकता नीला होता है।
विवरण—भारत, बर्मा और लंका में पाया जाने वाला यह प्राणी पर्णपाती जंगलों में टोलियों के साथ रहता है। बर्मा में पैवो म्यूटिकस नामक मोर के सिर पर कलंगी नोकीली होती है। मादा के सिर पर कलंगी नर की अपेक्षा सुन्दर नहीं होती तथा उसके पंख भी चमकीले नहीं होते। आवाज कुछ तेज तथा रुक-रुककर निकलने वाली का-आन, का-आन जैसी, जो छः से आठ बार दोहराई जाती है। एक मोर के बोलने पर आस-पास के सभी मोर बोलना शुरू कर देते हैं।

बलागा [बलाका] प्रश्नव्या. 1/9 ज्ञाता. 1/1/33 प्रज्ञा. 1/79
Cattle Egret—सुर्खिया बगला, गाइ-बगला, पशु बगुला, बगुला।
आकार—छोटे बगुले से कुछ बड़ा।
लक्षण—शरीर का रंग सफेद तथ चोंच पीले रंग वाली।
विवरण—विश्व में इनकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। ये घास चरते हुए पशुओं के इर्द-गिर्द टोलियां बनाकर भोजन करते हुए देखे जाते हैं।

बहुपय [बहुपद] अनु. 327, 527
Millipede—बहुपैर वाला जीव, मिलीपेड।
आकार—कानखजूरे के आकार वाला।
लक्षण—शरीर लम्बा, पतला, छोटा, मोटा अनेक प्रकार का। शरीर का रंग जामुनी तथा अनेक पैर।
विवरण—इनके शरीर के प्रत्येक खंड में से दो-दो पैरों की जोड़ी निकली होती है। स्पर्श करने पर भय के कारण सिक्के के समान गोल रूप धारण कर लेते हैं। पत्ते एवं मिट्टी इनका भोजन है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Nature, Incyclopedia in colour]

बहिलग [बहिलग] निभा. 1486
Ox—बैल देखें—आवल्ल

बाल [व्याल] ज्ञाता. 1/1/17, 206 प्रश्नव्या. 3/7
Tiger—बाघ, व्याघ्र देखें—वग्घ

बाल [व्याल] ज्ञाता. 1/1/17, 206 प्रश्नव्या. 3/7
Snake—सांप देखें—अही

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बाहुलेर [बाहुलेय] अनु. 544
Black Calf—काला बछड़ा देखें—गाव (गाय)

बीयंबीजग [बीजंबीजक] भग. 13/154
A Kind of House Swift—बबीला, बतासी, अडिला। देखें—अडिल

बीयवावय [बीजवायक] अनु. 321
A Kind of Crop Insect which feeds on grain—एक जंतु, बीजवापक।
आकार—सूक्ष्म आकार वाला।
लक्षण—इस कीट का प्रौढ़ छोटा, सुन्दर, हरा, भूरा रंग लिए होता है।
विवरण—यह दालों आदि की फलियों में छेद कर नए पनप रहे बीजों को खाता जाता है।

भमर [भ्रमर] प्रज्ञा. 1/51 उत्त. 36/146
A Black bee—भौंरा, भंवरा। देखें—छप्पय

भरिली [भरिली] प्रज्ञा. 1/51
beetle of Mango Stone—आम्र गुठली घुन
आकार—फाला मास्टर से बड़ा।
लक्षण—इस प्रौढ़ घुन की लम्बाई लगभग 8 m.m. और चौड़ाई 4 m.m. तक होती है। रंग धूसर भूरा और इस प्रकार चित्रित होता है कि आम के पेड़ की छाल में घुल-मिल जाता है। बिना कुछ खाए महीनों गुजार देता है।
विवरण—यह कीट निशाचर है, जब आम के फल लगने शुरू होते हैं तभी मादा घुन अंडे देने के लिए अपने थूथन और श्रृंगि की सहायता से उपयुक्त स्थान की खोज करती है। आम की गुठली में इसका प्रवेश एक आश्चर्य पैदा करता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—फसल पीड़क कीट]

भल्ल [भल्ल] प्रश्नव्या. 1/6
Bear—भालू
देखें—अत्थभिल्ल (भालू) और अच्छ (ऋक्ष)

भसुय [भसूया] उशाटीप. 138
Bear—भालू
देखें—अत्थभिल्ल (भालू) और अच्छ (ऋक्ष)

भारुंडपक्खी [भारुंडपक्षी] औप. 27 राज. 813 उत्त. 4/6
A Kind of Fublous Bird—भारुंड पक्षी
आकार—विशाल शरीर वाला पक्षी।
लक्षण—इस पक्षी का शरीर एक, जीव दो और पैर तीन होते हैं।
विवरण—रत्नद्वीप में पाया जाने वाला यह पक्षी बहुत भयानक होता है। बाघ, रीछ आदि विशालकाय जानवरों का मांस खाता है। इसका पेट एक, मुख दो तथा पैर तीन होते हैं। बीच का पैर-दोनों जीवों के लिए सामान्य होता है और एक-एक पैर व्यक्तिगत। एक-दूसरे के प्रति बड़ी सावधानी बरतते हैं, सतत जागरूक रहते हैं।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—उत्तराध्ययन चूर्णि पृ. 117, वृहद्वृत्ति-पत्र 217, पंचतंत्र, कल्पसूत्र टीका]

भास [भास] प्रश्नव्या. 1/9
White Scavenger Vulture,
pharachschicken—सफेद गिद्ध, गोवर गिद्ध, भास।
आकार—गंदा सफेद चील की भांति।
लक्षण—शरीर पर काले पक्ष-पिच्छ। नंगा पीला सिर। चोंच पीली तथा छोटी।
विवरण—भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश में पाया जाने वाला यह पक्षी खुले क्षेत्रों में मानव बस्तियों के आस-पास रहना पसंद करता है। भूमि पर मटक-मटक कर कुछ इठलाता हुआ चलता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave 192, 191, बसंतराज 8/37 कैयदेवनिघंटु पृ. 463]

भिंग [भृंग] औप. 46
Purple Sunbird—शकर खोरा, सूर्य पक्षी, भृंग पक्षी
आकार—घरेलू गौरैय्या से भी लगभग आधा।
लक्षण—नर-मादा दोनों का रंग बहुत भड़कीला व चमकदार होता है। वक्ष के बीच चौड़ी काली पट्टी तथा चोंच लम्बी, पतली और टेढ़ी होती है, जिसे फूलों में

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डालकर यह उसका रस चूसता है। और रस के साथ रहने वाले कीट को भी खा जाता है।

विवरण—भारत, पाकिस्तान और बंगलादेश में पाए

जाने वाले शकर खोरे की मुख्य तीन प्रजातियां हैं- यैलोबेक्ड सनवर्ड, पर्पल सनवर्ड व पर्पल रम्पर्ड सनवर्ड। इसका घोंसला बया की तरह लटकने वाला होता है। शकरखोरे बगीचों, कुन्जों, झाड़-झंखाड़ वाले क्षेत्रों व हल्के पर्णपाती जंगलों में रहना पसंद करते हैं। उड़ते समय तेज व तीखी विच-विच की ध्वनि से पहचाने जाते हैं।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 114]

भिंग [भृंग] औप. 19 राज. 26 जीवा. 3/279

A Black bee—भंवरा देखें—छप्पय

भिंगारग [भृंगारक] औप. 6 जीवा. 3/275 जम्बू. 2/12

The Black Drongo, King Crow—भुजंगा, कोतवाल, भृंगारक।

आकार—बुलबुल से कुछ बड़ा।

लक्षण—शरीर का रंग एकदम चटक चमकीला काला। पूंछ लम्बी एवं बीच से काफी फटी हुई। आंखों का रंग लाल। नर-मादा दोनों एक जैसे प्रतीत होते हैं।

विवरण—भारत, पाकिस्तान आदि में इसकी मुख्य चार प्रजातियां पाई जाती हैं। जिनमें भृंगराज और भुजंगा प्रसिद्ध है। यह कई तरह की कर्कश तथा डराने-धमकाने वाली आवाजें निकालता है। वैज्ञानिक भाषा में इसे डाइकूरस एहसिमिलिस (वैक्सटीन) कहते हैं।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 62-63]

भिंगारी [भृंगारिण] उत्त. 36/147

Cricket—झींगरीटक देखें—झिल्लिया

भेणासि [भेणासि] प्रश्नव्या. 1/9

Indian Lorikeet—भोरा, भोअरा, लटकन, भेणस।

आकार—घरेलू गौरेया से कुछ बड़ा।

लक्षण—छोटा, सुन्दर, चमकीला और घास जैसे हरा

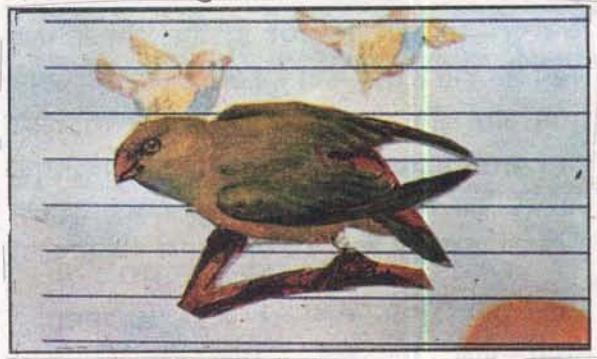

तोता। पूंछ छोटी एवं चौकोर।

विवरण—भारत और लंका में पाया जाने वाला यह एक शाकाहारी पक्षी है। लंका लोरिक्यूलस वेरीलाइस नामक पक्षी का शिखर गहरा लाल और नेप नारंगी होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उड़ते समय या पत्तियों व फूलों पर चढ़ते समय तीन अक्षर वाली ची-ची-ची की मधुर ध्वनि उत्पन्न करता है। [विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—भारत के पक्षी, K.N., Dave पृ. 1441]

भुयंग [भुजंग] ठाणं. 4/3 जम्बू. 2/15 उत्त. 14/34

Snake—सांप देखें—अही

भुयईसर [भुजगेश्वर] प्रश्नव्या. 4/7

King Cobra—शेषनाग, शंखचूड, अहिराज, शाखामुती, कृष्ण नागम (तमिल) कारु नागम (मलयालम) कृष्ण-सर्पम्।

आकार—लगभग 10-18 फीट लम्बा।

लक्षण—शरीर का रंग जैतूनी या गहरा भूरा से लेकर बिल्कुल काला तक होता है। जिस पर पीलापन और कालिमा लिए हुए कुछ पट्टियां होती हैं। कभी-कभी ये पट्टियां छोटी-छोटी चित्तियों से युक्त होने के कारण धब्बेदार रेखाएं जैसी लगती हैं। युवा शेषनाग का रंग नवजात से बिल्कुल भिन्न होता है।

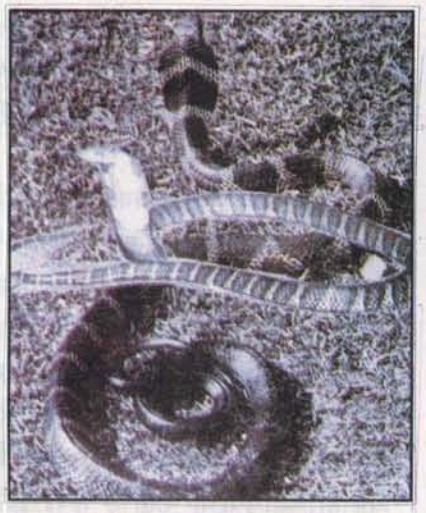

विवरण—यह विशेष कर हिमालय, असम, गोवा, बर्मा, इन्डोचीन आदि में पाया जाता है। यह विश्व का सबसे अधिक विषमय और घातक सर्प है। कुपित होने पर अपना धड़ ऊपर उठाकर, फन फुलाए, चमकीली आंखें निकालकर खड़ा हो जाता है। एक आदमी को मारने के लिए जितने विष की आवश्यकता होती है, उसका दस गुणा विष शेषनाग के एक दांत मारने में निकलता है। यह इतनी जोर से श्वास खींचता है कि छोटे-मोटे प्राणी श्वास के साथ खिंचे चले आते हैं। इसके द्वारा डसा गया व्यक्ति 8-10 मिनट में मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। यह बहुधा वृक्षों पर चढ़ जाता है और कुशल तैराक भी होता है। मादा अपने अंडे पक्षी की भांति घोंसले में देती है।

भोगविस [भोगविष] प्रज्ञा. 1/70

A Kind of Cobra—भोग विष, शरीर में विष वाले सर्प, फन में विष वाले सर्प।

आकार—4-16 फीट लम्बा।

लक्षण—शरीर का रंग गहरा जैतूनी से काला तक होता है। इनके गर्दन की खाल फैलकर फन का रूप धारण कर लेती है।

विवरण—भारत, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया आदि में इनकी अनेक जातियां पाई जाती हैं। कोल ब्रिड़ी वर्ग के ये

सदस्य अच्छे धावक होने के साथ कुशल तैराक भी होते हैं।

भोगि [भोगिन्] सुपा. 399

Snake—सर्प

देखें—अही

मउलि [मुकली] प्रश्नव्या. 1/7 प्रज्ञा. 1/71

Without hood Snake—मुकली सर्प (बिना फन वाले सर्प)

आकार—कुछ इंच से लेकर 40 फीट तक लम्बा।

लक्षण—इन सर्पों के फन नहीं होता तथा जबड़ों और तालु में क्रमशः नुकीले और ठोस दांत होते हैं।

विवरण—विश्वभर में इनकी सैकड़ों जातियां पाई

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाती हैं। इस वर्ग के सर्प अधिकतर विषहीन एवं कम विषवाले होते हैं। इनके शरीर का रंग चित्तकबरा, काला, सफेद-भूरा आदि होता है। शेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—अही

मंकुलहत्थि [मत्कुणहस्तिन्] प्रज्ञा. 1/65

Elephant Without Tusk—बिना दांत वाला हाथी या उसका बच्चा। देखें—कुंजर (हाथी)

मंगु [मद्गु] सू. 1/7/15

Snak-bird, Darter—जल काक, पनडुब्बी, बानवी, सर्प पक्षी।

आकार—चील से कुछ बड़ा।

लक्षण—शरीर का रंग काला तथा पीठ पर रजत-धूसर रंग की लकीरें होती हैं। सिर तथा ग्रीवा का रंग मखमली भूरा। ठोढ़ी तथा कण्ठ सफेद। सर्प जैसी पतली ग्रीवा। नुकीली कटाराकार चोंच।

विवरण—भारत, पाकिस्तान, लंका आदि देशों में पाया जाने वाला यह एक जलीय प्राणी है। झुंड की अपेक्षा अकेला रहना इसका स्वभाव है। तैरते समय ग्रीवा को छोड़कर पूरा शरीर पानी में डूबा रहता है। तेज झटके से चोंच बढ़ाकर शिकार को दबोच लेता है। [विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 366]

मंगुसा [मंगूसा] सू. 2/3/80, प्रश्नव्या. 1/6 प्रज्ञा. 1/77

Chinchilla—गिलहरी के आकार का जीव, चिंचिला, मंगूसा।

आकार—10 इंच लम्बा गिलहरी के समान दिखने वाला भुजपरिसर्प प्राणी।

लक्षण—अति कोमल एवं सुन्दर कबूतरी रंग का फर। लम्बी टांगें खरगोश की तरह प्रतीत होती हैं।

विवरण—विशेष रूप से दक्षिण अमेरिका के चिली देश में पाया जाने वाला यह प्राणी सूखी चट्टानों को खोद सकता है। सूखी घास आदि खाने वाला शाकाहारी जीव है। इनकी सुन्दर खाल के कारण इन्हें बहुतायत में मारा गया, जिससे ये अब केवल चिली देश में ही स्वतंत्र रूप से पाए जाते हैं।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Man and Animals, Nature]

मंडलि [मण्डलिन्] प्रज्ञा. 1/71

A Venomous Black Snake—मांडली सर्प, करैत, कुंडलिया सर्प।

आकार—लगभग 4 फीट लम्बा।

लक्षण—शरीर का रंग चमकीला काला या चटक कत्थई। पीठ पर आर-पार पतली श्वेत धारियां। पेट का रंग मोती के समान सफेद।

विवरण—भारत, अफ्रीका एवं संयुक्त प्रान्त में पाया जाने वाला यह सर्प नाग से भी चार-पांच गुणा विषैला होता है। छेड़े जाने पर यह सिर को शरीर की कुण्डलियों में छिपा कर निश्चिन्त हो जाता है और थोड़ी देर तक चुप्पी के साथ बैठा रहता है। भारत में इसे मांडली, कुंडलिया, करैत सर्प आदि के नाम से जानते हैं।

विमर्श : राजनिघंटु पृ. 600 में मंडलि सर्प को गोनास का ही पर्यायवाची कहा है तथा पृ. 609 में जल सर्प का पर्यायवाची माना है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—जानवरों की दुनिया, Common Indian Snake]

मंडुक्क [मण्डूक] ज्ञाता. 1/5/42 ठा. 4/5/4 सम. 19/1/2 भग. 8/87

Frog—मेंढक, दर्दुर।

आकार—केकड़े के समान।

लक्षण—शरीर की खाल चिकनी तथा जीभ चिपचिपी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होती है। आगे वाली टांगें छोटी तथा पीछे की टांगें बड़ी होती हैं। हरा, काला, पीला, भूरा लगभग सभी रंगों में पाए जाते हैं।

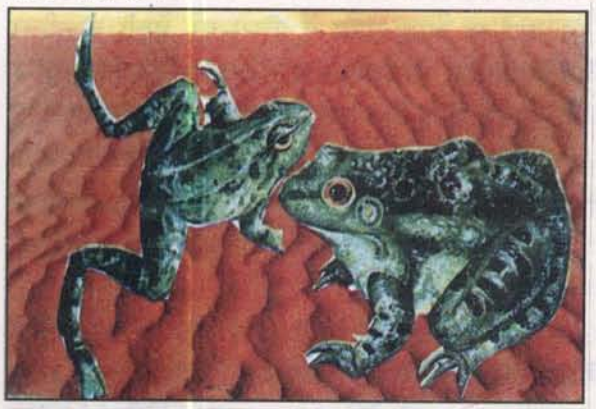

विवरण—समुद्रों, झीलों, तालाबों आदि में इसकी सैकड़ों प्रजातियां पाई जाती हैं। यह एक उभयचर प्राणी है। इसकी खाल नम होने के कारण सूर्य की गर्मी अधिक समय तक नहीं सह सकती। यह प्राणी अपने फेफड़ों के साथ-साथ अपनी खाल से भी श्वास ले सकता है। इसको सभी वस्तुएं सफेद दिखाई देती हैं। कुछ मेंढ़क अपने पैरों की गद्दी की सहायता से पेड़ों पर भी चढ़ सकते हैं।

अमरीका में एक पौंड से ऊपर वजन का मेंढक पाया जाता है जो डेढ़ गज लम्बे सांप को खा जाता है। पश्चिम अफ्रीका में तीन फीट लम्बा मेंढक पाया जाता है, जिसकी टर्र-टर्र की आवाज कई कि.मी. तक सुनाई देती है। ब्राजील के टोडा नामक मेंढक की आंख के ऊपर दो छोटे-छोटे सींग होते हैं जो बहुत जहरीले होते हैं। पश्चिम कोलम्बिया में तीव्र विष वाले मेंढक पाए जाते हैं, जिनका विष 'कोबरा' से भी 20 गुणा अधिक होता है। उस विष से 1500 व्यक्तियों की जान जा सकती है।

मंदुय [मन्दुक] प्रश्नव्या. 1/5 [पा.]
A Kind of Crocodile—घड़ियाल की एक जाति
देखें—गाह

मंधादय [मन्धादय] सू. 1/3/71
Sheep—मेष, गाड़र। देखें—अमिल

मंस [मंस] जीव टीप. 40 भुज परिसर्प-विशेष।
Spotted Linseng—चित्तिदार लिनसेंग (मंस), मांस।
आकार—लम्बाई में नकुल की भांति एवं ऊंचाई में पालतू बिल्ली से छोटा।
लक्षण—लम्बे शरीर पर हल्के रंग के छोटे फर के बीच-बीच में गहरे धब्बे फैले होते हैं। यह वृक्ष पर कुशलता पूर्वक चढ़ने वाला चतुर शिकारी प्राणी है। हिमालय वासी इसे मांस के नाम से जानते हैं। इसका सिर नोकीला, हाथ-पैर छोटे तथा पूंछ लम्बी होती है, जिसमें आठ से दस तक गहरे रंग के घेरे होते हैं।
विवरण—पहाड़ी क्षेत्रों एवं हिमालय के जंगलों में पाया जाने वाला यह प्राणी भूमि पर पेट के बल रेंग कर अपने शिकार पर आक्रमण करता है। चूंकि यह बहुत पतला होता है, इसलिए इसे गलती से प्रायः भारी शरीर वाला जहरीला सर्प समझ लिया जाता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—भारत के संकटग्रस्त वन्य प्राणी, Man and Animals]

मंसकच्छभ [मांसकच्छप] प्रज्ञा. 1/57
Leathery, Trunk Turtle—चीमड़ कछुआ, मांस बहुल कच्छप।
आकार—त्रिकोणाकार शरीर वाला।
लक्षण—शरीर का ऊपरी भाग-केरोपेस, चिकना और रबर जैसा होता है, जिसमें कुछ लम्बाई में उभरी हुई रेखाएं होती हैं। पैरों का फैलाव 10 फुट तक तथा गर्दन भारी होती है। क्लिपर के आगे का जोड़ा लंबा और तिकोना होता है। जबकि पीछे का जोड़ा चौड़ा और पूंछ से मिला होता है। शरीर का रंग सामान्यतः सलेटी काला सफेद धब्बे युक्त होता है। नीचे का भाग हल्का गुलाबी तथा कहीं-कहीं सफेद और काला होता है।
विवरण—हिंद महासागर में पाया जाने वाला यह कच्छप 400 से 700 k.g. तक होता है। इतना भारी होते हुए भी यह तैरने में अति कुशल तथा ताकतवर होता है। केवल अंडे देने के लिए ही पृथ्वी पर आता है।
शेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—कच्छप

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मक्कड़ [मर्कट] आ. चू. 1/2
Monkey—बंदर
देखें—कवि (कपि)

मक्कड़ा [मर्कटा] आ.चू. 1/2 निसि. 7/75
Spider—मकड़ी
देखें—कोली (मकड़ी)

मक्कोड़ग [मक्कोडग] आ.चू. पृ. 290
A Big black Ant.—मकोड़ा, चींटा।
आकार—चींटी से बड़ा।
लक्षण—चींटी की अपेक्षा इनके जबड़े बड़े एवं मजबूत होते हैं। कई बार ये प्राणी के शरीर को इतनी तेजी से जबड़ों के द्वारा पकड़ लेते हैं कि छुड़ाने पर नहीं छूटते। अपितु दो टुकड़े हो जाते हैं।
विवरण—इनकी अनेक प्रजातियां पायी जाती हैं। इनकी आदत भी चींटियों से काफी मिलती-जुलती है।
(शेष विवरण के लिए देखें—कीड़ी)

मगर [मकर] प्रज्ञा. 1/59
Alligator—मगरमच्छ
आकार—लगभग 3 मी. से 10 मी. लम्बा सरीसृप प्राणी।
लक्षण—शरीर एक प्रकार की मोटी खाल से ढका होता है, जिस पर चौकोर खाने-खाने से कटे रहते हैं। सिर बड़ा और चपटा। जबड़े मजबूत और तेज दांतों की पंक्ति वाले। पूंछ लम्बी और पैर छोटे।
विवरण—यह नदियों, झीलों और समुद्रों में पाया जाने

वाला एक जलचर प्राणी है। भारत आदि गर्म देशों में इसकी अनेक जातियां पाई जाती हैं। सभी प्रकार के मगरमच्छों की बनावट विशेष रूप से जलीय जीवन के अनुकूल होती है। नथुने और आंखें ऊपर की ओर काफी उभरी रहती हैं। आंखों के ऊपर एक विशेष प्रकार का पर्दा सा लगा रहता है, जिसे यह पानी के भीतर जाते ही चढ़ा लेता है। इसमें सूंघने की शक्ति, दृष्टि और सुनने की शक्ति बहुत तीव्र होती है। पाचन शक्ति इतनी तीव्र होती है कि निगले हुए जानवरों की हड्डियां तक को गला डालती है। अपने हाजमें को तेज करने के लिए यह अक्सर पत्थर के गोल-मटोल टुकड़ों को निगल जाता है।
मछलियों की तरह ये पानी के भीतर श्वास नहीं लेते और इन्हें श्वास लेने के लिए थोड़ी-थोड़ी देर बाद सतह पर आना पड़ता है लेकिन आवश्यकता होने पर ये पांच छह घंटे पानी के भीतर रह सकते हैं। ये अपने अण्डे किनारे की रेत में गड्ढे खोद कर देते हैं और घास-पात, मिट्टी या बालू से ढक देते हैं। इनके दांत जीवन भर गिरते रहते हैं और उनके स्थान पर नए दांत आ जाते हैं।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—जानवरों की दुनिया, Indian Reptiles]

मग्गरिमच्छ [मकरीमत्स्य] प्रज्ञा. 1/56
Octopus—अष्टापद, आठ भुजाओं वाला जलीय जंतु।
आकार—भुजाएं फैलाने पर एक सिरे से दूसरे सिरे की लम्बाई 20 फीट तक।
लक्षण—आक्टोपस की आठ भुजाएं होती हैं जिनमें दो कंटीली पंक्तियां बनी होती हैं। इनसे यह जानवरों को खाने के लिए पकड़ता है।

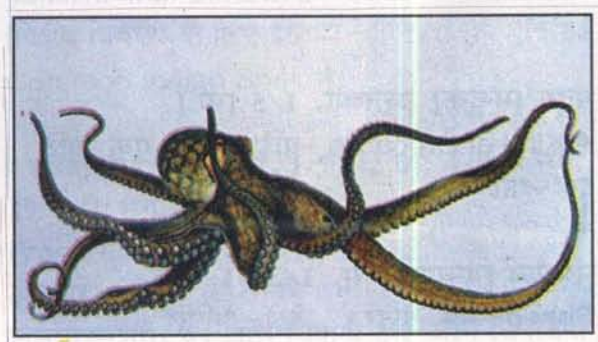

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवरण—विशेषकर गरम समुद्रों में पाया जाने वाला यह प्राणी दिन में किसी दरार आदि में छिपा पड़ा रहता है। खतरे में फंस जाने पर शरीर से स्याही के रंग का तरल पदार्थ निकालता है और अपनी रक्षा करता है। यह पीछे की ओर भी चल सकता है। प्रशान्त महासागर में पाया जाने वाला आक्टोपस मनुष्य, भैंस आदि को भी अपनी मजबूत भुजाओं से पकड़ लेता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Nature, सचित्र विश्व कोश]

मग्गुक [मद्गुक] सू. 1/11/27
Snake-bird or Darter—जल काक, पनडुबी, बानकी
देखें—मंगु

मच्छ [मत्स्य] प्रज्ञा. 1/55
Fish—मत्स्य देखें—झस

मच्छिया [मक्षिका] प्रज्ञा. 1/51 ज्ञाता. 1/16/29 प्रश्नव्या. 1/32 प्रज्ञा. 1/51
Fly Bee—मक्खी
आकार—1 मि.मी. से 8-9 मि.मी. तक लम्बी।
लक्षण—शरीर का रंग काले से लेकर कत्थई भूरा तक। गंदे स्थानों पर रहना इनका स्वभाव है।
विवरण—इनकी भारत में अनेक किस्में पाई जाती हैं। कुछ मक्खियां बहुत खतरनाक होती हैं। वे दूसरी मक्खियों को पकड़कर उनका खून पीती हैं। कुछ मक्खियां परजीवी होती हैं जो पशु आदि के शरीर से अपना जीवन निर्वाह करती हैं।

मज्जार [मार्जार] प्रश्नव्या. 1/6 भ. 21/20 ज्ञाता. 1/8/42
Cat—बिल्ली देखें—कुलल

मट्ठमगर [मृष्ठमकर] प्रज्ञा. 1/59
A Kind of Alligator, Crocodile Porasis Snider—मृष्ठमकर (मगरमच्छ की एक जाति), नदी-मुख मगर।
आकार—प्रायः 7 से 10 मी. लम्बा।
लक्षण—शरीर श्रृंगी खोलयुक्त अस्थि-पट्टियों से ढका होता है जिनसे यह प्राणी गहरे जैतूनी रंग का दिखता है। पूंछ के ऊपरी हिस्से के किनारे आरी के समान दिखाई देते हैं।
विवरण—नदी मुख या मुहाना मगर सभी मगरों में बड़ा है और तटीय गरान (मेंग्रोव) नदी मुखों आदि में रहता है। दांत इतने बड़े होते हैं कि मुंह बंद होने पर भी दिखाई देते हैं। नदीमुख मगर भारत के पूर्वी तट तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूहों में पाए जाते हैं।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—मगर]

मयणसाला [मयणसाला, मदनशलाका] ज्ञाता. 1/5/3, प्रश्नव्या. 1/9 औप. 6 जीवा. 3/275
Bank Myna— मैना, गंगामैना, बरादमैना।
आकार—सामान्य मैना की भांति।
लक्षण—लगभग 21 से.मी. लम्बा पीला, नीला और धूसर रंग का पक्षी। सिर, गाल तथा ठोढ़ी का रंग काला। चोंच का रंग नारंगी। टांगें तथा नाखून भी नारंगी-पीले होते हैं। सिर पर कुछ लम्बे काले बाल होते हैं।

विवरण—भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश आदि में पाया जाने वाला यह पक्षी चलता कम और फुदकता अधिक है। यह स्टर्निडी परिवार का पक्षी है। केवल भारत में ही इसकी 18 प्रजातियां पाई जाती हैं। सामान्य मैना से कुछ हल्की बोली बोलने वाला यह प्लेटफार्म, मानव वस्ती के नजदीक रहना पसंद करता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मयूर [मयूर] ठाणं 7/41/1 ज्ञाता. 1/3/27
Common Peafowl—मोर, मयूर।
देखें—ढेलियालग

मरुयवसभ [मरुतवृषभ] प्रश्नव्या. 4/4
Ox—बैल देखें—आवल्ल

मसगा [मशका] प्रज्ञा. 1/51 उत्त. 36/146
Masaquito—मच्छर
आकार—लगभग .01 M.M. से 1 इंच तक लम्बा।
लक्षण—इनके शरीर का रंग सफेद काला होता है। मुंह के आगे एक डंक-सा होता है, जिसके द्वारा यह खून चूसता है।
विवरण—विश्व में इनकी सैकड़ों प्रजातियां पाई जाती हैं। नर-मच्छर पौधों या फलों के रस पर अपना जीवन निर्वाह करते हैं। मादा-मच्छर प्रायः रक्त पीकर ही जीती है। अनेक निरीक्षणों से यह सिद्ध किया गया कि मच्छर गहरे रंग पसंद करते हैं। रजस्वला महिला को नहीं काटते। मीठे की तरफ आकर्षित होते हैं। इनमें नए और विपरीत वातावरण को अनुकूल बनाने की जबर्दस्त क्षमता होती है। अफ्रीका का 'एनांफिलीज गैम्बिए' मच्छर मलेरिया फैलाने वाली एक प्रमुख प्रजाति है। ये इन्सान को काटते हैं और खून चूसते हैं। इनकी कुछ प्रजातियां भयंकर रोग फैलाती हैं।

मसूर [मसूर] प्रज्ञा. 1/79
Malabar Whistling Thrush—कस्तूरा, मसूरिया, माइऔफौनियस।

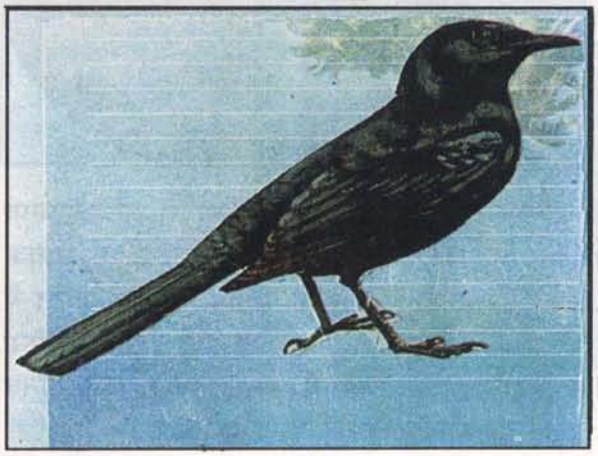

आकार—मैना से बड़ा तथा कबूतर से कुछ छोटा।
लक्षण—ललाट पर नीला-काला थ्रश तथा स्कंध पर कौबल्ट की तरह चमकते नीले धब्बे। चोंच तथा टांगों का रंग-काला। नर-मादा दोनों एक से प्रतीत होते हैं।
विवरण—भारत में पाए जाने वाला यह पक्षी दिन में गाना गाने वाले पक्षियों में अग्रणी है। केवल उड़ते समय क्री-ई जैसी ध्वनि उत्पन्न करता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—भारत के पक्षी]

महिस [महिष] ज्ञाता. 1/2/7 उवा. 1/11 प्रश्नव्या. 1/6
Buffalo—भैंस
आकार—जंगली भैंस की अपेक्षा कुछ छोटी।
लक्षण—अधिकतर भैंसों के शरीर का रंग काला तथा कुछ काले भूरे रंग की भी होती हैं। सिर के ऊपर दो सींग होते हैं, जिनकी बनावट जातियों के आधार पर विकसित होती है।
विवरण—विश्व भर में भैंसों की अनेक प्रजातियां पाई

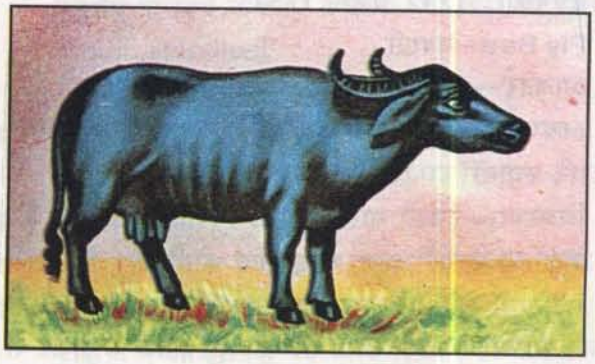

जाती हैं। हरियाणा में पाई जाने वाली मूर्रा-भैंस 30 kg.-50kg. तक दूध देती है। इन भैंसों के सींग छोटे, मुड़े हुए एवं सुन्दर होते हैं।

महिसी [महिषी] आ. चू. 1/52 सू. 2/2/19 ठा. 8/10 भग. 2/94
Buffalo—भैंस देखें—महिस

महुयर [मधुकर] ज्ञाता. 1/1/33 जम्बू. 2/12
A Black Bee—भौंरा देखें—छप्पय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महुयर [मधुकर] प्रज्ञा. 21 ज्ञाता. 1/1/33 जम्बू. 2/12

Purple Sunbird—शकर खोरा।

देखें—भिंग

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 114]

महुयर [मधुकर] प्रज्ञा. 21 ज्ञाता. 1/1/33 जम्बू. 2/12

Honey bee—मधुमक्खी

आकार—लगभग 1/2 इंच से 1 इंच लम्बा।

लक्षण—शरीर का रंग काला-लाल, जिस पर आर-पार रेखाएं होती हैं। पूंछ के भाग वाले स्थान पर एक डंक होता है।

विवरण—शहद के छत्तों में परिवार या कालोनी बना कर रहने वाली मधुमक्खियां सामाजिक प्राणी हैं। एक-एक छत्ते में 75000 या इससे भी अधिक मधुमक्खियां रहती हैं। हर छत्ते में मजदूर, सिपाही, नर, मादा एवं रानी मक्खी होती है। अंडे देने का कार्य केवल रानी मक्खी ही करती है। मधुमक्खियां अपनी साथियों को विशेष नृत्य द्वारा शहद या पराग पाने की सूचना देती हैं। ढेर सारा शहद मिलने पर ये मंडल नृत्य (राउंड डांस) करती हैं। आपस में रगड़ना या मिलना पराग पाने का सूचक है। इनके और सांप के जहर में कई समानताएं हैं। दोनों से ही श्वसन तंत्र को लकवा मार जाता हैं, जिससे मौत हो सकती है। हालांकि मधुमक्खी के शुष्क जहर में मौजूद 0.4 प्रतिशत मैग्नेशियम फास्फेट बड़ा रोग नाशक होता है।

महोरग [महोरग] प्रश्नव्या. 1/7 प्रज्ञा. 1/68 जम्बू. 3/115

Very Large Snake—एक विशाल सर्प, महोरग।

आकार—एक अंगुल से अनेक हजार योजन तक लम्बा।

विवरण—मनुष्य क्षेत्र से बाहर के द्वीप समुद्रों में उत्पन्न होने वाला यह सर्प जल, स्थल—दोनों में विचरण करता है।

माइवाइया [मातृवाहका] प्रज्ञा. 1/49 उत्त. 3/128

Matri-Vahaka—मातृवाहक, चुड़ैल (गुज.)

आकार—केंचुए के समान।

लक्षण—शरीर का रंग मटमैला।

विवरण—यह गुजरात में अधिक पाया जाता है। स्थानीय भाषा में इसे मातृवाहक, चुड़ैल आदि कहते हैं।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—जीव-विचार-प्रकरण]

मायंग, मातंग [मातंग] औ. 26 जी. 3/118 ठा. 10/113/1 विवा. 1/4/33

Elephant—हाथी

देखें—कुंजर (हाथी)

मालि [मालिन्] प्रज्ञा. 1/71

A Kind of Venomous Black Snake—मांडलीसर्प की एक जाति।

देखें—मंडलि (मण्डलिन्)

मालूया [मालुका] प्रज्ञा. 1/50 उत्त. 36/137

Lipaphis erysimi kaltenbach—मालूका, माहू

आकार—छोटे (लगभग 2 M.M.) और सामान्यतया गोलाकार कीट।

लक्षण—मुखांग वेधक और चूसने वाले होते हैं। इनकी पीठ पर नितंब प्रदेश से निकली एक जोड़ी नलिका जैसी बनावट मिलती है जिसे साइफन (नाल), कोर्निकल (छोटे सींग) आदि से जाना जाता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवरण—संसार भर में इनकी सैकड़ों प्रजातियां पाई जाती हैं। इनमें रस चूसने की क्षमता बहुत अधिक होती है। यह अपनी सीरिंज जैसी अधस्त्वचीय सूंड को पौधे के कोमल ऊतकों में घुसाकर उसमें से पौधों का रस चूसता रहता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—फसल पीड़क-कीट]

माहए [मागध] उत्त. 36/148

A Kind of Insect—कीट की एक जाति

देखें—कीड (कीट)

मिय [मृग] सू. 1/4/9 ठाणं. 4/236 प्रश्नव्या. 1/6

Deer—सामान्य हिरण

देखें—कुरंग

मियवति [मृगपति] प्रश्नव्या. 4/4

Lion—सिंह

देखें—सीह

मुइंगा [मुइंगा] ओनि. 558

Ant—चींटी

देखें—कीड़ी

मुगुंस [मुगुंस] उवा. 2/12 प्रश्नव्या. 1/8

Chinchila—मंगूसा, चिंचिला

देखें—मंगुस

मुद्धय [मुर्धज] प्रज्ञा. 1/58 [पा.]

A Kind of Crocodile—घड़ियाल की एक जाति।

देखें—गाह

मूसग [मूषक] सू. 2/3/80 प्रज्ञा. 1/76

Mouse, Rat—चूहा

देखें—उंदुर (चूहा)

मेंढ़ [मेंढ्र] ठाणं. 4/323

Sheep—भेड़, गाडर, मेष देखें—अमिल

मेलिमिंद [मेलिमिंद] प्रज्ञा. 1/70 [पा.]

A Kind of Viper—दुबोइया सर्प की एक जाति, मेलिदा, हरागोनाश, कन्नाडीविरियम, कतकाइया नाग (उड़िया)।

आकार—3-4 फीट तक लम्बा।

लक्षण—शरीर का रंग हरा से लेकर गहरा भूरा तक। कई सर्पों के पीली-सफेद आड़ी धारियां भी होती हैं। पंबू पिट पाइपर नामक सर्प का मुख चौड़ा होने के कारण दो मुख प्रतीत होते हैं।

विवरण—विश्व-भर में इनकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। जैसे पंबू पिट पाइपर, रसल्स पाइपर, सॉस्केल्ड पाइपर आदि। इनकी सभी प्रजातियां विष वाली होती हैं। पंबू पिट पाइपर क्रोधित होने पर अपना फन उठाकर दुश्मन पर फुर्ती के साथ आक्रमण करता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Common Indian Snake, Indian Reptiles]

मेसरा [मेसरा] प्रज्ञा. 1/79

Black Tailed Godwit—गुडेरा, जंगराल, खग, मालगुझा, गाडविल, मेसरा।

आंकार—तीतर से कुछ बड़ा।

लक्षण—शरीर का रंग भूरा और चितकबरा। चोंच ऊपर की ओर थोड़ी मुड़ी हुई तथा नाजुक। उड़ते समय सफेद पूंछ के सिरे पर चौड़ी तथा काली-आड़ी पट्टी दिखाई देती है। सिर, ग्रीवा तथा वक्ष का रंग मोरचाई लाल (रस्टीरेड) होता है।

विवरण—विश्व में इनकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। खारी तथा अलवणीय जलों वाले कच्छ स्थलों में बहुधा काफी सघन टोलियों में अन्य अलग चिड़ियों के साथ देखी जाती हैं। हमेशा सतर्क रहने और प्रबल उड़ान के कारण लोग इसे आखेट पक्षी के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाम से पहचानते हैं।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य–भारत के पक्षी, सचित्र विश्व कोश]

मोत्तिय [मोक्तिक] प्रज्ञा. 1/49 जम्बू. 2/24
A peart Oyster–मूत्रिक, सीप की एक जाति
देखें–सीप

रायहंस [राजहंस] प्रज्ञा. 1/79 भग. 11/133 ज्ञाता. 1/1/19
Flamingo–राजहंस, बोग हंस, श्रेष्ठ हंस, छाराज बागो।
आकार–घरेलू राजहंस खड़ा होने पर चार फुट ऊंचा।
लक्षण–लम्बी टांगें और लम्बी गर्दन, शरीर का रंग सफेद। हुक्के के सामान मुड़ी हुई गुलाबी रंग की चोंच। नर-मादा एक जैसे होते हैं।
विवरण–राजहंस हंसों में सबसे बड़े आकार की जाति है। इनका भोजन, कृमि, कीट, लार्वा, कच्छ पौधे के बीज आदि हैं। इसका आदि निवास स्थान हिमालय की मानसरोवर झील माना जाता है। आयु (Eagle) उकाब के बराबर। न्याय के प्रसंग में हंस की उपमा प्रसिद्ध है–न्याय में हंसनि ज्यों विलगावहु। दूध को दूध और पानी को पानी। इस उपमा को वैज्ञानिक स्तर पर अभी तक सिद्ध नहीं किया जा सका है।

रिट्ठग [रिष्टक] उत्त. 34/4
Jungle Crow–जंगली कौवा, बड़ा काक, ढिंकड़ा, द्रोण काक, डाल कौवा। देखें–ढंक

रिसह [ऋषभ] प्रश्नव्या 4/7
Ox, Bull–बैल, सांड़। देखें–आवल्ल

रुरु [रुरु] प्रश्नव्या. 1/6 प्रज्ञा. 1/64
A species of antelope, Black Deer–काला हिरण, रूरू। देखें–किण्हमिय (कृष्णमृग)
रोज्झ [रोज्झ] प्रज्ञा. 1/64 उत्त. 19/56
Blue Bull–नीलगाय, रोझ।
विमर्श : नालन्दा हिन्दी कोश, माणक हिन्दी कोश आदि में रोज्झ का अर्थ नीलगाय किया है। जबकि प्रज्ञापना 1/64 में गवय के बाद रोज्झ शब्द आया है। गवय का अर्थ नीलगाय होता है। अतः रोज्झ नीलगाय की ही एक प्रजाति होनी चाहिए।
देखें–गवय

रोहिय [रोहिय] प्रश्नव्या 1/6
Blue Bull–नील गाय, रोझ।
विमर्श : अल्पपरिचित शब्द कोश में रोहित शब्द का अर्थ रोज्झ, कैयदेवनिघंटु में छोटा सियार तथा ऋग्वेद 1/84/10 में लाल अश्व किया है।
देखें–गवय

रोहियमच्छ [रोहितमत्स्य] प्रज्ञा. 1/56
Rohit Fish–रोहित मछली, रोहु मछली, बाम मछली।
आकार–3-4 फीट लम्बी सांप के तुल्य प्रतीत होने वाली मछली।
लक्षण–शरीर सेहर रहित तथा रंग पिलद्दोंह भूरा। हांगरी मछली के तुल्य गलफड़ न होकर कई शिगाफ-से कटे होते हैं। शरीर से एक प्रकार की बिजली का करेंट निकालकर अपने शिकार को बेहोश कर देती है।
विवरण–बाम-मछली अपने अंडे अंटलांटिक आदि समुद्रों में देकर नदियों और तालाबों में लोट जाती है और फिर अंडे देने के लिए हजारों मील चलकर फिर समुद्र के उसी स्थान पर आती है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य–रेंगने वाले जीव, राजनिघंटु-मांसादि वर्ग]

रोहिणीय [रोहिणीक] प्रज्ञा. 1/50
A Kind of Sykids–कीट की एक जाति।
देखें–ओवइया

लंभणमच्छ [लंभणमत्स्य] प्रज्ञा. 1/56
Eel Fish–ईल मछली, लंभणमत्स्य
आकार–25 मी. लम्बा जलचर-प्राणी।
लक्षण–शरीर का रंग काला, सिर गोलाकार। सिर की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लम्बाई, चौड़ाई 2 1/2मी.। शरीर भूरे रंग के छल्लों से युक्त।

विवरण—महासमुद्रों में पायी जाने वाली इस मछली को सर्वप्रथम पूर्वी आस्ट्रेलिया के पास 1964 में फ्रेंच के प्राणी शास्त्रज्ञ रोबर ली सेरेक ने देखा। इसकी त्वचा खुरदरी और बिना शिल्क वाली होती है। बिना दांत वाला मुंह सफेद रंग का। आंखों का रंग हल्का-हरा। पूरे शरीर का व्यास 70-75 C.M. होता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Man and Animals, रेंगने वाले जीव]

लंभणमच्छ [लंभणमत्स्य] प्रज्ञा. 1/56

Sound Fish—ध्वनि करने वाली मछली, साही मछली, लंभणमछली

आकार—कई फीट लम्बा।

लक्षण—यह मछली गौरैया मछली की भांति अपना शरीर फुला लेती है। इसके शरीर पर साही की तरह तेज कांटे रहते हैं। जो शरीर के फूलने पर खड़े हो जाते हैं।

विवरण—गौरैया मछली की भांति अजीब सूरत की यह मछली समुद्रों में पाई जाती है। जिसे साही, आवाज करने वाली मछली, लंभग मत्स्य आदि नामों से जाना जाता है। इसके शरीर पर कांटे साही की तरह लगते हैं। शरीर फूल जाने पर यह इधर-उधर जाने में असमर्थ होती है, लेकिन ऐसी दशा में किसी दुश्मन का इस पर

हमला करने का साहस नहीं होता। जब दुश्मनों का खतरा दूर हो जाता है तब साही मछली अपने भीतर की हवा को मुंह और गलफड़ों से निकाल देती है। हवा निकलते समय बड़ी तेज आवाज होती है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—रेंगने वाले जीव, जानवरों की दुनिया]

लुकंडी [लुकंडी] प्रज्ञा. टी.प. 254

Fox—लोमड़ी देखें—कोकंतिय

लालाविस [लालाविष] प्रज्ञा. 1/70

A Snake Having A drivelpoison, Ringhal—लालविष (लार में विष वाले)

आकार—लगभग 8 फीट से 13 फीट तक लम्बा।

लक्षण—इन सर्पों की थूथन आगे की ओर निकली रहती है। शरीर का रंग काला या हल्का भूरा होता है। क्रोधावस्था में फुफकारों के साथ विष थूकता है।

विवरण—एकमात्र अफ्रीका में पाए जाने वाला यह सर्प अत्यन्त खतरनाक एवं विषधारी होता है। इसमें दो विशेषताएं होती हैं- (1) क्रोध करने पर यह मुंह से फुंफकारों के साथ ऐसी तेजी से विष थूकने लगता है कि उसकी बौछार 2 1/2-3 हाथ तक जाती है (2) यह अन्य नागों के समान अंडे नहीं, बच्चे देता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—जानवरों की दुनिया, Snakes of Southern Africa]

लावग [लावक] सू. 2/2/6, प्रज्ञा. 1/79 दसा. 6/3

Indian or yellow legged button Quail—लावा, पीतपद लाविका।

आकार—तीतर के आकार वाला रोम पक्षी।

लक्षण—चमकती हुई पीली टांगें और चोंच। ग्रीवा का रंग नारंगी बादामी। शरीर की लम्बाई लगभग 10 इंच।

विवरण—इसका भोजन बीज, कीड़े-मकोड़े आदि हैं। यूरोप में पाया जाने वाला लार्वा सर्दियों के दिनों में अफ्रीका चला जाता है, सर्दियों के बाद पुनः लौट आता है। इसकी आवाज देर तक सुनाई देने वाली नगाड़े की भांति होती है।

लिक्ख [लिक्ष] जम्बू. 2/6 अनु. 395, 399

Anit, or A Tiny louse—लिक्ष देखें—जूया

लिक्ख [लिक्ष] आ.चू. 13/38 भग. 6/125, जम्बू. 2/6, 40

Lesser Florican—लिख, खरमोर।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आकार—मुर्गे के समान।

लक्षण—शरीर का रंग बलुआ पाण्डु तथा काले धब्बे युक्त। गर्दन व टांगें लम्बी। नर पक्षी के पीठ पर मुड़े हुए पिच्छक नहीं होते। पंखों के अधिकांश भाग पर सफेद आभा।

विवरण—बड़ी-बड़ी घास वाले देहाती क्षेत्रों में रहने वाला यह पक्षी हुक्ना पक्षी की तरह उड़ान भरता है परन्तु जल्दी-जल्दी पंख फड़फाड़ाते समय इसकी

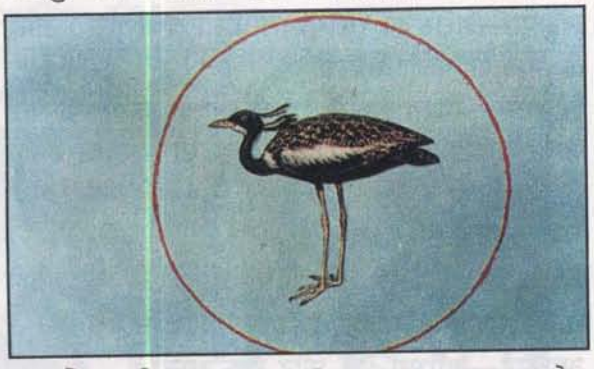

आकृति लपविंग की छाया के समान प्रतीत होती है। नर पक्षी हर बार कूदते समय कंठ से कुछ कर्कश-सी लघु ध्वनि करता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave-330]

लोट्टिया [लोट्टिया] ज्ञाता. 1/1/157

Young Female elephant—हाथी की छोटी बच्ची

देखें—कुंजर

लोमठिका [लोमठिका] जीव.टी.प. 38

Fox—लोमड़ी देखें—कोकंतिय

लोहितपत्त [लोहितपत्र] प्रज्ञा. 1/51

Butterfly of Red wings—लोहित पंख वाली तितली

देखें—किण्हपत्त

वइउल [व्यतिकुल] प्रज्ञा. 1/71

A Kind of Boya—बौआ, विटपिन सर्प, वाइनसर्प, व्यक्ति सर्प, गूबरा, अंकोरा (बंगाली) मनीयर, रुकै (मराठी), कोमबेरी-मूरकेन (तमिल)।

आकार—1-4 फीट तक लम्बा।

लक्षण—शरीर का रंग चमकीला हरा से गहरा लाल

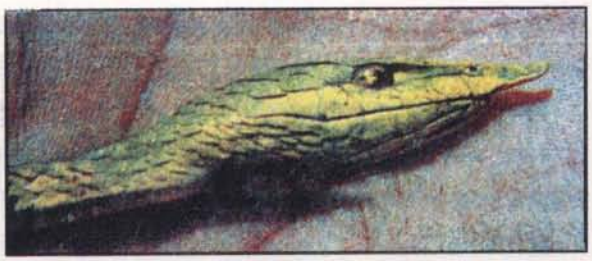

तक होता है, जिस पर सफेद और शबता रंग के सुन्दर चित्र बने होते हैं।

विवरण—इनकी अनेक प्रजातियां जंगलों में वृक्षों के ऊपर पाई जाती हैं। मादा सर्प अपने बच्चे धरती पर देती है। बच्चे जन्म लेने के बाद वृक्ष पर चढ़ जाते हैं।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—जानवरों की दुनिया, Common Indian Snake]

वंजुलग [वन्जुलग] प्रज्ञा. 1/79 ठाणं 10/82/1

Little Grebe, or Dabchick—पनडुब्बी, लओकरी, बैजुलक।

आकार—कबूतर से कुछ बड़ा पुच्छहीन पक्षी।

लक्षण—शरीर का रंग-बादली। नीचे का भाग रेशमी सफेद तथा चोंच नुकीली।

विवरण—भारत, पाकिस्तान, लंका आदि देशों में पाया जाने वाला यह पक्षी कुशल तैराक तथा गोताखोर होता है। आहट सुनते ही झटपट पानी में इतनी सफाई से घुस जाता है कि तरंग-चिन्ह भी दिखाई नहीं देते। झीलों, नदियों आदि में यह अपने छोटे पंखों को जल्दी-जल्दी फड़फड़ाते हुए कुछ दौड़ता, कुछ उड़ता और एक-दूसरे का पीछा करता रहता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 462-63]

वग्गुली [वल्गुली] सू. 1/4/35 भग. 13/152, प्रज्ञा. 1/78

Great Stone Plover—बड़ा काखानाक, महान पाषाण-प्लावर।

आकार—घरेलू मुर्गे से कुछ छोटा।

लक्षण—शरीर का रंग ऊपर से भूरा तथा नीचे से सफेद होता है। चोंच मजबूत तथा ऊपर की ओर मुड़ी हुई।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऐनक के समान बड़ी विशाल पीली आंखें।
विवरण—विश्व में इसकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। यह प्रायः सांध्य एवं रात्रिचर प्राणी है। तेज धावक के साथ-साथ अच्छा तैराक भी होता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave-39]

वग्गुरिया [वग्गुरिका] ठाणं. 7/43
Deer—हिरण
देखें—कुरंग (हिरण)

वग्घ [व्याघ्र] प्रज्ञा. 1/66, 11/21 जम्बू. 2/36, 136
Tiger—बाघ
आकार—सिंह से कुछ बड़ा।
लक्षण—शरीर का रंग लालिमा लिए हुए पीला होता

है, जिस पर आड़ी-तिरछी काली धारियां होती हैं। पैरों के पंजे मजबूत एवं नुकीले होते हैं।
विवरण—भारत, एशिया और आस-पास के द्वीपों में पाया जाने वाला यह प्राणी रात को ही शिकार के लिए निकलता है। इसकी सूंघने की शक्ति और दृष्टि कमजोर होती है, पर सुनने की शक्ति बहुत ही अच्छी होती है। यह चुपचाप बिना दिखे, बिना आवाज किए तथा बिना गंध के शिकार के पास तक पहुंचता है और छलांग लगाकर उस पर टूट पड़ता है।

वच्छग [वत्सक] दस. 5/22 सू. 2/2/69
Calf—बछड़ा देखें—गाव (गौ)

वट्टग [बर्तक] सू. 2/2/18 प्रश्नव्या. 1/9, 2/12 विवा. 1/7/16
Common or grey Quail—बटेर, घगुस बटेर, घूसर बटेर
आकार—लगभग तीतर के समान मांसल शरीर वाला।
लक्षण—शरीर का रंग धूमिल-पीला तथा भूरा। ऊपर के भाग में पीली धारियां।
विवरण—विश्व भर में इसकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। इसकी उड़ान तेज तथा सीधी होती है।

वड [वट] प्रज्ञा. 1/56
Flying fox, Large Bat fish—लोमड़ी के आकार की मछली, सकुची मछली, बड़ी चमगादड़ मछली।
आकार—लगभग 20 फीट तक लम्बा।
लक्षण—इन मत्स्यों की बड़ी-बड़ी डेविलरें होती हैं जो देखने में चमगादड़ सी प्रतीत होती हैं। लम्बी दुम पर एक बड़ा तेज कांटा रहता है।

विवरण—समुद्र में इनकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। कुछ मत्स्यों की शक्ल चमगादड़ जैसी, कुछ की लोमड़ी की भांति, कुछ की पतंग जैसी होती है। शरीर का वजन 1/2 टन तक होता है। पूंछ लम्बी एवं एक या दो कांटे युक्त होती है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Man and animals, रेंगने वाले जीव, जानवरों की दुनिया]

वडगर [वटकर] प्रज्ञा. 1/56 [पा.]
A Kind of Large bat fish—चमगादड़ मछली की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक जाति, सकुची मछली की एक जाति।
देखें—वड (वट)

वरतुरग [वरतुरग] प्रश्नव्या. 4/7
A Well bred Horse—श्रेष्ठ घोड़ा
देखें—आइण्ण (आकीर्ण)

वराडग [वराटक] उत्त. 36/129 प्रज्ञा. 1/49
CowRie—कौड़ी
आकार—नीचे से चपटी एवं ऊपर से कुछ गोलाई लिए चिकनी सतह।

लक्षण—नीचे का भाग सीधा एवं कटा हुआ। जिसके माध्यम से यह चलता है।
विवरण—इसका मुलायम शरीर कठोर कवच से ढका होता है। भारतीय एवं अन्य समुद्रों में इसकी सैकड़ों प्रजातियां पाई जाती हैं।

वराह [वराह] प्रज्ञा. 1/64 अनु. 355 दसा. 6/3
Pig—सूअर देखें—कोल

वराहि [वराही] प्रश्नव्या. 1/7
A kind of Cobra—नाग की एक जाति, दृष्टि विष-सर्प। देखें—दिट्ठिविस

वरेल्लग [वरेल्लग] प्रज्ञा. 1/79
Black Capped King Fisher—कौरिल्ला, किलकिला, वरेल्लग
आकार—मैना और कबूतर के बीच के आकार का पक्षी।
लक्षण—शरीर पर सुन्दर पोशाक-सी। चोंच लम्बी और नुकीली। सिर, गर्दन और नीचे का भाग चाकलेटी भूरा।
विवरण—विश्व भर में इसकी 87 प्रजातियां पाई जाती हैं। शरीर का आकार 5 से 18 इंच तक होता है। शिकार करते समय यह पानी के ऊपर हवा में एक ही जगह काफी देर तक पंख मारकर ठहरे रहता है।

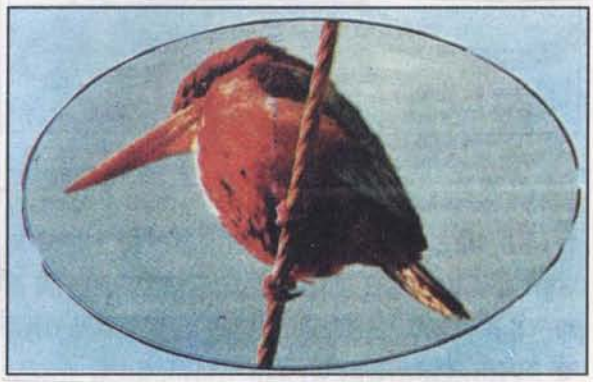

नीचे पानी में मछली देखते ही उस पर कूद पड़ता है। उड़ते समय जोर से 'किल-किल' जैसी ध्वनि निकालता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 352]

वसह [वृषभ] उत्त. 11/19 अनु. 353 दसा. 10/15
Ox—बैल देखें—आवल्ल

वाउप्पइय [वातोत्पतिक] प्रश्नव्या. 1/8
Flying Dragon—उड़ने वाली छिपकली।
आकार—सामान्य छिपकली से कुछ लम्बा।
लक्षण—शरीर का रंग गहरा-भूरा, जिस पर काले धब्बे तथा धारियां होती हैं। पंखों का रंग गहरा-नारंगी, उनमें कई काली धारियां होती हैं। शरीर की लम्बाई लगभग 10 इंच, पूंछ की लम्बाई 5 इंच, पिछली छः-सात पसलियां धड़ के बाहर दोनों ओर खाल में निकली रहती हैं। इन पसलियों के बीच की झिल्ली उड़ते समय पैराशूट की भांति फैल जाती है, जिसके द्वारा इनको उड़ने में सहयोग प्राप्त होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवरण—मद्रास, मलाया प्रायद्वीप, जावा, सुमात्रा, वोर्निया द्वीपों के घने जंगलों में पाया जाने वाला यह प्राणी उड़ते-उड़ते ही वायु में पतंगों को पकड़ लेता है

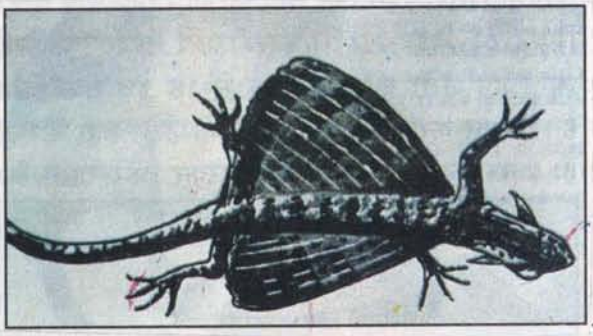

और एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर आसानी से पहुंच जाता है। 50 फीट से भी अधिक ऊंचाई पर उड़ सकता है। उड़ने के कारण इसे उत्पतिक छिपकली के नाम से भी जानते हैं। तितली जैसे रंगीन पंख होने के कारण शत्रुओं से अपनी रक्षा आसानी से कर लेता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Indian Reptiles, विश्व के विचित्र जीव-जंतु]

वाणर [वानर] आ.चू. 15/28 विवा. 1/2/67
Monkey—बंदर
देखें—कवि (कपि)

वायस [वायस] आ. 9/4/10 आ.चू. 1/161 उवा. 7/50 प्रश्नव्या. 1/9
House Crow—कौवा, देसी कौआ।
देखें—काक

वारण [वारण] प्रश्नव्या. 4/7 औप. 19
Elephant—हाथी
देखें—कुंजर (हाथी)

वालग [व्यालक, वालग] भग. 11/138, जम्बू. 1/37 पर्युषणाकल्प—32, 42
Snake—सांप
देखें—अही

वास [वर्ष] प्रज्ञा. 1/49
Earth-Worm—केंचुआ
देखें—गण्डूयलग

वासीमुह [वासीमुख] उत्त. 36/128
Vasimukh—वासी मुख, वसुले के तुल्य मुंह वाला कीट।
आकार—लगभग 1-3 इंच तक लम्बा।
लक्षण—शरीर का रंग भूरा से लेकर हरा तक होता है। दूर से देखने पर शरीर पर कई छल्ले दिखाई देते हैं।
विवरण—इनकी कई प्रजातियां हैं, जैसे- Vasimukha, Curchlidlae (वासीमुख, कुर्कुलिमोनिडे) आदि। इन जीवों का मुख वसुला या छेनी के समान होता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—फसल पीड़क कीट, Nature, जीव-विचार-प्रकरण]

वाह [वाह] सू. 1/2/59 प्रश्नव्या. 1/20
Horse—घोड़ा
देखें—अस्स (अश्व)

विंछिए [वृश्चिक] उत्त. 36/147
Scorpion—बिच्छू
देखें—विच्छुत

विग [वृक] भग. 3/209 प्रश्नव्या. 1/6, जम्बू. 2/36
Walf—भेड़िया।
देखें—ईहागिम

विच्छुत [वृश्चिक] प्रज्ञा. 1/51
Scorpion—बिच्छु
आकार—लगभग दो इंच से 10 इंच तक लम्बाई। मकड़ी की प्रजाति का एक जन्तु।
लक्षण—इसकी आठ टांगें होती हैं। आगे की ओर दो चिमटे के समान अंग होते हैं जो इसे अपना शिकार पकड़ने में मदद करते हैं। पीछे की ओर पेट के हिस्से का बढ़ा हुआ लम्बा भाग होता है जिसका अन्त एक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डंक के रूप में होता है।

विवरण—बिच्छू की अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। यह सूखे क्षेत्रों, पानी, गोबर आदि तथा पथरीले स्थानों में पाया जाता है। रात्रि के समय भोजन के लिए सक्रिय

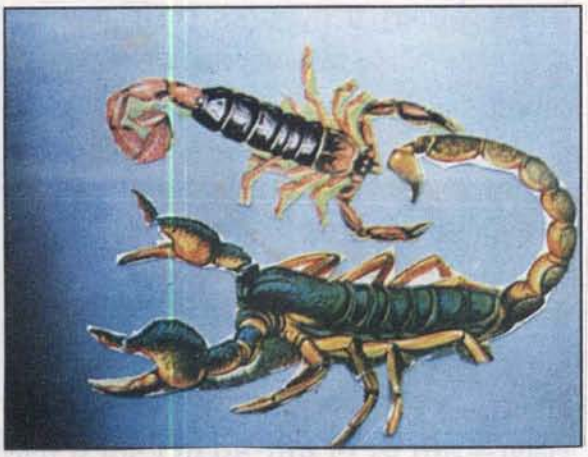

होता है तथा दिन में अपने स्थान पर छिपा रहता है। यह अपने डंक का उपयोग किसी विशेष परिस्थिति उत्पन्न होने पर ही करता है।

इसके डंक का विष मनुष्य के लिए तो इतना खतरनाक नहीं होता लेकिन अन्य जीवों के लिए बहुत घातक सिद्ध हो सकता है। बिच्छु जब मनुष्य को डंक मारता है तब वह डंक के माध्यम से काटे हुए स्थान पर विष छोड़ देता है। इसका विष ऐंठन तथा अस्थाई पक्षाघात भी ला सकता है।

मादा बिच्छु नर बिच्छु से काफी बड़ी और गुस्सैल होती है। वह नर बिच्छु के छोटे से भी अपराध को क्षमा नहीं करती और उसे मार कर खा जाती है। इसके बच्चों की संख्या 25 से 30 तक होती है, जिनको लाद कर इधर-उधर घूमा करती है।

विचित्तपक्ख [विचित्रपक्ष] प्रज्ञा. 1/51

Moth of many Colour wings—विचित्र पंख वाला पतंगा। देखें—पतंग

विचित्रपत्तए [विचित्रपत्रक] उत्त. 36/148

Butterfly of many colour wings—विचित्र पंख वाली तितली। देखें—किण्हपत्त।

विज्झिडियमच्छ [विज्झिडियमत्स्य] प्रज्ञा. 1/56

A Kind of Fish—मत्स्य की एक जाति, विज्झिडियमत्स्य। देखें—झस

विडिम [विडिम] प्रज्ञा. 2/49

Kid—बालमृग।

विमर्श—प्रस्तुत प्रकरण में खग्ग के बाद विडिम शब्द आया है। खग्ग का अर्थ गेंडा होता है। विडिम शब्द का अर्थ बाल मृग और गेंडा है। इसलिए यहां बालमृग ही ग्रहण किया गया है।

देखें—किण्हमिय (कृष्णमृग)

वितत पक्खि [विततपक्षिन्] सू. 2/4/81 ठाणं. 4/551

A Kind of Bird—वितत पक्षी, पक्षी-विशेष।

विवरण—मनुष्य क्षेत्र के बाहर पाए जाने वाले इन पक्षियों के पंख सदा खुले या विस्तृत होते हैं।

विदंसग [विदंसक] प्रश्नव्या. 1/20

Crested Hawk Eagle—शाहबाज, शिखी श्येन उकाब, शिकरा, चिपका, चपाक। देखें—उलाण

वियग्घ [व्याघ्र]

Tiger—बाघ देखें—वग्घ

विलय [विलय] भग. 12/61

Golden Oriole—विचित्र पंख वाला पतंगा। देखें—पीलक

विरली [विरली] उत्त. 36/147

A Kind of Cricket—झिंगुर की एक जाति। देखें—भिंगारी (भृंगरीटक)

विराल [विडाल] आ.चू. 1/52 ज्ञाता. 1/1/178 उत्त. 32/13 दसा. 7/24

Wild Cat—वन बिलाव (बिल्ला)।

आकार—सामान्य बिलाव से बड़ा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लक्षण—शरीर का रंग हल्के भूरे से लेकर सलेटी तक होता है, जिस पर कभी-कभी गहरे भूरे रंग के धब्बे होते हैं। पैर लम्बे एवं पूंछ छोटी होती है। पंजे बर्फ पर चलने के लिए गद्दीदार होते हैं। कानों पर बालों का एक बड़ा गुच्छा तथा चेहरे पर लंबी मूंछें होती हैं।

विवरण—अधिक ऊंचाई के जंगलों में पाए जाने वाला यह प्राणी पेड़ों पर चढ़ सकता है और पानी में तैर सकता

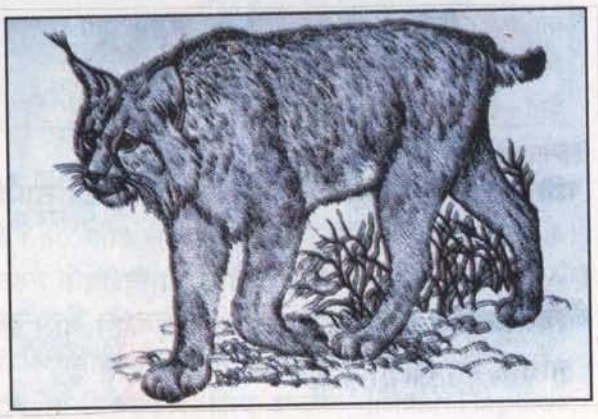

है। शक्तिशाली मजबूत पंजों की वजह से बकरी, हिरण आदि को अपना शिकार बना लेता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—भारत के संकटग्रस्त वन्य प्राणी, Nature, जानवरों की दुनिया]

विस्संभरा [विसंभरा] प्रज्ञा. 1/76 सू. 2/3/80
Moles, Shrews—छछूंदर देखें—छुछिका

विहंगम [विहंगम] दस. 1/3
A Black bee—भौंरा देखें—छप्पय (भौंरा)

विहंगम [विहंगम] दस. 1/3
Purple Sunbird—शकर खोरा, सूर्य पक्षी
देखें—महुयर

वीयविंटिका [बीजवृन्तका] प्रज्ञा. 1/50
A Kind of Trogoderma Granarium Everts—खपरा कीट की एक जाति।
देखें—पुप्फविंटिया

वीरल्ल [वीरल्ल] प्रश्नव्या. 1/9
Laggar Falcon—बाज पक्षी, लग्गर।
देखें—शेन (श्येन) K.N. Dave पृ. 183

वेढ़ला [वेढ़ला] प्रज्ञा. 1/58 [पा.]
A Kind of Crocodile—घड़ियाल की एक जाति।
देखें—ग्राह

वेणुदेव [वेणुदेव] सू. 1/6/21
Golgen Eagle—गरुड़ देखें—गरुड़

वेसर [वेसर] प्रश्नव्या. 1/9
Frown Hawk-owl—चुघट, बसरा, भूरा बाज-उल्लू।
आकार—कबूतर से बड़ा।
लक्षण—शरीर का रंग धूसर-भूरा तथा नीचे से सफेद, जिस पर लाल-भूरी पट्टियां होती हैं।
विवरण—भारत, लंका आदि देशों में पाया जाने वाला यह पक्षी शक्ल एवं उड़ान में बाज से बहुत मिलता-जुलता है। दिन में वृक्षों पर विश्राम करता है तथा रात्रि में शिकार के लिए निकलता है। अऊ-ऊऊ-ऊक 6 से 20 बार दोहराने वाली बोली से पहचाना जाता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 220, वर्णरत्नाकर]

वोंड [वोंड] ज्ञाता. 1/17/14/1
Little-egret—छोटा, बगुला, किलचिया।
देखें—काउल्ली

सउणि [शकुनि] सू. 2/2/19
Black winged Kite—कपासी, मसुनवा, शकुनि।
देखें—जमग

संख [शंख] प्रज्ञा. 1/49, उत्त. 36/128
Conch shell—शंख
आकार—विभिन्न प्रकार का।
लक्षण—अनेक रंगों एवं बिना रीढ़ वाले इन जीवों के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शरीर पर कड़ा खोल होता है। कुछ के एक तथा कुछ के दो खोल भी होते हैं।

विवरण—अधिकांशतः पानी में रहते हैं। पानी में प्राप्त चूने से अपना खोल बनाते हैं। शंखराज का खोल इनमें

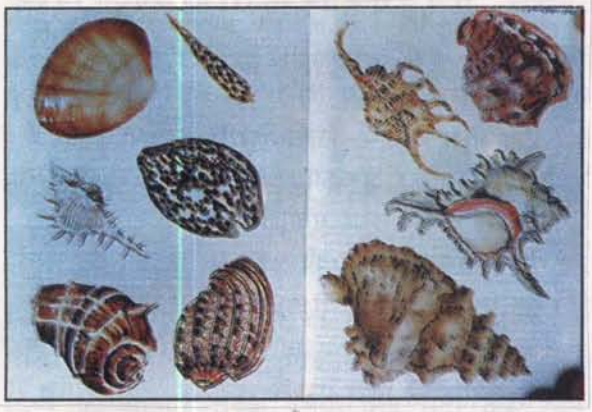

सबसे बड़ा होता है। 75,000 तरह के जीव इन खोलों में रहते हैं।

संखणग [शंखगण] प्रज्ञा. 1/49, उत्त. 36/128

Shells—शंखनक (छोटे शंख, शंखनी)

आकार—विभिन्न आकार प्रकार वाले।

लक्षण—घुमावदार, चपटे, शंकु आदि आकार तथा विभिन्न रंगों वाले होते हैं।

विवरण—75,000 किस्में पाई जाती हैं। ये समुद्र एवं गरम पानी के स्रोतों में पाए जाते हैं। इनका शरीर इतना कोमल होता है कि छोटे से भी रेत के कण को सहन नहीं कर सकते।

संड [शण्ड, षण्ड] भग. 2/66 ज्ञाता. 1/1/24 उवा. 1/57

Bull—बैल, सांड़

देखें—आवल्ल

सदंसगतुड [सदंशकतुण्ड] प्रश्नव्या. 3/18 [पा.]

Jungle-crow—ढंक, बड़ा काक, द्रोण काक, ढिंकणा (राज.)।

देखें—ढंक

संवर [संवर] प्रज्ञा. 1/64 प्रश्नव्या 1/6

Antelope—मृग की एक जाति, (बारह सींगा)

आकार—सामान्य हिरण से कुछ बड़ा।

लक्षण—शरीर पर सुंदर रंग की ऊनी खाल होती है। गर्मियों में इसके शरीर का रंग हल्का हो जाता है। सिर पर शाखायुक्त सींगों का जाल होता है।

विवरण—ये उत्तरी तथा पूर्वी भारत, उत्तर प्रदेश, असम, मध्य प्रदेश के दलदली अथवा सूखी घास वाले वनों में पाये जाते हैं। इनके सींग नियमित अंतरालों पर झड़ते हैं। नए सींगों पर एक मखमली आवरण होता है। वयस्क होने पर जब सींग कठोर हो जाते हैं तो आवरण हट जाता है। यह 30 से 50 तक की संख्या वाले बड़े झुंडों में रहना पसंद करता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—विश्व के विचित्र जीव-जंतु]

संवुक्क [संवुक्क] प्रज्ञा. 1/49

Snail—घोंघा (शम्बूक)

आकार—शंख एवं सिप्पी के तुल्य।

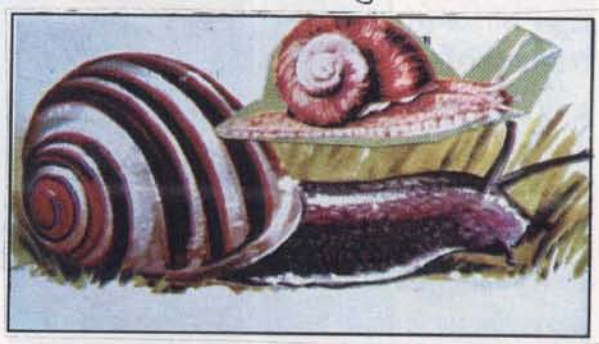

लक्षण—शरीर बहुत कोमल किन्तु उस पर एक कठोर खोल होता है। पैर चौड़े एवं बड़े। जमीन पर रेंगने वाले प्राणी हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवरण—मीठे पानी के समुद्रों में एवं स्थल पर पाए जाने वाले घोंघे अनेक प्रकार के होते हैं। घोंघे के खोल में एक ही खंड होता है। प्रायः शाकाहारी जीव है। घोंघे के विशेष प्रकार की जीभ होती है, जिस पर सैकड़ों कांटेदार दांत होते हैं। दांत इतने मजबूत होते हैं कि अन्य सिप्पी आदि के खोल को भी चबा जाते हैं।

सकुलिया [सकुलिया] अनु. 321
Black winged kite—शकुनि, कपासी, मसुनवा। देखें—जमग

सण्हमच्छ [श्लक्ष्यमत्स्य] प्रज्ञा. 1/56
A Kind of Angler fish—एंगरफिश की एक जाति, प्रकाश पैदा करने वाली मछली, गूंज मछली, सण्हमत्स्य (तमिल), सांढयमत्स्य (मलयालम)।

आकार—कुछ फीट से सवा मी. तक लम्बा।

लक्षण—मुंह काफी बड़ा एवं अनेक दांतों वाला। मुंह के आगे राड्स लम्बे तंतुओं (Fillaments) की भांति होते हैं, जिनके सिरों पर प्रकाश पैदा करने वाले बल्ब लगे रहते हैं।

विवरण—समुद्र में लगभग एक किलोमी. की गहराई में इन मछलियों की अनेक जातियां पाई जाती हैं। ये मछलियां अपना शिकार पकड़ने के लिए फिशिंग राड्स और ल्यूर्स (Fishing Rods and Lures) का इस्तेमाल करती हैं। समुद्र की गहराई में काफी अंधेरा होने के कारण प्रकाश देखकर छोटी-छोटी मछलियां स्वयं ही नजदीक आकर शिकार बन जाती हैं।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—विश्व के विचित्र जीव-जंतु, जानवरों की दुनिया, Man and animals]

सतपत्त [शतपत्र] प्रज्ञा. 1/48 राज. 23 जीवा. 3/259, 291
Golden backed wood pecker—कठफोड़वा, सोनपीठा

आकार—मैना से थोड़े बड़े आकार का लगभग 12 इंच लम्बा पक्षी।

लक्षण—शरीर का रंग लाल-भूरा तथा बादामी होता है। पंख तथा दुम में काली-तिरछी धारियां होती हैं। गहरे लाल रंग का अनुकपाल शिखर तथा मुकुट होता है। जबान लम्बी तथा नुकीली होती है।

विवरण—विश्व में इसकी 210 प्रजातियां पाई जाती हैं। यह पेड़ों के तनों तथा डालों पर सर्पिलाकार तरीके से चढ़ सकता है तथा उलटा भी चढ़ सकता है। यह अपनी खुराक के लिए पेड़ के तने को अपनी चोंच से ठोकता रहता है। अमेरिकी वैज्ञानिकों के अनुसार लाल सिर वाला कठफोड़वा इतनी जोर से पेड़ की छाल पर चोंच मारता है कि टक्कर का वेग (Impact Velocity) 13 मील प्रति घंटा (20.9 KM/N) होता है। उड़ते वक्त एक तेज ध्वनि निकालता है जो कर्कश चहचहाट जैसी होती है।

विमर्श—कैयदेवनिघंटु पृ. 461 में शतपत्र शब्द को मोर तथा तोतें का पर्यायवाची माना है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave-118]

सतवाइया [शतपादिका] प्रज्ञा. 1/50
Centiped—कानखजूरा देखें—गोम्हि

सत्तवच्छ [शतवत्स] प्रज्ञा. 1/79
Black Tailed Godwit—गुडेरा, जंगराल, खग, मालगुझा देखें—मेसरा

सदावरी [शतावरी] उत्त. 36/138
A Kind of Insect—कीट की एक जाति। देखें—हालाहल

सप्पी [सर्पी] सम. 30/18
Femal Cobra—नागिन देखें—नाग

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समुग्गय [समुग्गक] ज्ञाता. 1/17/14
Otter—जल-विलाव, जल मानुष, ऊदबिलाव।
देखें—उद्द

समुग्गय [समुद्गक] ज्ञाता. 1/17/14
Snake-bird, Darter—जलकाक, पनडुब्बी।
देखें—मंगु

समुग्गपक्खी [समुद्गपक्षी] सू. 2/3/81 भग. 15/186, प्रश्नव्या. 1/9
Sea Bird—समुद्रपक्षी
विवरण—मनुष्य क्षेत्र से बाहर पाए जाने वाले इन पक्षियों के पंख सदा अविकसित रहते हैं। अर्थात डिब्बे के आकार सदृश इनके पंख सदा ढंके रहते हैं।

समुद्दलिक्खा [समुद्रलिक्षा] प्रज्ञ. 1/49
Sea-Louse—समुद्र-लिक्षा
विवरण—समुद्र में अनेक प्रकार के द्वीन्द्रिय प्राणी पाए जाते हैं। जिनमें से समुद्रलिक्षा नाम की एक प्रजाति है जो लीख (जूँ) के समान होती है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—सचित्र विश्व कोश, Nature]

समुद्दवायस [समुद्रवायस] भग. 13/158 प्रज्ञा. 1/78
Brownheaded Gull—समुद्रकाक, धोमरा बभ्रुशिर गल।
आकार—जंगली कौवा से बड़ा।
लक्षण—शरीर का रंग ऊपर से धूसर नीचे से सफेद होता है। गर्मियों में सिर का रंग काफी जैसा भूरा हो जाता है। सर्दियों में सिर का रंग सफेद धूसर होता है।
विवरण—समुद्रतट, बड़ी नदियों या झीलों के किनारे पाए जाने वाला यह पक्षी झुंडों में देखा जाता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 337]

सरंड [सरंड] प्रज्ञा. 1/76
A Kind of Chameleon—गिरगिट की एक जाति।
देखें—अहिलोढ़ी

सरंब [शरम्ब] प्रश्नव्या. 1/8
Snake-Skink—नागर बामणी
देखें—छीरल

सरड [सरट] प्रज्ञा. 1/76 सू. 2/3/80
A kind of Chameleon—गिरगिट की एक जाति।
देखें—अहिलोढ़ी।

सरव [सरव] सू. 2/3/80
Pangolin—साल, सिल्लू, वनरोहू, काठपोह, सार, सरैव।
आकार—लम्बी पूंछ एवं गोह के समान प्रतीत होने वाला प्राणी।
लक्षण—इसकी लम्बाई 2-5 मी. तक होती है। सारे शरीर और दुम के ऊपर कड़ी प्लेटें खपरैल की भांति लगी रहती हैं। मुख दंत विहीन तथा छोटा होता है।
विवरण—भारत, जावा, बोर्नियो, फिलिपाइन्स तथा निकटवर्ती द्वीपों आदि में पाया जाने वाला यह एक स्तनपायी प्राणी है। खतरा महसूस होने पर यह अपने को कवच में बंद करके गेंद जैसा बन जाता है। यह

दिन भर अपने बिल में रहता है और रात्रि के समय शिकार के लिए निकलता है। अपनी लम्बी जीभ से दीमक और चींटियां खाता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—जानवरों की दुनिया, Nature, सचित्र विश्व कोश]

सरभ [सरभ] प्रश्नव्या. 1/6 प्रज्ञा. 1/64

A Fabulous Animals—अष्टापद, सरभ, परिसर, परासर।

देखें—परासर

सरहा [सरघा] देशी नाम माला 2/7

Honey bee—मधुमक्खी

आकार—सामान्य मक्खी से कुछ बड़ा।

लक्षण—काले भूरे तथा पीली पट्टियों से ढंका हुआ शरीर। इनके दो जोड़े पंख तथा पूंछ के पिछले हिस्से में विषैला डंक होता है।

विवरण—चींटियों की तरह मधुमक्खियां भी बड़े समूह में रहती हैं। कभी-कभी एक छत्ते में 75000 के लगभग मधुमक्खियां रहती हैं। यह अपना छत्ता मोम से बनाती है। कुछ मधुमक्खियां फूलों से मकरन्द लाने का काम करती हैं, कुछ अपने शरीर से पैदा हुए मोम से छत्ता बनाती हैं। कुछ छत्तों को साफ करती हैं। इस तरह सभी मधुमक्खियां अपने-अपने नियत कार्य को करती हैं।

सराडि [शराटि, सराडि] गरुडवहो. 118

Lesser whistling Teal—सिल्ही, सिलकही लघुशरालि।

आकार—पालतू बत्तख से कुछ छोटा।

लक्षण—शरीर का रंग फीका भूरा और मैरुन-चेस्टनट होता है। नर-मादा दोनों एक जैसे होते हैं। धीमे-धीमे पंख फड़फड़ाता हुआ जैकाना पक्षी की भांति उड़ान भरता है।

विवरण — भारत, पाकिस्तान, नेपाल आदि देशों में पाए जाने वाला यह पक्षी नदियों, झीलों आदि के किनारे टोलियों में देखा जाता है। यह एक कुशल गोताखोर पक्षी है। उड़ते समय कुछ तीखी खरखराहट भरी सीए, सिक्क, सीए सिक्क जैसी शीश ध्वनि निकालता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. DAve पृ. 450, भारत के पक्षी]

सल्ल [शल्य] सू. 2/3/80 प्रश्नव्या. 1/8 प्रज्ञा. 1/76

Anteater, spiny Anteater, Echidna—कंटीला चींटीखोर, एंकिडना, सिल्ल।

आकार—सेही से बड़ा।

लक्षण—सेही की भांति पीठ पर पीले कांटे, जिसका रंग सिरों पर काला होता है। पेट पर कांटे नहीं केवल बाल ही होते हैं। टांगें छोटी तथा नाखून मजबूत एवं तेज होते हैं।

विवरण—आस्ट्रेलिया, न्यूगिनी तथा उनके निकटवर्ती

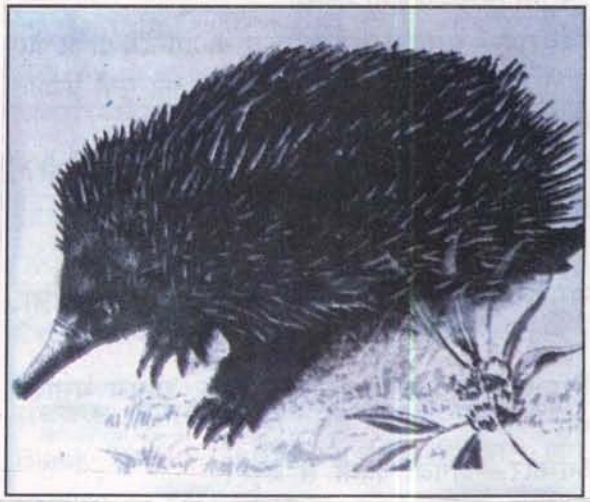

द्वीपों में पाया जाने वाला यह एक स्तनपायी जीव है। स्तनपायी होते हुए भी मादा अंडे देती है। वह भी शरीर में बनी एक थैली में रख देती है। यह अपने तेज नाखूनों से सख्त जमीन को भी बड़ी तेजी से खोद डालता है। चिपचिपी एवं लम्बी जीभ के द्वारा यह चींटियों और दीमकों को आसानी से पकड़ लेता है। खतरा महसूस होने पर अपने शरीर पर कांटों को खड़ा कर गेंद की तरह गोल हो जाता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—जानवरों की दुनिया, विश्व के विचित्र जीव-जंतु, सचित्र विश्व कोश]

ससय [शशक] ज्ञाता. 1/1/154 प्रश्नव्या. 1/6 विवा. 1/4/161

Rabbit—खरगोश

आकार—सेही के समान।

लक्षण—शरीर का रंग सफेद से लेकर लाल तक होता है। पिछले दो पैर काफी लम्बे और मजबूत होते हैं।

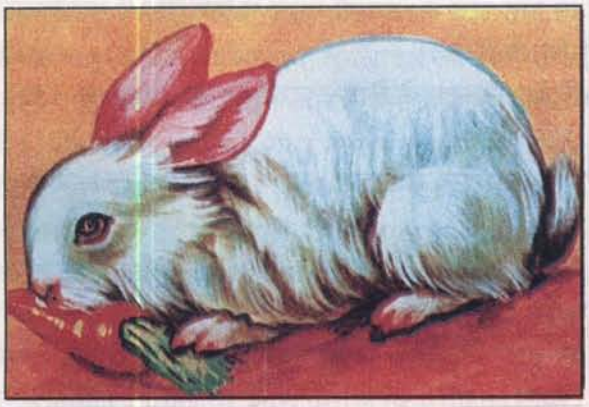

जिनसे यह चौकड़ियां भरता हुआ तेजी से दौड़ सकता है। कान लम्बे और चौकन्ने होते हैं।

विवरण—इसकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं जैसे—स्नोशू, रेगिस्तानी, पालतू, हिमालयी और बेल्जियम का खरहा आदि। खतरे के समय यह बिल्कुल दम साधकर पड़ा रह सकता है। दौड़ते-दौड़ते एकाएक रुक जाता है और तुरन्त दिशा बदल देता है। जंगली खरगोश बिलों में रहते हैं। ये बिल जमीन में नीचे ही नीचे सुरंगों की भांति बने होते हैं।

कुछ खरगोशों के पैर तथा कान बड़े होते हैं, जिन्हें खरहा कहा जाता है। खरगोश को मनुष्य की तरह पसीना नहीं आता क्योंकि उसके लम्बे कानों से शरीर की गर्मी बाहर निकलती रहती है। खरगोश के कानों में बहुत सारा रक्त होता है। जब वह तेजी से दौड़ता है तब यही रक्त हवा के सम्पर्क में रहने से ठंडा रहता है और पूरे शरीर में इसका संचार होने से शरीर का तापमान संतुलित बना रहता है। इसके कान आगे-पीछे, दाएं-बाएं हर दिशा में घूम सकते हैं। जिससे यह अपने चारों तरफ की आवाजें आसानी से सुन सकता है।

साण [श्वन्] आ.चू. 4/12 ठाणं. 5/299 भग. 3/34 प्रश्नव्या. 1/6

Dog—कुत्ता

आकार—छोटे-बड़े अनेक प्रकार के।

लक्षण—शरीर का रंग सफेद से लेकर भूरा-लाल तक

होता है। कुछ कुत्तों के कान बड़े एवं कुछ के छोटे होते हैं। कुछ के कान खड़े एवं कुछ के नीचे झुके हुए होते हैं। इनके दांत मजबूत और तेज होते हैं। घ्राण इन्द्रिय बहुत सूक्ष्मग्राही होती है।

विवरण—विश्व भर में इनकी सैकड़ों प्रजातियां पाई जाती हैं। ब्लड हाउण्ड कुत्ता अपराधियों का पता लगाने में पुलिस के बहुत काम आता है। अल्शेशियन कुत्ता भी जासूसी विभाग में कार्य करता है। यह बहुत निडर और होशियार होता है। प्रदर्शनियों में कुत्तों को छः भागों में बांटा जाता है—खिलाड़ी, गैर-खिलाड़ी, काम करने वाले, शिकारी, हेरियर और खिलौना कुत्ते। कुछ विशेष जाति के कुत्ते अनेक कार्य करने में दक्ष होते हैं जैसे—अंधे को रास्ता दिखाना, भेड़ों एवं दूसरे जानवरों को एकत्रित करना, संपत्ति की रक्षा करना आदि।

भारत के जंगलों में पाया जाने वाला सोनहा कुत्ता बहुत शक्तिशाली एवं खूंखार होता है। इनकी टोलियां तेंदुए बाघ, सिंह पर भी हमला कर उन्हें अपना शिकार बना लेती हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सामलेर [शाबलेय] पर्युषण कल्प. 544
Calf of a spotted Cow—चित्तकबरी गाय का बछड़ा।
देखें—गाव (गाय)

सारंग [सारंग] प्रश्नव्या. 10/16, प्रज्ञा. 1/51 जम्बू. 3/3
Koel, Crow-Pheasant or Coucal—कोयल, महुका।
देखें—पुंसकोइला

सारंग [सारंग] प्रश्नव्या. 10/16, प्रज्ञा. 1/57 जम्बू. 3/3
Elephant—हाथी देखें—कुंजर (हाथी)

सारंग [सारंग] प्रश्नव्या. 10/16, प्रज्ञा. 1/51, जम्बू. 3/3
देखें—सीह (सिंह)

सारंग [सारंग] प्रश्नव्या. 10/16, प्रज्ञा. 1/51 जम्बू. 3/3
A Spotted Deer—चितकबरा हिरण।
आकार—बारहसींगा हिरण की भांति।
लक्षण—शरीर का रंग भूरा-पीला चितकबरा होता है। कई हिरणों का शरीर सुनहरा भी होता है। सिर पर 2 से 8-10 तक श्रृंग-शाखाएं होती हैं।

विवरण—इनकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं जैसे थामिन, हांगुल, कस्तूरी मृग आदि। थामिन हिरण की खाल खुरदरी और पतली होती है। इसके सींग विशेष प्रकार के लगभग गोलाकार होते हैं।
हांगुल हिरण के शरीर का रंग हलका या गहरा भूरा और पूंछ के पास नितंब पर सफेद धब्बा होता है। इनके शरीर के दोनों ओर का तथा पैरों का रंग पीलापन लिए होता है। सिर पर कई कांटेनुमा सींग होते हैं। प्रत्येक सींग की 5 से 10 तक श्रृंग शाखाएं होती है।
कस्तूरी मृग के शरीर का रंग लाल भूरा या सुनहरा लाल होता है। इनके सींग नहीं होते किन्तु एक जोड़ी मुड़े हुए दांत होते हैं। इनकी नाभि में कस्तूरी की गोलाकार ग्रंथि होती है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. dave पृ. 132]

सारंग [सारंग] प्रश्नव्या. 10/16, प्रज्ञा. 1/51, जम्बू. 3/3
Small green billed Malkoha—पपीहा, चातक, कपरा।
आकार—कबूतर के तुल्य।
लक्षण—शरीर का रंग ऊपर से ग्रे तथा नीचे से सफेद होता है, जिस पर भूरी धारियां होती हैं। चोंच गहरी हरी तथा आंख के गिर्द साफ नीली चकत्ती युक्त एवं पूंछ लम्बी होती है।
विवरण—विशेष रूप से भारत में पाया जाने वाला यह पक्षी कोयल की भांति चतुर एवं धोखा देने में दक्ष होता है। मादा पपीहा अपना अंडा बैब्लर के घोंसले में देती है।
उड़ते समय या बैठा हुआ यह बड़ी तेज आवाज में पांच-छः बार ब्रेन-फीवर ब्रेन-फीवर बोलता है।

सारंग [सारंग] प्रश्नव्या. 10/16, प्रज्ञा. 1/5, जम्बू. 3/3
Common-Peafowl—मयूर
देखें—ढेलियालग

सारंग [सारंग] प्रश्नव्या. 10/16, प्रज्ञा. 1/51 जम्बू. 3/3
Flamingo—राजहंस, वोगहंस। द्रष्टव्य—राजहंस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सारंग [सारंग] प्रश्नव्या. 10/16 प्रज्ञा. 1/51 जम्बू. 3/3
A Black bee—भंवरा देखें—छप्पय (भंवरा)

सारस [सारस] ठाणं. 7/41/2 ज्ञाता. 1/5/3 प्रश्नव्या. 1/9 अनु. 3/3
Sarus crane—सारस
आकार—4-5 फीट की ऊंचाई वाला पक्षी।
लक्षण—शरीर का रंग ग्रे (धूसर) होता है, पैर तथा सिर का रंग लाल और पंख रहित होते हैं।
विवरण—भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश आदि में पाया जाने वाला यह पक्षी अपने आदर्श प्रेम के लिए प्रसिद्ध है। जोड़े में से एक की मृत्यु होने पर दूसरा भी कुछ दिनों के बाद वियोग में प्राण त्याग देता है। मुगल बादशाह जहांगीर ने सारसों का विशेष अध्ययन किया था।

सारा [सारा] सू. 2/3/80 प्रज्ञा. 1/76
Pangolin—पेंगोलीन, साल, सिल्लू, बनरोहू, काठपोह, सरैव, सार।
देखें—सरव

सारिआ [सारिका] प्रवचनसारोद्धार-569
Hill myna—पहाड़ी मैना
आकार—सामान्य मैना से बड़ा।
लक्षण—शरीर का रंग काला तथा पंखों पर सुस्पष्ट सफेद धब्बे। चोंच तथा टांगें काली। सिर पर चमकीले नारंगी-पीले धब्बे और मस्से होते हैं।
विवरण—पहाड़ी क्षेत्रों में पाया जाने वाला यह पक्षी कबूतर और हार्नेबिल की भांति शुद्ध शाकाहारी होता है। लड़ते समय इसके पंख हरे कबूतर की तरह ध्वनि उत्पन्न करते हैं। जैसे किसी बर्तन को घुमाया जा रहा हो।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 141]

सालग [शालक] प्रश्नव्या. 1/9
Black breasted Weaver Bird—सालक, कंठवाल वया, कृष्णपक्ष वया, सर्वोवया।
आकार—गौरैया के समान।
लक्षण—चमकदार सुनहरा पीला शिखर। सफेद कंठ और शरीर के निचले भाग पर काली पट्टी। मादा शालक का शिखर-भूरा तथा कान के पीछे एक धब्बा होता है।
विवरण—तालाबों, झीलों एवं सरकण्डों वाले क्षेत्रों में पाया जाने वाला यह पक्षी अकेला रहना पसंद नहीं करता। यह मादा को रिझाने के लिए जानबूझ कर पंख फड़फड़ाता है और बिना तेल दिए साइकिल के पहिए की जैसी हल्की चूं-चूं या झींगुर की कूजन से मिलता-जुलता हंसी-ट्रिस सिंक-ट्स जैसा मृदु गीत गाता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—भारत के पक्षी, जानवरों की दुनिया]

सालिसच्छियमच्छ [शालिशस्त्रिक मत्स्य] प्रज्ञा. 1/56
A Civet-Cat-Fish—कैट फीस, पठिन।
आकार—2-6 फीट लम्बा।
लक्षण—शरीर का रंग सलेटी। मुंह पतला एवं छोटे-छोटे दांतों वाला। पीठ पर बड़ा और नुकीला कांटा।
विवरण—यह मछली पकड़े जाने पर बिल्ली की तरह कर्कश स्वर करती है। इस मछली की आंखें गंदे पानी में काम नहीं देतीं। इसलिए प्रकृति ने इन्हें काफी बड़ी-बड़ी मूंछें दी हैं, जिसके द्वारा ये इधर-उधर फिर सकती हैं। इनका वजन 5 मन तक होता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—रेंगनेवाले जीव, Marine Tropical Fish]

सालिसच्छियमच्छ [शालिशस्त्रिक मत्स्य] प्रज्ञा. 1/56
A Kind of Ricefish—तंदुल मत्स्य की एक जाति।
विवरण—तिमि. तिमिंगल आदि मत्स्यों के कान में शालिशिक्थ नामक मत्स्य रहते हैं, जिनका आकार चावल के दाने के बराबर होता है। वे मत्स्यों के कान

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

का मल खाकर जीवन निर्वाह करते हैं। वे अपने मन में ऐसा विचार करते हैं। यदि हमारा शरीर इन मत्स्यों के समान होता तो मुंह से एक भी प्राणी जीवित न निकल पाता। हम संपूर्ण को खा जाते। इस प्रकार के अशुभ अध्यवसाय के द्वारा मृत्यु को प्राप्त कर नरक में जाते हैं। शेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—तिमि।

सावय [सावय] प्रश्नव्या 3/7

Seal—शील, जनव्याघ्र, वालरस, सवका (मलमालय), साविया (तेलुगू)

आकार—लगभग छः मीटर तक लम्बा।

लक्षण—शरीर का रंग हल्का भूरा से काला-सफेद तक होता है। इनके पंजे बत्तख के पैर की भांति होते हैं। ये पंजे तैरने में इनकी मदद करते हैं। बच्चों के शरीर की खाल बहुत मुलायम होती है।

विवरण—समुद्रों में इनकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। उत्तरी समुद्र की शील सर्दियों के दिनों में समुद्र में घूमती रहती हैं। गर्मियों में ये हजारों मील की यात्रा कर वेरिंग सागर में प्रिणिलोफ द्वीप समूह के द्वीपों के किनारे इकट्ठी हो जाती हैं। वालरस नामक शील के मुंह के आगे दो लम्बे दांत निकले रहते हैं। कुछ नर सीलों का वजन कई हजार किलो तक होता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—रेंगने वाले जीव, Indian Reptiles]

सिंगिरीडी [शृंगिरीटी] उत्त. 36/147 प्रज्ञा. 1/51

A kind of Spider—मकड़ी की एक जाति।

देखें—कोली

सिप्पिय [शुक्तयः] उत्त 36/128

Oyster—सीप

आकार—शंखों की भांति छोटे एवं बड़े आकार के।

लक्षण—शरीर का रंग सफेद-भूरा होता है। दो मजबूत खोलों के बीच के छिद्र से ये जीव अपने पैरों के द्वारा गति करते हैं।

विवरण—नदियों, समुद्रों आदि में इनकी सैकड़ों प्रजातियां पाई जाती हैं। सच्चा मोती एक विशेष प्रकार के सीप में निकलता है। रेत का एक कण भी इनके मुलायम शरीर के लिए असहनीय होता है। जब किसी कारण से रेत का कण सीप के भीतर प्रवेश कर जाता है तो उस कण से अपनी सुरक्षा के लिए सीप एक विशेष प्रकार के द्रव्य का स्राव करता है। वही स्राव कालान्तर में मोती का रूप धारण कर लेता है। सीप की लम्बाई 1/2 इंच से एक गज तक हो सकती है।

शेष-विवरण के लिए द्रष्टव्य-सिप्पिसंवुडा।

सिप्पिसंपुड [शुक्तिसंपुट] प्रज्ञा. 1/49

Oyster Clame—संपुटाकार सीप।

आकार—संपुटाकार।

लक्षण—मजबूत चूल से जुड़े दो खोल होते हैं, जिसमें से एक जोड़ी नलिका खोल के किनारे से बाहर पहुंचती है। एक नली से पानी भीतर जाता है जिसमें खाद्य पदार्थ, जंतु एवं आक्सीजन मिली रहती है।

विवरण—मीठे एवं खारे पानी में इसकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। यह एक विना रीढ़ का जीव है। प्रशांत महासागर में पाए जाने वाले दानवसीप (दानवक्लैम) का वजन 225 K.G. तक तथा लम्बाई-चौड़ाई 1 1/2 मीटर तक हो सकता है।

[शेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—सिप्पिय]

सियाल [श्रृंगाल] प्रश्नव्या 1/6 प्रज्ञा. 1/66, 11/21 जम्बू. 2/36

Jackal—गीदड़, सियार देखें—कोल्लग

सिरिकंदलग [श्रीकंदलक] प्रश्नव्या. 1/6 प्रज्ञा. 1/63

A kind of Donkey—गधे की एक जाति।

देखें—खर (गधा)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य–विश्व के विचित्र जीव-जंतु।]

सिरीसिवा [सरीसृपा] सू. 1/7/15
Komodo-Dragon–जलसर्प
आकार—राक्षस के समान आकार वाला जलचर सर्प।
लक्षण—मुख से ज्वाला निकालने वाला यह प्राणी 7 से 10 मी. तक लम्बा होता है। जिह्वा सामान्य सांप की भांति दो भागों में विभक्त होती है। शरीर का रंग चमकता हुआ लाल होता है।
विवरण—यह महासमुद्रों में पाया जाता है। फ्रेंच के प्राणिशास्त्रज्ञ ने इसे सर्वप्रथम 1959 में देखा। यह अपने शिकार एवं रक्षा के लिए मुख से भयंकर ज्वाला निकालता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य–Man and animals सूत्र. चूर्णि. पृ. 158]

सिवा [शिवा] उत्त. 22/4 अनु. 323
Female Jackal–सियारनी देखें–कोल्लग

सिहि [शिखिन्] सू. 1/11/27 भग. 7/123 ज्ञाता. 1/1/29
Common Peafowl–मोर, मयूर।
देखें–ढ़ेलियालग

सिहि [शिखिन्] सू. 1/11/27 भग. 7/123 ज्ञाता. 1/1/29
Red Jungle Fowl–मुर्गा। देखें–कुक्कुट

सिहीमच्छ [शिखीमत्स्य] सू. 1/11/27
A Fish having A Long Pointed Mouth–नोकीली थूथन वाली मछली, तेगा-मछली, शिखीमत्स्य।
आकार—10-15 फीट तक की लम्बाई वाला मत्स्य।
लक्षण—शरीर का रंग कुछ काला। ऊपरी थूथन आगे की ओर बढ़कर तलवार की भांति लम्बा और नुकीला होता है।
विवरण—समुद्रों में पाया जाने वाला यह मत्स्य अत्यन्त खतरनाक होता है। नुकीली थूथन के माध्यम

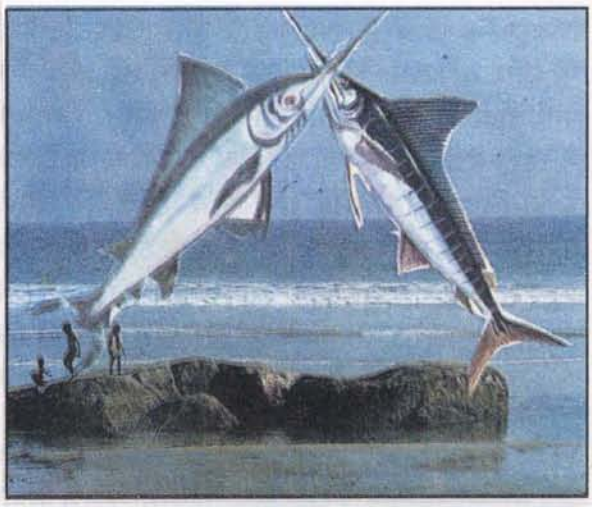

से यह शिकार करता है। शिकार के समय में अपने शरीर को तेजी से आगे की ओर बढ़ाकर किसी मछली के शरीर में या अन्य प्राणी के शरीर में अपना नुकीला थूथन गड़ाकर उसे चट कर जाता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य–रेंगने वाले जीव, जानवरों की दुनिया]

सीह [सिंह] प्रश्नव्या. 1/6 प्रज्ञा. 1/66 जम्बू. 2/15
Lion–शेर, सिंह
आकार—वाघ की अपेक्षा छोटा।
लक्षण—चर्मावरण का रंग रेतिया भूरा या हल्का पीला होता है, जिसमें कोई निशान नहीं होता। जबकि इसके

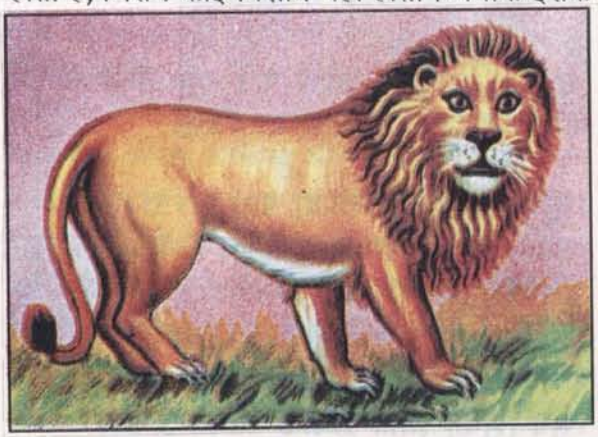

बच्चों पर धब्बे तथा लकीरें होती हैं। इनकी श्रवण शक्ति अत्यंत विकसित होती है। सिंह के अयाल होती है। सिंहनी के अयाल नहीं होती।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवरण—भारत (विशेष रूप से गुजरात के गीर वनों में) और अफ्रीका के जंगलों में इनकी कई प्रजातियां पाई जाती हैं। यह रात्रिचर शिकारी है और घने जंगलों में रहना पसंद करता है। यह एक सामाजिक प्राणी भी है इसलिए अपने परिवार के साथ रहता है। इसके परिवार में 2-4 कम उम्र के सिंह, कई सिंहनियां व सिंह-शावक होते हैं। यह सारा परिवार 24 घंटे में से 18 घंटे अक्सर सोते-ऊंघते गुजार देता है। शिकार का दायित्व प्रायः सिंहनियों पर ही होता है और नर शिकार के बाद समूह में सम्मिलित हो जाते हैं। यह 80 k.m. प्रति घंटे की रफ्तार से अपने शिकार का पीछा करता है। एक पंजा शिकार की पीठ पर तथा दूसरा छाती या पसलियों पर रखकर शिकार को पकड़कर नीचे गिराता है। शिकार की गर्दन में दांत चुभाकर तब तक पकड़कर रखता है जब तक कि वह दम घुटने से मर नहीं जाता।

सीमागार [सीमाकार] प्रज्ञा. 1/58

Lesion, or क्रोकोडाइल्स पेलुस्ट्रिस—सीमागार या दलदलीय मकर।

आकार—लगभग 3 1/2 मी. लम्बा।

लक्षण—इसकी थूथन छोटी नदीमुख मगर जैसी होती है। शरीर का रंग हल्का जैतूनी भूरा होता है।

विवरण—यह जम्बू एवं कश्मीर, हिमालय प्रदेश, पंजाब और रेगिस्तानी क्षेत्रों को छोड़कर संपूर्ण भारत में पाया जाता है। इसकी गति बहुत धीमी होती है।

[शेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—ग्राह]

सुक्किलपत्त [शुक्लपत्र] प्रज्ञा. 1/51

Butterfly of White Wings—श्वेत पंख वाली तितली।

देखें—किण्हपत्त

सुग [शुक] ज्ञाता 1/1/3 जीवा. 3/597

Blue Winged Parakeet—तोता, शुक, मदनमौर

आकार—मैना के समान।

लक्षण—शरीर का रंग बड़ा आकर्षक तथा कालर पर चमकदार नीली-हरी धारी। सुस्पष्ट नीले पंख तथा पुच्छ। चोंच मजबूत और मुड़ी हुई। पंजे का आधा भाग आगे की ओर तथा आधा पीछे का भाग पीछे की ओर मुड़ा हुआ होता है।

विवरण—विश्व भर में इसकी सैकड़ों प्रजातियां पाई जाती हैं। न्यूगिनी का बौना तोता केवल साढ़े सात C.M. लम्बा होता है। आस्ट्रेलिया का काला तोता लगभग एक मीटर बड़ा होता है। तोता आवाज ग्रहण करके उसे कई बार दोहरा सकता है। कुत्ते का भौंकना, बिल्ली की म्याऊं-म्याऊं या बच्चे के रोने जैसी आवाज निकाल सकता है। यह एक शुद्ध शाकाहारी प्राणी है।

सुणगा [शुनक] सू. 2/2/19 ज्ञाता. 1/1/178 प्रज्ञा. 1/66 जम्बू. 2/36

Dog—कुत्ता

देखें—साण (कुत्ता)

सुंसुमार [सुंसुमार, शिशुमार] प्रज्ञा. 1/60

Gangetic Porpoise—सूंस मछली, शिशुक, शिशुघ्न।

आकार—मगरमच्छ के समान।

लक्षण—शरीर का रंग सफेद-काला शिल्क युक्त होता है। मगरमच्छ की भांति पैर छोटे होते हैं।

विवरण—महासमुद्रों में पाया जाने वाला यह प्राणी दैत्याकार होता है। इसका मुख शरीर के अंदर होने पर भी श्वास बाहर छोड़ता है।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—Man and animals, शब्दकल्पद्रुम, कैयदेवनिघंटु-मांसवर्ग]

सुंसुमार [सुंसुमार, शिशुमार] प्रज्ञा. 1/60

Dolphin—शिशुमार, सुंसुमार, डॉलफिन, सिहों (असम) सूंस (वंगला)।

आकार—प्रायः 2-3 मी. लम्बा जलीय प्राणी।

लक्षण—नदियों में पाए जाने वाले डॉलफिन का जबड़ा आगे से पतला, चपटा तथा चोंचनुमा होता है। मुंह दोनों जबड़ों के बीच में होता है, जिसमें 27-32 दांत होते हैं। समुद्री डॉलफिन का थूथन छोटा किन्तु स्पष्ट होता है। इसके जबड़े में कुल 130 दांत होते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवरण—महानदियों एवं महासमुद्रों में इनकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। यह समुद्री स्तनधारियों की श्रेणी में आता है। मनुष्य के बाद इसको ही सबसे बुद्धिमान प्राणी माना गया है। यह मनुष्यों की काफी मदद करता है और जल्दी-जल्दी इनसे मित्रता कर लेता है। यह अपनी आंखों से नहीं देख सकता। डॉलफिन को सांस लेने के लिए बार-बार जल की सतह पर आना पड़ता है। यह एक बहुत अच्छा तैराक है जो 40 से 50 किमी. प्रति घंटे की रफ्तार से तैरता है। इसमें सुनने की शक्ति बहुत तेज होती है। आवाज के आधार पर दिशा का अनुमान लगाने में तो इन्हें महारत हासिल होती है। नर की अपेक्षा मादा डॉलफिन ज्यादा बड़ी होती है।

सुयविंट [शुकवृन्त] प्रज्ञा. 1/50

A Kind of Rectinophor a gossypiella Saunders—सूंडी की एक जाति

देखें—हिल्लिया

सुवण्ण [सुपर्ण] प्रज्ञा. 2/30 जम्बू. 3/24/1,2 आ. चू. ठाणं 3/464 सम. 34/1

Crested Hawk-Eagle—शाहबाज

देखें—विदंसग

सेडी [सेड़ी] प्रज्ञा. 1/79

Lesser Whistling Teal—सिल्ही, सिलकहीं

देखें—सराडि

सेण [श्येन] सू. 1/2/2 प्रश्नव्या. 1/9 उवा. 7/50

Laggar falcon—बाज पक्षी, लग्गर।

देखें—वीरल्ल

सेदसप्प [श्वेदसर्प] प्रज्ञा. 1/70

Snake of White Colour, A kind of Cobra—श्वेत सर्प, धामन, सराइ-पम्बू (तमिल), चेरा (मलयालम), गोला संप (तेलुगू)

आकार—3-5 फीट लम्बा।

लक्षण—शरीर का रंग सफेद तथा चकत्ते युक्त। नाग की तरह फन उठाकर आक्रमण करता है।

विवरण—यह नाग की ही एक प्रजाति है जो नाग की अपेक्षा कम विषैला होता है। भारत, मलायाद्वीप, जावा आदि के जंगलों में पाया जाता है।

सेहा [सेहा] प्रज्ञा. 1/79

Common grey Hornbill— चलोतरा, धनेश, सेलगिल्ली।

आकार—चील के आकार का एक भद्दा परन्तु विचित्र पक्षी।

लक्षण—शरीर का रंग भूरा-ग्रे होता है। इसकी अनोखी चोंच काफी बड़ी मुड़ी हुई और काली तथा सफेद होती है। चोंच के ऊपर एक विशेष टोपी-सी होती है। मादा में यह टोपी अपेक्षाकृत छोटी होती है।

विवरण—भारत, अफ्रीका और एशिया में पाया जाने वाला यह पक्षी अंजीर, बरगद और पीपल के वृक्षों पर देखा जाता है। वृक्ष के खोखले तने को मादा धनेश सिमेंट जैसे पदार्थ से बंद कर केवल एक दरार सी छोड़ देती है ताकि नर उसमें से उसे भोजन पहुंचा सके। प्रवेश-द्वार का प्लास्टर इतना मजबूत होता है कि उसका कोई भी दुश्मन आसानी से घोंसले की दीवार तोड़कर प्रवेश नहीं कर सकता।

[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. DAve पृ. 159, 161, विश्व के विचित्र जीव-जंतु]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेहा [सेधा] प्रज्ञा. 1/76 सू. 2/3/80 प्रश्नव्या. 1/8
Hystrix, Porcupine—साही, सेही।
आकार—लगभग 56 से.मी. लम्बा तथा 5-6 से.मी. लम्बी पूंछ वाला प्राणी।

लक्षण—शरीर पर काफी बड़े-बड़े कांटे होते हैं जो सिरे पर हुकों की तरह मुड़े होते हैं। इनके तेज दांत कठोर वस्तुओं को भी कुतर देते हैं।
विवरण—यह एक शाकाहारी, सीधा-सादा और सुस्त प्राणी है। इसको दुश्मन के आक्रमण का भय नहीं होता। जरा सी आहट होते ही यह अपने नुकीले कांटे खड़ा कर लेता है। शेर भी इससे घबराता है। जब शेर इसको पंजा मारता है तो पंजों में कांटे चुभ जाते हैं। दर्द के कारण शेर कराह उठता है। कांटा मांस के अन्दर टूट जाने पर और शरीर में जहर फेल जाने से शेर की मृत्यु तक हो जाती है। साही पेड़ की लकड़ी और छाल के अन्दर का हिस्सा विशेष रुचि से खाता है। यह दिन के समय बिल में रहता है और रात्रि के समय भोजन की तलाश में निकलता है।

सोंडमगरा [शोण्डमकरा] प्रज्ञा. 1/59
[A Alligator having a Trunk] A kind of Alligator—शौण्डमकर (मगरमच्छ की एक जाति)
विवरण—शौंडमगर मगर की एक जाति है। इनका थूथन सामान्य मगर से कुछ भिन्न तथा हाथी के सूंड के समान लम्बा होता है। इनकी पूंछ इतनी शक्तिशाली होती है कि ये प्राणियों को पूंछ से धक्का देकर पानी में गिरा देते हैं।
[शेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—मगर]

सोत्तिय [शौक्तिक] प्रज्ञा. 1/49
A kind of pearl Oyster—सौत्रिक, सीप की एक जाति।
देखें—सिप्पिय

सुणी [शुनी] सू. 1/3/8 प्रज्ञा. 11/23
Bitch—कुतिया
देखें—साण (श्वन्)

सूयर [शूकर] उत्त. 1/56 सू. 1/3/36 उवा. 7/50
Pig—सूअर
देखें—कोल और कोलसुणग

सुभगा [शुभगा] प्रज्ञा. 1/50 जम्बू. 4/164
A Kind of Insect—सुभग, त्रपुषमिंजका की एक जाति। देखें—तउसमिंजिया

सुईमुह [शुचीमुख] प्रश्नव्या. 1/9
Baya, Weaver Bird— बया, शुचिमुख।
आकार—गौरैया से मिलता-जुलता पक्षी।
लक्षण—शरीर का रंग भूरा-गेहुंआ। ऊपर गहरी धारियां और नीचे का हिस्सा सफेद गेहुंआं होता है इसकी दुम छोटी-चौड़े सिरे वाली शंकु रूपी और काफी मजबूत होती है।

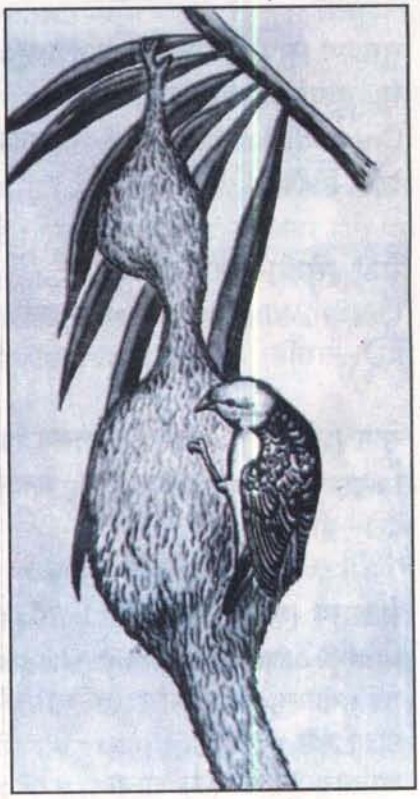

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नर-मादा में विशेष अन्तर नहीं होता।
विवरण—भारत, लंका आदि देशों में इसकी मुख्य तीन प्रजातियां पाई जाती हैं। बया एक कुशल कारीगर है, घोंसला बनाने की दक्षता में सभी पक्षी इससे पीछे हैं। बयों के घोंसलें बबूल, ताड़ आदि वृक्षों की डालियों में रिटार्ट की तरह लटकते हुए दिखाई देते हैं। पालतू बया को लोग अंगूठी दिखाकर कुएं में फेंकते हैं और यह उसके पीछे इतनी फुर्ती से झपटता है कि पानी में गिरने से पहले ही अंगूठी को चोंच में पकड़ लेता है, सर्कसों में इस पक्षी के अद्‌भुत करिश्मे देखने को मिलते हैं। वैज्ञानिक लोग इसे प्लौसिअस फिलीपाइनस (लिनीअस) के नाम से जानते हैं।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 88-89, 94]

सूईमुहा [शुचिमुखा] प्रज्ञा. 1/49
Pyrilla—सूचिमुख
आकार—शरीर की लम्बाई लगभग 18 मि.मी.।
लक्षण—यह पुआल रंग का कीट है। इसके सिर के आगे तेज नुकीली चोंच जैसा थूथन होता है।
विवरण—यह भारत में गन्ना उत्पादक क्षेत्रों में पाया जाता है और फसल को नुकसान भी पहुंचाता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—फसल पीड़क कीट]

सोमंगल [सौमंगल] प्रज्ञा. 1/49 उत्त. 36/128
Somagla, Poison Insect—सौमंगल, विषैला कीट।
आकार—1 मि.मी. से 1 सेमी. तक लम्बा।
लक्षण—शरीर का रंग मटमैले से काला तक होता है।
विवरण—गंदगी वाले स्थानों में इनकी अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। इसके काटने से खुजली के साथ जलन होती है।

सोयरिय [शोकरिक] अनु. 302/6
Pig—सूअर
देखें—कोल (सूअर) और कोलसुणग।

सोवच्छिय [सौवत्सिक] प्रज्ञा. 1/50
A king of Insect—कीट की एक जाति, सोवत्सिक।
देखें—कीड (कीट)

हंस [हंस] आ.चू. 15/28 सू. 1/4/48 ठा. 7/41/1 भग. 9/189
Flamingo—राजहंस, वोग हंस, श्रेष्ठ हंस, छाराज बागों।
देखें—राजहंस

हत्थीपूयणया [हस्तिपूतनया] प्रज्ञा. 1/65
A kind of Elephant—हाथी की एक प्रजाति।
देखें—कुंजर (हाथी)

हत्थिसोंड़ [हस्तिशौण्ड] प्रज्ञा. 1/50
A Kind of Caterpiller—हस्तिसुण्डी।
आकार—सामान्य सुण्डी के समान।
लक्षण—विभिन्न आकर्षक रंगों वाला यह कीट केटरपीलर के समान खण्ड-खण्ड शरीर वाला होता है।
विवरण—इसकी हजारों प्रजातियां पाई जाती हैं। मानसून की पहली अच्छी वर्षा के बाद इसकी उत्पत्ति होती है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—फसल पीड़क कीट, सचित्र विश्व कोश]

हय [हय] प्रश्नव्या. 1/6 प्रज्ञा. 2/30, 49 जम्बू. 2/65
Horse—घोड़ा देखें—अस्स (अश्व)

हरपोंडरीय [ह्रदपोंडरीक] प्रश्नव्या. 1/9
Spotted or grey Pelican—हवासिल, कुरेर।
देखें—पोंडरीय

हरिण [हरिण] उत्त. 32/37
Deer—मृग देखें—सारंग (चित्तकवरा हिरण)

हलाहला [हलाहला] देशी. 8/63
Snake Skink—सांप की बामणी, नागर बामणी।
देखें—छीरल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हलिद्दपत्त [हरिद्रापत्र] प्रज्ञा. 1/51
Butterfly of Yellow wings—हरिद्रपत्र वाली तितली।
देखें—किण्हपत्त

हलिमच्छ [हलिमत्स्य] प्रज्ञा. 1/56
Pipe Fish—पाइप मछली, हल के आकार वाली मछली।
आकार—नली एवं हल के आकार की लम्बी और पतली मछली।

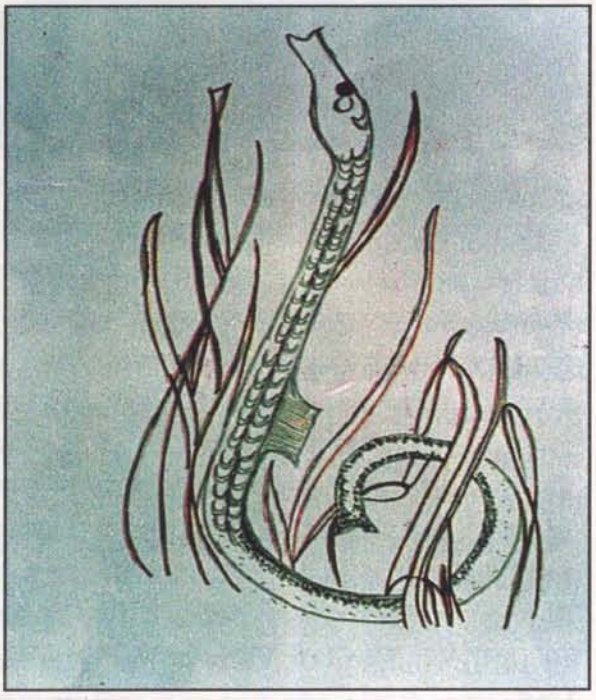

लक्षण—इन मछलियों का शरीर हड्डी की कड़ी खोल के भीतर ढंका रहता है। शरीर का रंग हल्का हरा तथा थूथन हल की भांति मुड़ी हुई।
विवरण—यूरोप, अमेरिका और अफ्रीका के समुद्रों में पाए जाने वाली यह मछली, घोड़ा मछली की भांति आड़ी-तिरछी तैरती है और अपनी दुम के सिरे को किसी पौधे में लपेटकर पानी में एक स्थान पर टिकी रहती है। घोड़ा मछली की भांति अंडों की सुरक्षा का दायित्व भी नर मछली पर ही होता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—जानवरों की दुनिया, रेंगने वाले जीव]

हलीमुह [हलीमुख] जम्बू. 3/35
Avocet—कुशिया चाह
आकार—तीतर की अपेक्षा कुछ बड़ा।
लक्षण—काले-सफेद रंग की आकर्षक कच्छ चिड़िया, जिसके पंख लम्बे नीले और पिच्छहीन होते हैं। काली चोंच ऊपर की ओर कुछ झुकी रहती है। नर-मादा दोनों एक से प्रतीत होते हैं।
विवरण—भारत तथा बर्मा में पाया जाने वाला यह पक्षी जलमग्न पेड़-पौधों व कीचड़ वाली जगहों में काफी दौड़ता फिरता है। उड़ते समय बार-बार ऊंचे स्वर वाली साफ तेज 'क्लीइट' जैसी त्वरित ध्वनि करता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 361]

हलीसागर [हलीसागर] प्रज्ञा. 1/56
A kind of Pipe Fish—पाइप मछली की एक जाति।
देखें—हलिमच्छ

हालाहला [हालाहल] प्रज्ञा. 1/50
A kind of Insect—हालाहल, कीट की एक जाति।
आकार—छोटे, मोटे, लम्बे अनेक आकार वाले।
लक्षण—इस वर्ग के प्राणी का शरीर जुड़ा हुआ सा प्रतीत होता है। पैरों की तीन जोड़ियां होती हैं। कुछ पंख वाले तथा कुछ बिना पंख वाले भी होते हैं।
विवरण—चींटी, गोवरैला, दीमक आदि इस वर्ग के सदस्य हैं। इनकी हजारों प्रजातियां वृक्षों, पेड़-पौधों, मनुष्यों एवं जानवरों के शरीर में प्राप्त होती हैं।

हालाहल [हालाहल] भग. 15/1 प्रज्ञा. 1/50
Jones Saind Boya—दुमुंही सर्प।
विमर्श : राजनिघंटु पृ. 602 में हालाहला शब्द को अज्जिका का पर्यायवाची माना है।
देखें—चक्कलड़

हिल्लिया [हिल्लिया] प्रज्ञा. 1/50
Pectinophora Gossypiella Saunders—गुलाबी डोडा सूंडी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आकार—शरीर एक सेमी. तक लम्बा।
लक्षण—यह गहरा मटमैला भूरे रंग का शलभ है। कपास आदि के डोडों में सूक्ष्म छिद्र से प्रवेश कर बीज और रेशा निर्माण करने वाले ऊतकों को खा जाता है।
विवरण—इसकी भारत में अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। वैज्ञानिक भाषा में इसे 'पेक्टीनीफोरा गोसिपेला सांडर्स' के नाम से पहचाना जाता है। इसकी उम्र काफी लम्बी होती है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—फसल पीड़क कीट, Nature]

हुडुक्क [हुडुक्क] भग. 9/182 ज्ञाता. 1/1/33
White Waterhen—हुडुक्क जलमुर्गी, दाहुक।

आकार—तीतर की अपेक्षा कुछ छोटा।
लक्षण—सलेटी धूसर रंग की छोटी व मोटी पूंछ तथा लम्बे पैर। चेहरा तथा वक्ष सफेद। दुम का निचला भाग जग की भांति चमकीला लाल। नर-मादा दोनों एक से प्रतीत होते हैं।
विवरण—भारत, पाकिस्तान, लंका, अण्डमान, निकोबार आदि में पाया जाने वाला यह पक्षी आमतौर पर शर्मीला और चुप रहता है। चलते-फिरते समय इसकी मोटी पूंछ ऊपर-नीचे, उठती-गिरती रहती है। उड़ते समय तेज, कर्कश एक स्वर वाली किर्र-क्वैक-क्वैक, किर्र-क्वैक, क्वैक या कूक-कूक-कूक जैसी ध्वनि करता है।
[विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य—K.N. Dave पृ. 295]

***

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट-1

अकार आदि अनुक्रम से प्राकृत शब्द, हिन्दी एवं अंग्रेजी अर्थ

अंक	शंख राज की एक जाति A kind of Canch Shell
अंधग	अंधक सर्प A kind of Snake
अंधिय	कैपसिट वग (कीट), अंधा Caipisid bug
अच्छ	रीछ Sloth Bear
अच्छिल	टिड्डी की एक जाति A kind of Locust
अच्छिरोडए	टिड्डी की एक जाति A kind of Loucust
अच्छिवेहए	टिड्डी की एक जाति A kind of Loucust
अट्टिकच्छभ	बाजचोंचा कच्छप, अस्थि बहुल कच्छप Hawksbill
अड	गौरैया, गृह चटक चिड़िया House Sparrow
अडिल	बबीला, बतासी,अडिला House Swift
अडिल	छोटी चमगादड़ The small Bat
अणुल्लक	अणुल्लक, छोटा काष्टकीट A small Wood-Worm
अत्थभिल्ल	भालू Bear
अभिल	भेड़, गाडर, उरभ्र, मेंढ Sheep
अय	बकरी, मेष Goat
अयगर	अजगर, पेरिया पम्बू मालाई पम्बू, मलाम पम्बू Python
अरक	कृमि, लट Worm
अलक्कडअ	पागल कुत्ता Rabid dog
अलस	अलस, छोटा जहरीला कीट A small poisonous animal
अवधिका	दीमक Termite
अस्स	घोड़ा Horse
अस्सतर	खच्चर Mule
अहिणूका	सर्पिणी Female Snake
अहिलोढ़ी	मादा गिरगिट Female Chamileon
अहिसलाग	दुमुंहीसर्प, राजसर्प, श्रेष्ठ सर्प, अहिसलाग Jones saind Boya
अही	सांप, सर्प Snake
आइण्ण	जातिवान् घोड़ा Horse of good breed
आडासेतीय	बाज, कालाबाज, करन- कुल, आडासेतीक Black ibis
आवत्त	घुंघराले बालों वाला भाग्यशाली घोड़ा A horse with curly hair considered lucky
आवल्ल	बैल Bull
आस	घोड़ा Horse
आसालिय	एक बहुत विशाल सांप Very large Snake
आसीविस	आशीविष A snake having poison in large tooth
इंदगोवय	इन्द्रगोपक Insect of red & white colour
इंदकाइय	इंद्रकायिक Insect of red & white colour
ईहामिय	भेड़िया Wolf

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उंदुर	चूहा, मूषक, उंदरा Mouse, Rat
उक्कड	कीट की एक जाति A kind of Insect
उक्कल	मकड़ी, उक्कड़, अष्टा- पद, उत्कल Spider
उक्कलिय	मकड़ी की एक जाति A kind of Spider
उक्कोस	कोहासा, समुद्री उकाव, उत्क्रोश White bellied sea eagle
उग्गविस	उग्रविष The Snake of powerful poison
उट्ट	ऊंट Camel
उद्द	ऊदविलाव, जलमानुष Otter
उद्देसग	खटमल Bed Bug
उद्देसग	दीमक Termite
उद्देहिया	दीमक Termite
उप्पाड़	दीमक की एक जाति A kind of white Ant
उप्पाय	दीमक Termite
उरग	सर्प Snake
उरब्भ	भेड़, मेष, मेंढ Sheep
उरुलुंचग	घीया अथवा कद्दु का कीट, उरुलुंचग Insect of pumpkin
उलाण	शाहबाज, बाज, शिकरा, चिपका, चपाक Crested Hawk-Eagle
उलूक	उल्लू, घुग्घू Indian great horned Owl
उसभ	बैल, सांड़ Bull
उरसासविस	उच्छवासविष A kind of Cobra
ऊरणी	मेष, भेड़ Sheep
एगओवत्त	शंख की जाति Akind of Conch shell
एलग	भेड़, मेष, मेंढ Sheep
ओभंजिया	केकड़ा की एक जाति A kind of lobster
ओलावी	मादाबाज, मादाशाह-बाज Female crested Hawk-Eagle
ओवइय	कीट की एक जाति, औपपातिक A kind of Sykid
ओहार	बाज चोंचा कच्छप, अस्थि बहुल कच्छप Hawksbill
ओहिंजलिया	केकड़ा की एक जाति A kind of Lobster
कंक	कोहासा, सफेदचील, कंक White bellied sea-eagle
कंथग	कंथक घोड़ा A species of Horse
कंदलग	घोड़े की एक जाति A kind of horse
कंदलग	उड़ने वाली गिलहरी, उड़न मनकी Flying Squirrel
कंदलग	सिरि, कठकोड़िया, कंदलग Chestnut buillied Nuthatch
कंबोय	अफगानिस्तान के एक भाग में उत्पन्न घोड़ा A species of Horseborn in a province of Afghanisthan
कच्छभ	कछुआ, कच्छप Tortoise, Turle
कट्ठाहार	काष्ठहारक, घुन Woord worm, furniture beetle
कणग	अनाज के घुन Grain-Worm
कणिक्कामच्छ	तंदुल मत्स्य की एक जाति A kind of rice Fish
कण्णतिय	जंगली मुर्गा, धूसरवन कुक्कट Grey jungle Fowl
कण्हसप्प	कालासर्प, अहीराज, कृष्ण सर्प, संख मुखी, संखचुर Black Cobra
कप्पास- ट्ठिसमिंजिय	कर्पासस्थि मिंजक, कपास की सफेद मक्खी White fly in the kernel of cotton seed

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कमल	सुंदर हिरण A beautiful deer
कमल	कैम, खारीम, फार्म,कमल Purple Moorhen
कमेड	गिलहरी Squirrel
कमेड	छिपकली Lizard
करभ	ऊंट का बच्चा Young of Camel
करभ	हाथी का बच्चा Young of Elephant
कलभ	30 वर्ष का हाथी Thirty years old Elephant
कलहंस	अत्यंत घूसर रंग का हंस, कलहंस, स्वान,वीरवा Barheaded Goose
कलुय	कृमि की एक जाति, कलुस A kind of Worm
कवि	बंदर Monkey
कविंजल	बड़ा पत्रिंगा, लाल सिर का पत्रिंगा, तीतर, पतेना, Blue tailed bee eater
कविंजल	पपीहा, चातक, कपक, उपक Common hawk, Cuckoo or Brainfever bird
कविंजल	गौरैया, गृह-चटक House Sparrow
कविंजल	तीतर, सफेद तीतर Grey Partidge
कविल	काला तीतर, कविल Black partridge
कवोय, कवोयग, कवोत, कवोतग	घूसर रंग का कबूतर Blue rock Pigeon
कसाहिय	गैरुएं रंग का सर्प, कषा धिक सर्प Snake of white-red colour
काउल्ली	छोटा वगुला, किल चिया, करचिया Little Egret
काओदर	करैत, काकोदर, काला गंदैत, कालोदर, कालातरो, कंदर, कातुविरियन Common krait
काक	कौवा, देसी कौवा, घरेलू कौवा House Crow
कादंवग	कलहंस, वीरवा, कांदवक Barheaded Goose
कामदुहाधेनु	कामधेनु गाय A fabulous cow yielding all desires
कामंजुग	पीपी, कुण्डई, कटोई, पिहु, पिहुआ, कामंयुग Winged Jacana
कारंडव	बत्तख, अयरी, ठेकरी, खुशकुल, सरार, कारण्डक Coot
कालोइक	नकुल की एक जाति, मंगूसा, चिंचिला, कालोकी Chinchilla
किण्हपत्त	कृष्ण पत्र वाली तितली Butterfly of black wings
किण्हमिग	काला हिरण Black deer, Black buck
किमिय	कृमि Worm
कीड़	कीट, कीड़े Insect
कीडज	कृमिकोश, रेशम का कीड़ा Silk-worm, Silk-cocoon
कीड़ी	चींटी Ant
कीर	तोता, सुगा, कीर, रक्ततुण्ड Parakeet
कीव	किवी, किव Kiwi
कुंकुण	पिस्सू की एक जाति A kind of flea
कुंच, कोंच	कोंच, कुंज, कुंच, कुरर, खर क्रोंच, कर्करा Demoiselle-crane
कुंजर	हाथी Elephant
कुंथु	कुंथु Very very small Insect
कुंदुल्लुय	उल्लू, घुग्घू Indian great horned owl
कुक्कुड़	मुर्गा, जंगली मुर्गा, धूसर वन कुक्कुट Grey Junle fowl

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुक्कुड़	पिस्सू की एक जाति A kind of flea
कुक्कुह	स्केल्स, कुक्कुह, कुम्बर, मोजेक Scelsa
कुच्छिकिमिय	उदरप्रदेश में पैदा होने वाले कृमि A worm found in the cavity of the abdomen
कुम्म	कछुआ, कूर्म, कच्छप Toroise, Turtle
कुरंग	साधारण मृग, बादामी या तामड़े रंग का मृग General deer
कुरर	खरक्रौंच, कर्करा, कुंज, कुरर Demoisella crane
कुररी	सरित गंगाचील, टिहरी, कुररी River tern
कुररी	टेहरी, कुररी, भारतीय गुम्फ, कुररी Indian whiskeredturn
कुरल	मछली मार, मछरंग, मत्स्य कुररी, कुरल Osprey
कुलक्ख	लाल मुनिया, कलाक्ष सिनिवाज, नकलखौर Red munia, Waxbill
कुलल	मार्जार, बिलाव Cat
कुलल	डोगरा चील, कुलल Crested Serpent eagle
कुलाल	मार्जर, बिलाव Cat
कुलाल	उल्लू Mottled Wood Owl
कुलाल	जंगली मुर्गा, मुर्गा, वन कुक्कुट Red junle fowl
कुलीकोस	वागहंस, राजहंस, हंस, छाराज वागो Flamingo
कोइल,कोइला	कोयल, कोकिला, कूक्कू Koel
कोंडलग	कोरा, कोंडलग, कोंगरा, कांगाड़, जलमुर्गा Kora, water cock
कोकंतिय	लोमड़ी Fox
कोणालग	कोरा, कोंडलग, कोंगरा, कांगाड़ जलमुर्गा Kora, water cock
कोत्थलवाहग·	सड़ान पैदा करने वाला कीट A kind of Insect
कोल	चूहे की विशेष जाति, कोल Lemming
कोल	काष्ठ-कीट Wood-worm, Furniture beetle
कोल	सूअर Pig
कोलसुणग	जंगली सूअर, बनैला सूअर, वन्य वराह Wild Pig, Wild Bor
कोलसुनय	जंगली कुत्ता Wild Dog
कोलाहा	करैत सांप की एक जाति A Kind of Krait Snake
कोली	मकड़ी Spider
कोल्लग	सियार Jackal
कोल्हुक	गीदड़, सियार Jackal
कोसिकार	रेशम का कीड़ा Silk-worm, silk-cocoon
कोड़	जलकोपी, पीपी, कुनजै
कोहंगक, कोंरंग	क्रोधाङ्ग, कामंयुग Bronze Winged Jacana
खंजण	मामुला, खंजन, वृहत् शवल, खंजन large Pied Wagtail
खग्ग,	खग्गी, गेंडा Rhinoceros
खज्जोत,	प्रकाश पैदा करने वाला कीट, जुगनू A fire-Fly, Glow-Worm
खन्न	चाऊपिन, घंटी जैसीआवाज करने वाला मत्स्य, खन मछली Chaupein
खर	अंधा वगुला, बुला नामक जल पक्षी, खर Paddybird, Pond heron
खर	गधा Donkey
खलुंक	अयोग्य बैल Restive Ox, Restive Bull

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खवलमच्छ	चाऊपिन की एक जाति, खन्न मछली की एक जाति A kind of Chauepein fish
खाडइल, खाडहिल, खाडलिल्ल, खाडहिल्ल, खाडहेल्ल	गिलहरी Squirrel
खार	डकबिल, प्लैटिपस, बत्तख चोंचा, खारी Duck-billed, platypus
खुरदुग	चर्मकीट Skin insect
खुल्लय	समुद्री शंख के आकार के छोटे शंख Shells
गंड	गेंडा, खग्ग, गंड Rhinoceros
गंडूयलग	केंचुआ Earth Worm
गंडूयलग	गिंडोला, पेट की कृमि A worm found in the abdomen
गन्धग	गन्धक सर्प A kind of snake
गंधहत्थि	श्रेष्ठ हाथी Elephant of good breed
गंभीर	केकड़ा की एक जाति A kind of Crab,
गद्दभ	गधा Donkey
गय	हाथी Elephant
गरुल	गरुल पक्षी, गरुड़ पक्षी Golden Eag'e
गलियस्स	अविनीत घोड़ा Restive Horse
गवय	नील गाय, रोझ, गवय Blue Bull
गवल	जंगली भैंसा, विशन Wild Buffalo
गवेलक	भेड, गाडर, मेंढ Sheep
गहरा	गिद्ध White backed or Bengal vulture
गहरा	गेहवाला, वगवाद, भट जल रंक Ruffand Reeve
गागर	गागर, गर्गर मत्स्य, गागूरा मत्स्य Gagar-fish
गाव-गाय	गाय Cow
गावी	गाय Cow
गाह	घड़ियाल, गेवियल Crocodile, Geviyelis gentetices
गिद्ध	गीध, गिद्ध White backed, Bengal vuture
गोकण्ण	चौसींगा हिरण, गोकर्ण A Deer Antelope Picta
गोजलोय	गोजलौक, जौंक की एक जाति A kind of leech
गोण	बैल, सांड़, खाग्गड़ Ox, Bull
गोणस	गोनस, वोद्र, घोनस, गोनास Russells Viper
गोमय कीडग	गौवरेला Beetle
गोमाऊ	श्रृंगाल, सियार Jackal
गोम्ही	कानखजूरा Centipede
गोरक्खर	जंगली गधा, गौर-खर, घोड़ खर Wild Donkey, Wild Ass
गोरमिग	गौरमृग, सफेद हिरण White Deer
गोरहग	तीन वर्ष का छोटा बछड़ा Calf
गोलोम	गोलोम, जौंक की एक जाति A kind of leech
गोह	गोह, दिपखपरिया, चंदनगो Lizard
गोह	पीलक, पान पीलक, पीलाखंजन Yellow wagtail
घरोइल	छिपकली की एक जाति, घरेलू छिपकली Kind of Lizard
घुण	घुण Wood-Worm, A weevil
घूय	उल्लू, घुग्घू Indian Great Horned owl
घुल्ला	घोंघरी, छोटा शंख A kind of shell

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घोड़ग	घोड़ा Horse
चउरग	गुन्द्रा, गूलु, चकोर Common or Blue Legged busturd-Quail
चंदण	चंदनिया, अक्ष Chandana
चकोर	गुन्द्रा, गुलू, चकोर Common or Blue Legged busturd-Quail
चक्कलड़ा	जोंस सैण्ड बोआ, दु-
चक्कबुंडा, चकुलेंडा	मुंही सर्प, राजसर्प, श्रेष्ठ-सर्प, तेलिया सर्प, सेवी-पम्बू वला, अनसप Jones Saind Boya
चक्काग	चकवा, चकवी, सुर्खाव The Ruddy Sheldrake,
चक्कबाग	चक्रवाक The Ruddy Sheldrake, Brahminy duck
चडग	चिड़िया, गृह चटक, गौरैया House Sparrow
चमर	चमरी गाय A kind of Ox called yak
चम्मट्ठिल	चमगादड़ A bat
चास	नीलकंठ, सवजक, चाष, पाला पित्ता, पालकुर्वी Roller, Blue Jay
चिडग,	रुगेल, चरचरी, चिड़िया चिडिग Indian pipit
चित्तचिल्लय	तेंदुआ, गुलदार, चित्तचिल्ला Panther
चित्तपक्ख	चित्तिदार पंख वाला पतंगा Moth of spotted wings
चित्तपत्त	चित्तिदार पंख वाली तितली Butterfly of Spotted Wings
चित्तलणा	चीतल White Spotted Antelope
चित्तलि	नाग की एक जाति, चितल A Kind of Cobra
चिल्ललक	चीता Cheetah
चोर	चोरा, रेटेल Ratel
छगल	बकरा/बकरी Goat
छप्पय	जूं, छप्पय Louse
छप्पय	भंवरा A black Bee
छाणबिच्छुय	गोबर का बिच्छु Scorpion of dung
छीरल	नागर वामणी, सांप की वामणी, वामणी, क्षीरल Snake-Skink
छीरविरालिया	गंध विलाव, स्कंक Skunky civet cat, Weasel
छुद्दिका	छछुंदरी Moles, Shrewls
छेलिय	छोटी बकरी Lamb
जंबुय	सियार, गीदड़ Jackal
जमग	शकुनि, कपासी, मसुनवा, कृष्ण पक्ष चील, जमग Black Winged Kite
जगग्गव	बूढ़ा बैल Old Ox
जरुल	वृक्ष का भृंग, जरुल, कृमिकोश Beetle of Tree
जलकारि	केकड़ा, जलकारि, जलचरा Lobster, Crab
जलचारिय	केकड़ा Crab, Lobster
जलबिच्छुय	जल का विच्छु Scorpion of Water
जलोउया	जलोयुक्त, जौंक की एक जाति A kind of Leech
जलोय, जलूग	जौंक Leech
जलोय	बड़ी बतासी, जलौक Alpine Swift
जालग	जालक, कीट की एक जाति A kind of Worm
जालग	मकड़ी Spider
जाहक	जाहक, झाऊ चूहा, कांटों वाला चूहा Hedgehog

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीवंजीव	गुद्रा, गूलु, चकोर Common or Blue legged bustard	णेउर	कृमि की एक जाति, झिटिका, नउरा, निरा A kind of worm
जुगमच्छ	मछली की एक जाति A kind of fish	णेउर	कीट की एक जाति A kind of insect
जुवंगव	तरुण बैल Young OX	तउसमिंजिया	कट सरैया कीट, हल्दी कस्तूरी कीट, खीराकीट Tausmingiya
जूया	जूं Louse	तंतवग	तिलचट्टा Cockraoch
झस	मछली, मत्स्य Fish	तंदुलमच्छ	तंदुलमच्छ, मत्स्य की एक जाति A Kind of Fish, Rice Fish
झिंगिरा	झिंगुर Cricket	तणविंटिय	खपराकीट की एक जाति A kind of Trogoderm gramarium everts
झिंगिरिड़ा	झिंगुर Cricket	तणाहारा	तृणाहारक, पत्राहारक Crop Pest
झिल्लिया	झिंगुर Cricket	तयाविस	त्वचाविष A kind of Cobra
टिट्टिभी	टिटहरी, टिटीरी, टिटूरी जिरिंआ, मिरवा, छोटा बाटन Plover	तरच्छ	लकड़बग्घा Hyena
डंस	डांस A kind of Large Sized Mosquito	तिड्ड	टिड्डी Locust
डोल	टिड्डी, फड़का, विट्टिल,मिद्था, टिड, पुल-पोंडु, झिटिका, जिट्टी, नाक तोड़ Locust	तितिर	भटतीतर, तीतर Common Sandgrouse
ढंक	जंगली कौवा, डाल कौवा, ढींकड़ा, बड़ा काक, ढिंक जंगली कौवा, द्रोण-काक, ढिंक कौआ, बड़ा काक Junle Crow	तितिर	तीतर, घूसर तीतर
		तिंदुग	तेंदु के फल का भृंग Beetle of Ebony tree
		तिमि	तिमि मत्स्य, वज्राभु-कुलिश A kind of Fish, Timifish
ढिंकुण	पिस्सू, ढिंकुण Flea	तिमिंगल	तिमिंगल मत्स्य Timingal Fish
ढेलियालग	मयूरनी, मोरनी Female Common Peatown	तिल्लहटिका	गिलहरी Squirrel
णउल	नकुल Mongoose	तुरग	घोड़ा Horse
णंदीमुह	पीलक, कृष्णशीर्ष ओरिओल, णंदीमुख Black beaded orioll	तेदुरणमज्जिया	तेदुरण मज्जिया A kind of Insect
णंदियावत्त	शंख की एक जाति A kind of Conch Shell	तोट्ठा	कृमिकोश, रेशम का कीट Silk-worm, Silk-Cocoon
णक्क	तिमि मत्स्य की एक जाति A kind of Timifish	दंस	डांस A kind of Large Sized Mosquito
णागिंद	शेषनाग, शंखचूड King Cobra	दगतुंड	लग्गर, रघट, खगान्तक, दगतुंड़ Laggar-falcon
णीणिया	कैपसिट कीट की एक जाति A kind of Caipsid bug	दगरक्खस	जलराक्षस Sea devil

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दद्दुर	मेंढक Frog
दद्दुर	छिपक, दाब-चिरी चपक, नाइट जार Frog-bird, Night-jar
दब्भपुष्क	दर्भपुष्क सर्प, दर्भकु सुम, पत्रपुष्फ Frog-bird, Night-jar
दव्वीकर	फन वाले सांप The expanded hood of a Snake, A Snake having A Hood
दिट्ठिविस	दृष्टिविष सर्प A kind of Cobra
दिली	घड़ियाल की एक जाति A kind of Crocodile
दिलिवेढ़य	पूंछ से लपेटने वाला जलीय प्राणी, समुद्री घोड़ा Sea-horse, Hipoocampus
दिव्वा	कोरल, दीप्ति युक्त चमकीला सर्प Koral
दिविग	चित्तदार तेंदुआं Leopard
दीविय	चित्रक/पाखता, चित्ता फाखता, पर्की Spotted Dove
दुलि	कच्छप Tortoise, Turtle
दुहओवत्ता	द्विआवर्त A small Shell or A kind of Shell
दोल	हरे रंग की टिड्डी, खड-माकड़ी Locust of green colour
धत्तरट्ठ	कलहंस, धृतराष्ट्र Barheaded goose
धवलवसह	सफेद बैल White Ox
धेणु	गाय Cow
नंदमाणग	गायक चिड़िया, नंदमाण Song bird
नंदावत्त	मकड़ी की एक जाति A kind of Spider
नाग	नाग Cobra
नाग	हाथी Elephant
निस्सासविस	निःश्वास विष A kind of Cobra
नीय	तिलचट्टा की एक जाति A kind of Cockroach
नीलच्छाय	ललिता, पाना-कारा, कुरुबी, नीलपरी Fiary Blue bird
नीलपत्त	नील पत्र वाली तितली Butterfly of Blue wings
नीलमिग	नीलमृग Blue deer
पंगुल	खकूसट, खूसटिया, चुगद, विन्दुकित उलूक The Spotted owlet
पक्खिविराली	उड़ने वाली लोमड़ी, बड़ी चमगादड़ Flying fox, the large fruit Bat
पडागा	पताका वाली मछली A fish having a flag, Monster
पडागा	पताका वाला सर्प, उड़ने वाला सर्प, कालाजीन, माल-कारावला Flying-Snake, Golden Tree-Snake
पडागाति	समुद्री गाय, उड़ने वाली
पडागा	मछली Sea Cow, Flying Fish
पड्डिका	पाड़ी, बछिया Calf
पत्तविच्छुय	पत्र विच्छु, पत्र वृश्चक Scorpion of Leaf
पत्ताहार	पत्राहारक Crop Pest
पयंग	पतंग Moth
पयलाइया	बीवर, प्रचलिका Beaver
परस्सर	वॉम्बेट, परस्पर Wombat
परस्पर	अष्टापद, शरभ, परासर, परिसर A Fabulous animal
परिसर	अष्टापद, शरभ, परिसर A Fabulous animal
पल्लोय	पल्लोय, काष्ठकीट Wood-worm

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पसय	गौर, दो खुरवाला जंगली पशु India Bison
पाठीण	पाठीन मत्स्य, पठिन-मत्स्य, वागुस, वागुजा-रक, कण्टकपार्श्व, वर्तुल मत्स्य A kind of Fish
पायकुक्कुड़	लाल वन कुक्कुट, पद- कुक्कुट, जंगली मुर्गा Red Jungle Fowl
पायहंस	गिरिभा, गुड़गुड़ा, पायहंस Cottonteal
पारिप्लव	जलमुर्गी, डोक, जलकुक्कुटी Whiterbreasted Waterhen
पारेवय	सामान्य हरा कबूतर Common green Pigeon, Nilgiri wood Pigeon
पाहुया	कीट की एक जाति A kind of insect
पिंगलक्ख	जंघिल, डोख, कनकरी, झींगरी, विचित्र बलाक Painted Stork
पिंगुल	खकूसट, खूसटिया, चुगद The Spotted owlet
पिपीलिया	चींटी Ant
पियंगाला	फालामास्टर Blister Beetle
पिसुग	चींचड़, पिस्सू Assassin Bug
पिसुया	पिस्सू Flea
पीलग	पीलक Golden oriole
पुंसकोइल, पुसकोइलग	महुका, कुका, कूक्कू Crow-Peasant, Couca
पुलग	घड़ियाल की एक जाति A kind of Crocodile
पुलय	कीट, लट Worm
पुलाकिमिय	मलद्वार में उत्पन्न होने वाली कृमि A kind of Worm
पुप्फविंटिय्	खपरा कीट Trogoderma granarium Everts
पूयण	गाड़र, भेड़ Sheep
पोंडरीय	हवासिल, कुरेर, विंदु- चंचु, धूसरपेलिकन Spotted-billed, Greypelican
पोत्तिय	ततैया, टाटिया, वर्र, बीरड़ A Wasp
फलविंटिय	फलचूस शलभ Clerk or Materna
वंसीमुह	बंशीमुख, वसीमुहा A kind of Worm
बग	किलचिया, कारचिया, वगला, छोटा वगुला Little Egret
बरहिण	मोर, मयूर Common Peafown
बलागा	सुर्खिया वगला, गाइ बगला, पशु बगला, बगुला Cattle Egret
बहुपय	बहुपैर वाला जीव, मिलीपेड Millipede
बहिलग	बैल Ox
बाल	बाघ, व्याघ्र Tiger
बाल	सांप Snake
बाहुलेर	काला बछड़ा Black Calf
बीयंबीयग	बबीला, बतासी, अडिला A kind of House Swift
बीयबावय	एक जंतु, बीजबापक A kind of Crop insect wich feeds on grain
भमर	भौंरा, भंवरा A Black bee
भरिली	आम्र गुठली घुन Beetle of Mango Stone
भल्ल	भालू Bea.
भसुय	भालू Bear
भारंडपक्खी	भारुंडपक्षी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

A kind of Fabulous Bird

भास — सफेद गिद्ध, गोवर गिद्ध, भास
White Scanvenger Vulture, pharachschicken

भिंग — शंकर खोरा, सूर्य पक्षी भृंग पक्षी
Purple Sunbird

भिंग — भंवरा
A Black Bee

भिंगारग — भुजंगा, कोतवाल, भृंगारक
Black Drongo, King Crow

भिंगारी — भृंगरीटक
Cricket

भेणासि — भोरा, भोअरा, लटकन, भेणस
Indian Lorikeet

भुयंग — सांप
Snake

भुयईसर — शेषनाग, शंखचूड़, अहिराज, शाखामुती, कृष्णनागम, कारुनागम, कृष्ण सर्पमू
King Cobra

भोगविस — भोग विष, शरीर में विष वाले सर्प, फन में विष वाले सर्प
A kind of Cobra

भोगि — सर्प
Snake

मउलि — मुकलीसर्प
With out hood Snake

मंकुलहत्थि — विना दांत वाला हाथी या उसका बच्चा
Elephant without Tusk

मंगु — जलकाक, पनडुब्बी, बानवी, सर्पपक्षी
Snake-bird, Darter

मंगुसा — गिलहरी के आकार का जीव, चिंचिला, मंगूसा
Chinchilla

मंडलि — मांडली सर्प, करैत कुंड लिया सर्प
A venomous Black Snake

मंडुक्क — मेंढक, दर्दुर
Frog

मंदुय — घड़ियाल की एक जाति
A kind of Crocodile

मंधादय — मेष, गाडर
Sheep

मंस — चित्तिदार लिनसेंग, मांस
Spotted Linseng

मंसकच्छभ — चीमड़ काछुआ, मांस बहुल कच्छप
Leathery, Truck Turtle

मक्कड़ा — मकड़ी
Spider

मक्कोडग — मकोड़ा, चींटा
A Big black Ant

मगर — मगरमच्छ
Alligator

मग्गरिमच्छ — अष्टापद, आठ भुजाओं वाला जलीय जंतु
Octopus

मग्गुक — जलकाक, पनडुब्बी, बानवी
Snake-bird or Darter

मच्छ — मत्स्य
Fish

मच्छिया — मक्खी
Fly Bee

मज्जार — बिल्ली
Cat

मट्ठमगर — मृष्टमकर, नदीमुख मगर
A kind of Alligator, Crocodile Porasis Snider

मयणसाला — मैना, गंगामैना, बरादमैना
Bank Myna

मयूर — मोर, मयूर
Common Peafowl

मरुयवसभ — बैल
Ox

मसगा — मच्छर
Mosquito

मसूर — कस्तूरा, मसूरिया, भाईऔफोनियस
Malabar Whisting Thrush

महिस — भैंस
Buffalo

महुयर — भौंरा
A Black bee

महुयर — शकरखोरा
Purple Sunbird

महुयर — मधुमक्खी
Honey bee

महोरग — एक विशाल सर्प, महोरग
Very Large Snake

माइवाहया — मातृवाहक, चुड़ैल
Matri-Vahaka

मातंग — हाथी
Elephant

मालि — मांडलीसर्प की एक जाति
A kind of Venomous Black Snake

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मालुया	मालूका, माहू Lipaphis erysimi Kaltenbach
माहए	कीट की एक जाति A kind of Insect
मिय	सामान्य हिरण Deer
मियवति	सिंह Lion
मुइंगा	चींटी Ant.
मुगुंस	मंगूसा, चिंचिला Chinchilla
मुद्धय	घड़ियाल की एक जाति A kind of Crocodile
मूसग	चूहा Mouse, Rat
मेंढ	भेड़, गाडर, मेष Sheep
मेलिमिंद	दुबोइया सर्प की एक जाति, मेलिदा, हरा गोनाश, कन्नाडीविरयम, कतकाइया नाग A kind of Viper
मेसरा	गुडेरा, जंगराल, खग, मालगुझा, गाडविल, मेसरा Black Taled Godwif
मोत्तिय	मूत्रिक, सीप की एक जाति A peart Oyster
रायहंस	राजहंस, बोगहंस, श्रेष्ठ- हंस, छाराजवागो Flamingo
रिट्ठग	जंगली कौवा, वड़ाकाक, ढिंकड़ा, द्रोण काक, डालकौवा Jungle Crow
रिसह	वैल, सांड़ Ox Bull
रुरु	काला हिरण A spepcies of antelope, Black Deer
रोज्झ	नीलगाय, रोझ Blue Bull
रोहिय	नील गाय, रोझ Blue Bull
रोहियमच्छ	रोहित मछली, रोहू मछली, वाम मछली Rohit Fish
रोहिणीय	कीट की एक जाति A kind Sykids
लंभणमच्छ	ईलमछली, लंभणमत्स्य Eel fish
लंभणमच्छ	ध्वनि करने वाली मछली, साही मछली, लंभण मछली Sound Fish
लुंकड़ी	लोमड़ी Fox
लालाविस	लालाविष सर्प A Snake Having A drive Poison, Ringhal
लावग	लावा, पीतपदलाविका Indian or yellow legged button Quail
लिक्ख	लिक्ष Anit, or A tiny louse
लिक्ख	लिख, खरमोर Lesser Florican
लोट्टिया	हाथी की छोटी बच्ची Young Female elephant
लोमठिका	लोमड़ी Fox
लोहितपत्त	लोहित पंख वाली तितली Butterfly of Red wings
वइउल	बौआ, विटपिन सर्प, वाइनसर्प, व्यतिसर्प, गूवरा, अंकोरा, मनीयर A kind of Boya
वंजुलग	पनडुव्वी, डुवडुवी, लओकरी, वैंजुलक Little Grebe or Dabchick
वग्गुली	वड़ा कारवानाक, महान पाषाण प्लावर Great Stone Plover
वग्गुलिया	हिरण Deer
वग्घ	वाघ Tiger
वच्छग	वछड़ा Calf
वट्टग	वटेर, धूगुस, वटेर, धूसर वटेर Common orgrey Quail
वड	लोमड़ी के आकार की मछली, सकुची मछली, वड़ी चमगादड़ मछली Flying fox, Large Bat fish
वडगर	चमगादड़ मछली की एक जाति, सकुची मछली की एक जाति A kind of Large bat fish
वडवा	घोड़ी Mare

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वरतुरग	श्रेष्ठ घोड़ा A Well bred Horse
वराडग	कौड़ी Cowre
वराह	सूकर Pig
वराहि	नाग की एक जाति, दृष्टि विष सर्प A kind of Cobra
वरेल्लग	कौरिल्ला, किलकिला, वरेल्लग Black Capped King Fisher
वसह	वैल Ox
वाउप्पइय	उड़ने वाली छिपकली Flying Dragon
वाणर	वंदर Monkey
वायस	कौआ, देसी कौआ House Crow
वारण	हाथी Elephant
वालग	सांप Snake
वास	केंचुआ Earth-worm
वासीमुह	वासीमुख, वसुले के तुल्य मुंह वाला कीट Vasimukh
वाह	घोड़ा Horse
विंछिए	विच्छु Scorpion
विग	भेड़िया Wolf
विच्छुत	विच्छु Scorpion
विचित्तपक्ख	विचित्र पंख वाला पतंगा Moth of many colour wings
विचित्रपत्रए	विचित्र पंखों वाली तितली Butterfly of Many colour wings
विज्झिडिय-मच्छ	मत्स्य की एक जाति, विज्झिडियमत्स्य A kind of fish
विततपक्खि	विततपक्षी, पक्षी विशेष A kind of Bird
विदंसग	शाहवाज, शिखश्येन उकाव, शिकरा, चिपाका, चपाक Crested Hawk Eagle
वियग्घ	वाघ Tiger
विलय	पीलक Golden Oriole
विरली	झिंगुर की एक जाति A kind of Cricket
विराल	वन बिलाव Wild Cat
विस्संभरा	छंछूदर Moles, Shrews
विहंगम	भौंरा A Black bee
विहंगम	शकर खोरा, सूर्य पक्षी Purple Sunbird
वीयविंटिया	खपरा कीट की एक जाति A kind of Trogoderma granarium Everts
वीरल्ल	वाज पक्षी, लग्गर Lagger Falcon
वेढला	घड़ियाल की एक जाति A kind of Crocodile
वेणुदेव	गरुल Golden Eagle
वेसर	चुघट, बसरा, भूरावाज उल्लू Brown Hawk-owl
वोंड	छोटा बगुला, किलचिया Brown Littlw-Egret
सउणि	कपासी, मसुनवा, शकुनि Black winged Kite
संख	शंख Conch shell
संखणग	शंखनक Shells
संड	वैल, सांड़ Bull
सदंसगतुंड	ढंक, वड़ाकाक, द्रोण काक, ढिंकणा Jungle-Crow
संवर	मृग की एक जाति Antelope
संवुक्क	घोंघा Snail

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सकुलिया	शकुनि, कपासी, मसुनवा Black winged kite
सण्हमच्छ	एंगरफिश की एक जाति, प्रकाश पैदा करने वाली मछली, गूज मछली, सण्हमत्स्य A kind of Angler fish
सतपत्त	कठफोड़वा, सोनपीठा Golden backed wood pecker
सतवाइया	कानखजूरा Centiped
सत्तवच्छ	गुडेरा, जंगराल, खग, मालगुझा Black Tailed Godwit
सदावरी	कीट की एक जाति A kind of Insect
सप्पी	नागिन Femal Cobra
समुग्गय	जल-बिलाव, जल मानुष, ऊदबिलाव Otter
समुग्गय	जलकाक, पनडुब्बी Snake-bird, Darter
समुग्गपक्खी	समुद्र पक्षी Sea-bird
समुद्दलिक्खा	समुद्र-लिक्षा Sea-Louse
समुद्दवायस	समुद्रकाक, धोमरा, वभ्रुशिर गल Brownheaded Gull
सरंड	गिरगिट की एक जाति A kind of Chameleon
सरंव	नागर बामणी Snake-Skink
सरड	गिरगिट की एक जाति, A Kind of Chameleon
सरव	साल, सिल्लू, वनरोहू, काठपोह, सार, सरैव Pangolin
सरभ	अष्टापद, सरभ, परिसर, परासर A Fabulous Animals
सरहा	मधुमक्खी Honey bee
सराडि	सिल्ही, सिलकही, लघुशरालि Lesser Whistling Teal
सल्ल	कंटीला चींटीखोर, एकिडना, सिल्ल Anteater, spiny Anteater, Echidna
ससय	खरगोश Rabbit
साण	कुत्ता Dog
सामलेर	चितकबरी गाय का बछड़ा Calf of a spotted cow
सारंग	कोयल, महुका Koel, Crow-Pheasant or Coucal
सारंग	हाथी Elephant
सारंग	सिंह Lion
सारंग	चितकबरा हिरण A Spotted Deer
सारंग	पपीहा, चातक, कपरा Small green billed Malkoha
सारंग	मयूर Common-Peafowl
सारंग	राजहंस, वोगहंस Flamingo
सारंग	भंवरा A Black bee
सारंग	सारस Sarus Crane
सारा	पेंगोलीन, साल, सिल्लू, वनरोहू, काठपोह, सरैव, सार Pangolin
सारिआ	पहाड़ी मैना Hill myna
सालग	सालक, कंठवाल वया, कृष्णपक्ष वया, सर्वो वया Black breasted Weaver Bird
सालिसच्छिय	तंदुल मत्स्य की एक जाति A Civet-Cat-Fish
मच्छ	A kind of Ricefish
सावय	सील, जलव्याघ्र, वालरस, सवका, सावियो Seal
सिंगिरीडी	मकड़ी की एक जाति A kind of Spider
सिप्पिय	सीप Oyster
सिप्पिसंपुड	संपुटाकार सीप Oyster, Claime
सियाल	गीदड़, सियार Jackal
सिरिकंदलग	गधे की एक जाति A kind of Donkey
सिरीसिवा	जलसर्प Komodo-Dragon

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिवा	सियारनी Female Jackal
सिहि	मोर, मयूर Common Peafowl
सिहि	मुर्गा Red Jungle Fowl
सिहीमच्छ	नोकीली थूथन वाली मछली, तेगा मछली A Fish having A long pointed mouth
सीह	शेर, सिंह Lion
सीमागार	सीमागार या दलदलीय मकर Lesion
सुक्किलपत्त	श्वेत पंख वाली तितली Butterfly of White Wings
सुग	तोता, शुक, मदनमौर Blue Winged Parakeet
सुणगा	कुत्ता Dog
सुंसुमार	सूंसमछली, शिशुक, शिशुघ्न Gangetic Porposie
सुंसुमार	शिशुमार, सुंसुमार, डॉलफिन, सिहों, सूंस Dolphin
सुयविंट	सूंडी की एक जाति, A kind of Rectinophoragossypiella Saunders
सुवण्ण	शाहबाज Crested Hawk-Eagle
सेडी	सिल्ही, सिलकहीं Lesser Whisting Teal
सेण	बाजपक्षी, लग्गर Lagger falcon
सेदसप्प	श्वेत सर्प, थामन, सराइपम्यू, चेरा, गोला सांप Snake of White Colour, A kind of Cobra
सेहा	चलोतरा, धनेश, सेलगिल्ली Common grey Hornbill
सेहा	साही, सेही Hystrix, Porcupine
सोंडमगरा	सौण्डमकर A kind of Alligator
सोत्तिय	सौत्रिक, सीप की एक जाति A kind of pearl Oyster
सुणी	कुतिया Bitch
सूयर	सूकर Pig
सुभगा	सुभग, त्रपुषमिंजक की एक जाति A kind of Insect
सुईमुह	वया, सुचिमुख Baya Weaver Bird
सूईमुहा	सुचिमुख Pyrilla
सोमंगल	सौमंगल, विषैला कीट Somangla, Poison Insect
सोयरिय	सूकर Pig
सोवच्छिय	कीट की एक जाति, सोवत्सिक A kind of Insect
हंस	राजहंस, बोगहंस, श्रेष्ठहंस, छाराजवागों Flamingo
हत्थी-पूयणया	हाथी की एक प्रजाति A kind of Elephant
हत्थिसोंडा	हस्तिसुण्डी A kind of Caterpillar
हय	घोड़ा Horse
हरपोंडरीय	हवासिल, कुरेर Spotted or grey Pelican
हरिण	मृग Deer
हलाहला	सांप की वामणी, नागर वामणी Snake Skink
हलिद्दपत्त	हरिद्रपत्र वाली तितली Butterfly of Yelow wings
हलिमच्छ	पाइप मछली, हल के आकार की मछली Pipe Fish
हलीमुह	कुशिया चाह Avocet
हलीसागर	पाइप मछली की एक जाति A kind of Pipe fish
हालाहल	कीट की एक जाति A kind of Insect
हालाहल	दुमुंही सर्प Jones Sained boya
हिल्लिया	गुलाबी डोड़ा सूंडी Pectinophora Gossypiella Saunders
हुडुक्क	हुडुक्क, जल मुर्गी दाहुक White Waterhen

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट-2

द्वीन्द्रिय जीव-जिन जीवों के स्पर्शन और रसन-ये दो इन्द्रियां होती हैं, वे द्वीन्द्रिय जीव हैं।

अंक	गंडूयलग	पुलय	समुद्दलिक्खा
अणुल्लक	गोजलोय	पुलाकिमिय	सिप्पिय
अरक	गोलोम	बंसीमुह	सिप्पिसपुंड
अलस	धुल्ला	माइवाहया	सोत्तिय
एगओवत्त	जलोउया	मोत्तिय	सुभग
कलुय	जलोय, जलूय	वास	सुईमुह
किमिय	जालग	वासीमुह	सुईमुहा
कुच्छिकिमिय	णंदियावत्त	संख	हिल्लिया
खुल्लय	दुहओवत्ता	संखणग	
गंडूयलग	पल्लोय	संवुक्क	

त्रीन्द्रिय जीव-जिन जीवों के स्पर्शन, रसन और घ्राण-ये तीन इन्द्रियां होती हैं, वे त्रीन्द्रिय जीव हैं।

अवधिका	कट्ठाहार	तणविंटिय	मालुया
इंदगोवय	कणग	तणाहार	मुइंगा
इंदकाइय	कीड़ी	तिंदुग	रोहिणीय
उक्कड़	कुंथु	तेदुरणमज्जिया	लिक्ख
उक्कल	कोत्थलवाहग	पत्राहार	वीयविंटिया
उक्कलिय	कोल	पाहुया	सतवाइया
उद्दंसग	कोसियारकीड़	पिपीलिया	सदावरी
उद्देसग	खुरदुग	पिसुया	सोमंगला
उद्देहिया	घुण	पुप्फबिंटिया	सोवच्छिय
उप्पाड़	चंदन	फलविंटिय	हालाहल
उप्पाय	छप्पय	बहुपय	
उरूलुंचग	जूया	बीयवावय	
ओवाइया	तउसमिंजिया	मक्कोड़ग	

चतुरिन्द्रिय जीव-जिन जीवों के स्पर्शन, रसन, घ्राण, और चक्षु-ये चार इन्द्रियां होती हैं, वे चतुरिन्द्रिय जीव हैं।

अंधिय	कीडज	गोमाऊ	जालग
अच्छिल	कुकुंण	चित्तपक्ख	झिंगिरा
अच्छिरोडए	कुक्कुड़	चित्तपत्तए	झिंगिरिडा
अच्छिवेहए	कुक्कुह	छप्पय	झिल्लिया
ओभंजिया	कोलि	छाणविच्छुय	डंस
ओहिंजलिया	कोसियारकीड़	जरूल	डोल
कट्ठाहार	खज्जोत	जलकारी	ढिंकुण
कप्पासट्ठियमिंजिय	गंभीर	जलचारिय	णीणिया
कीड	गोमयकीडग	जलविच्छुय	णेउर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तंतवग	पयंग	मसगा	विरली
तिड्डु	पियंगाला	महुयर	विहंगम
तोट्ठा	पिसुग	महुयर	सरहा
दंस	पेत्तिय	माहए	सारंग
दोल	भमर	लोहियपत्त	सिंगिरीडी
नंदावत्त	भरिली	विंछिए	सुक्किलपत्त
नीय	भिंगारी	विच्छुत	हलिमच्छ
नीलपत्त	मक्कड़ा	विचित्तपक्ख	
पत्तबिच्छुय	मच्छिया	विचित्तपत्तए	

पंचेन्द्रिय जीव-जिन जीवों के स्पर्शन, रसन, घ्राण, चक्षु तथा श्रोत्र—ये पांच इन्द्रियां होती हैं, वे पंचेन्द्रिय जीव हैं।

अधंग	उद्द	कविंजल	कुलक्ख
अच्छ	उरग	कविंजल	कुलल
अट्ठिकच्छभ	उरब्भ	कविंजल	कुलल
अड	उलाण	कविंजल	कुलाल
अडिल	उलूक	कविल	कुलाल
अडिल	उभस	कवोय	कुलाल
अत्थभिल्ल	उस्सासविस	कवोयग, कवोत, कवोतग	कुलीकोस
अमिल	ऊरणी	कसाहिय	कोइल, कोइला
अय	एलग	काउल्ली	कोंडलग
अयगर	ओलावी	काओदर	कोकंतिय
अलक्कडअ	ओहार	काक	कोणालग
अस्स	कंक	कादंवग	कोल
अस्सतर	कंथग	कामदुहाधेणु	कोल
अहिणुका	कंदलग	कामंजुग	कोलसुणग
अहिलोढ़ी	कदंलग	कारंडव	कोलसुनय
अहिसल्लग	कंदलग	कालोइक	कोलाहा
अही	कंबोय	किण्हपत्त	कोल्लग
आइण्ण	कच्छभ	किण्हमिग	कोल्हुक
आड़ासेतीय	कणिक्कामच्छ	कीर	कोहंगक, कोरंग
आवत्त	कण्णत्तिय	कीव	खंजन
आवल्ल	कण्हसप्प	कुंच, कोंच	खग्ग
आस	कमल	कुंजर	खन्न
आसालिय	कमल	कुंदुल्लुय	खर
आसीविस	कमेड़	कुक्कड़	खर
ईहामिय	कमेड़	कुम्म	खलुंक
उंदुर	करभ	कुरंग	खवल्लमच्छ
उक्कोस	करभ	कुरर	खाडइल, खाडहिल
उग्गाविस	कलहंस	कुररी	खार
उट्ट	कवि	कुरल	गंड

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गन्धक
गंधहत्थि
गद्दभ
गय
गरुल
गलियस्स
गवय
गवल
गवेलग
गहरा
गहरा
गागर
गाव, गाय
गावी
गाह
गिद्ध
कोकण्ण
गोण
गोणस
गोम्ही
गोरक्खर
गोरमिग
गोरहग
गोह
गोह
घरोइल
घूय
घोडग
चउरग
चकोर
चक्कलड़ा,
चक्कवुंडा, चक्कुलेंडा
चक्काग, चक्कावाग
चडग
चमर
चम्मट्ठिल
चास
चिड़ग, चिड़िग
चित्तचिल्लय
चित्तलग
चित्तलि

चिल्लल
चोर
छगल
छीरल
छीरविरालिया
छुंदिका
छेलिय
जंबुय
जमग
जरग्गव
जलोय
जाहक
जीवंजीव
जुगमच्छ
जुवंगव
झस
टिट्टिभी
ढंक
ढिंक
ढेलियालग
णउल
णंदीमुह
णक्क
णागिंद
णोउर
तंदुलमच्छ
तयाविस
तरच्छ
तित्तिर
तित्तिर
तिमि
तिमिंगल
तिल्लहटिका
तुरग
दगतुंड
दगरक्खस
दहुर
दहुर
दब्भपुप्फ
दव्वीकर
दिट्ठिविस

दिली
दिलिवेढय
दिव्वा
दीविग
दीविय
दुलि
धत्तरट्ठ
धवलवसह
धेणु
नंदमाणग
नाग
नाग
निस्सासविस
नीलच्छाय
नीलमिय
पंगुल
पक्खिविराली
पडागा
पडागा
पड़ागातिपडागा
पड्डिका
पयलाइया
परस्पर
परासर
परिसर
पसय
पाठीण
पायकुक्कुड
पायहंस
पारिप्पव
पारेवय
पिंगलक्ख
पिंगुल
पीलग
पुंसकोइल
पुलग
पूयण
पोंडरीय
बग
बरहिण
बलागा

बहिलग
बाल
बाल
बाहुल्लेर
बीयंबीयग
भल्ल
भसुय
भारुंडपक्खी
भास
भिंग
भिंग
भिंगारग
भेणासी
भुयंग
भुयइसर
भोगविस
भोगि
मउलि
मंकुलहत्थि
मंगु
मंगुसा
मंडलि
मंडुक्क
मंदुय
मंधादय
मंस
मंसकच्छप
मगर
मगरिमच्छ
मग्गुक
मच्छ
मज्जार
मट्ठमगर
मयणसाला
मयूर
मरुयवसभ
मसूर
महिस
महिसी
महुयर
महोरग

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मायंग, मातंग
मालि
मिय
मियवति
मुगुंस
मुद्धय
मूसग
मेंढ
मेलिमिंदा
मेसरा
रायहंस
रिट्ठग
रिसह
रुरु
रोज्झ
रोहिय
रोहिमच्छ
लंभणमच्छ
लंभणमच्छ
लुंकड़ी
लालाविस
लिक्ख
लोट्टिया
लोमठिका
वइउल
वंजुलग
वग्गुली
वग्गुरिया
वग्य
वच्छग
वट्टग
वड
वडगर
वडवा
वरतुरग
वराडग
वराह
वराहि
वरेल्लग
वसह
वाउप्पइय
वाणर
वायस
वारण
वालग
वाह
विग
विज्झडियमच्छ
विडिम
विततपक्खि
विदंसग
वियग्घ
विलय
विराल
विस्संभरा
विहंगम
वीरल्ल
वेढला
वेणुदेव
वेसर
वोंड
सउणि
संड
सदंसगतुंड
संवर
सक्कुलिया
सण्हमच्छ
सतपत्त
सतवच्छ
सप्पी
समुग्गय
समुग्गय
समुग्गपक्षी
समुद्दवायस
सरंड
सरंब
सरड
सरव
सरभ
सराडि
सल्ल
ससय
साण
सामलेर
सारंग
सारंग
सारंग
सारंग
सारंग
सारंग
सारस
सारा
सारिआ
सालग
सालिसच्छियमच्छ
सालिसच्छियमच्छ
सावय
सियाल
सिरिकंदलग
सिरीसिवा
सिवा
सिहि
सिहि
सिहीमच्छ
सीह
सीमागार
सुग
सुणगा
सुंसुमार
सुंसुमार
सुयपिंट
सुवण्ण
सेडी
सेण
सेदसप्प
सेहा
सेहा
सोंडमगरा
सुणी
सूयर
सोयरिग
हंस
हत्थी-पूयणया
हत्थिसोंडा
हय
हरपोंडरीय
हरिण
हलाहला
हलिद्दपत्त
हलीमुह
हलीसागर
हालाहल
हुडुक्क

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट-3

संदर्भ-ग्रंथ सूची

1. अंग विज्जा
   (प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी बनारस सन् 1957)
2. अनुयोग द्वार सूत्र
   वाचनाप्रमुख—गणाधिपति तुलसी
   संपादक—आचार्य महाप्रज्ञ
   प्रकाशक—जैन विश्व भारती, लाडनूं
3. अभिधान चिन्तामणि कोश
   लेखक—कलिकाल सर्वज्ञ श्रीमद् हेमचन्द्राचार्य
   अनुवादक-संपादक—विजय कस्तूर सूरि
   प्रकाशक—जसवंतलाल गिरधरलाल शाह
   अहमदाबाद वि.सं.2013
4. अल्प परिचित शब्द कोश
5. आयार चूला
   संपादक—मुनि नथमल (आचार्य महाप्रज्ञ)
   प्रकाशक—जैन विश्व भारती, लाडनूं।
6. आयुर्वेदीय शब्दकोश (संस्कृत, संस्कृत मराठी)
   संपादक—आयुर्वेदाचार्य वेणीमाधव शास्त्री
   जोशी आयुर्वेद विशारद नारायणहरी जोशी
   प्रकाशक—महाराष्ट्र राज्य साहित्य अणि
   संस्कृति मंडल सन् 1968
7. Encyclopedia Britannica
8. Encyclopedia American
9. English Pali Distionary
   PB Motilal Banarsi Das Delhi
10. Inavine Tropical Fish
    Ken Denham
    First published great Britian 1971
    By John Barthalomew and Son Limited.
11. The Book of INDIAN REPTILES
    J.C. Daniel
    Bombay Natural History Society
12. The Concise Reference Encyclopeidia
    compliled in association with the oxford
    University Press
13. उत्तरज्झयणाणि
    संपादक—मुनि नथमल (आचार्य महाप्रज्ञ)
    प्रकाशन—जैन विश्व भारती, लाडनूं
    ई.सन्. 1978
14. उवासगदसाओ
    संपादक—मुनि नथमल (आचार्य महाप्रज्ञ)
    प्रकाशन—जैन विश्व भारती, लाडनूं
    सन् 1974
15. औपपातिक
    संपादक—मुनि नथमल (आचार्य महाप्रज्ञ)
    प्रकाशन—जैन विश्व भारती, लाडनूं
    सन् 1974
16. कन्नड़ शब्द कोश
17. COMMON INDIAN SNAKES
    — (A Field Guide)
    —Romulus Whitaker
    —S.G. Wasani for Maomillan India Limited
13. A King Cobra's Sped ibid
    Ghose, S.K. (1948)
19. कैयदेवनिघंटु
    संपादक व व्याख्याकार—आचार्य प्रियव्रत शर्मा,
    डॉ. गुरुप्रसाद व शर्मा
    प्रकाशन—चौखमा ओरियन्टालिया, वाराणसी
    प्रथम प्रकाशन 1979
20. जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति
    संपादक—मुनि नथमल (आचार्य महाप्रज्ञ)
    प्रकाशन—जैन विश्व भारती, लाडनूं
    प्रकाशन 1974
21. जानवरों की दुनिया
    (प्रकाशक, लेखक, अप्राप्य)
22. ज्ञाताधम्मकहाओ
    वाचना प्रमुख—आचार्य श्री तुलसी
    संपादक—युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ
    प्रकाशन—जैन विश्व भारती, लाडनूं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

23. जीव विचार वृत्ति—आत्मानन्द जैन
पुस्तक प्रकाशन-आगरा
संपादक—1978 हस्तलिखित
24. जीव विचार प्रकरण—सचित्र
वादिवेताल श्री शान्ति सूरिश्वर जी
म. सा. द्वारा विरचित
श्री आदिनाथ जैन श्वेताम्बर संघ
चिकलेट, बैंगलूर
25. जीवाजीवाभिगम
संपादक—मुनि नथमल (आचार्य महाप्रज्ञ)
प्रकाशन—जैन विश्व भारती, लाडनूं
प्रथम संस्करण सन् 1974
26. Jain Sutrah
Herman Jokobi
27. ठाणं
संपादक—मुनि नथमल (आचार्य महाप्रज्ञ)
प्रकाशन—जैन विश्व भारती, लाडनूं
प्रथम संस्करण सन् 1974
28. दसवेआलियं
संपादक—मुनि नथमल (आचार्य महाप्रज्ञ)
प्रकाशन—जैन विश्व भारती, लाडनूं
प्रथम संस्करण सन् 1974
29. दशाश्रुतस्कन्ध मूल पाठ
वाचना-प्रमुख—आचार्य श्री तुलसी
संपादक—युवाचार्य महाप्रज्ञ
प्रकाशन—जैन विश्व भारती, लाडनूं
30. Distionary
Sanskrit English
by Vaman Sivram Apte
31. डिंगलकोश
32. धन्वन्तरि निघंटु
संपादक एवं व्याख्याकार डॉ. झारखण्डे ओझा
पी.चौ.डी. रीडर एवं विभागाध्यक्ष
डॉ. उमापति मिश्र एम.डी. (आयुर्वेद)
प्रकाशक—आदर्श विद्या निकेतन, वाराणसी
प्रथम संस्करण सन् 1985
33. नालन्दा वृहद हिन्दी कोश
34. Purnell's first
Encyclopedia in Colour
35. Purnell's
concise encylopedia of nature
Michacl-Chinery
36. पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित स्नेक्स, वर्ड्स,
एनीमल्स और इनसेक्ट्स के विशेषज्ञों के आलेख के
आधार पर
37. पाइअसद्दमहण्णओ
संपादक—हर गोविन्द दास
प्रकाशक—प्राकृत टेस्ट सोसायटी, बनारस
सन् 1963
38. Poisonous Snakes of Sourthern Africa
Visser John, Howard Timmins cape
Town 1964
39. प्रज्ञापना, वाचना-प्रमुख—आचार्य श्री तुलसी
संपादक—युवाचार्य महाप्रज्ञ
प्रकाशक—जैन विश्व भारती, लाडनूं
40. प्रश्नव्याकरण, वाचनाकार—आचार्य श्री तुलसी
संपादक—युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ
प्रकाशक—जैन विश्व भारती, लाडूनं
41. फसल पीड़क कीट
एस. प्रधान
नेशनल ट्रस्ट बुक्स
42. Birds in Sanskrit Literature
K.N. Dave
P.B. Motilal Banarsidas, Delhi
First Edition 1985
43. भगवई
वाचना-प्रमुख—आचार्य श्री तुलसी
संपादक—युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ
प्रकाशक—जैन विश्व भारती, लाडनूं
44. भारत के पक्षी
सलीम अली
हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़
45. भारत के संकटग्रस्त वन्य प्राणी और उनका
संरक्षण—एस.एम. नायर
नेशनल ट्रस्ट बुक्स
46. महाभारत गीताप्रेस गोरखपुर
संपादक—नारायण राम आचार्य
सन् 946

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

47. महापुराण ज्ञान विद्या पीठ, दिल्ली
48. माणक हिन्दी कोष
49. Man and Animals Yari Dmitriyen
Radura Publishers Masco
50. राजनिघंटु
श्रीमन्नरहरि पंडित विरचित
व्याख्याकार—डॉ. इन्द्रदेव त्रिपाठी
आयुर्वेदाचार्य बी.आई.एम.एस.डी.एस.
प्रकाशक—कृष्णदास अकादमी सी.(आ.), वाराणसी
प्रथम संस्करण वि.सं. 2036
51. राजप्रश्नीय
वाचना-प्रमुख—आचार्य श्री तुलसी
संपादक—युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ
प्रकाशक—जैन विश्व भारती, लाडनूं
52. राजस्थानी शब्दकोश
सं. डॉ. सीताराम लालस
चौपासनी शिक्षा समिति, जोधपुर
53. राजस्थानी शब्द कोश
54. रेंगने वाले प्राणी-सुरेश सिंह 1966
सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन दिल्ली
55. A Reptiles and Amphibia of Cutch State-
MCCANN C. (1935)
56. A Reptiles and Amphibian
Miscellny J. Bombay nat Hist.
Soc. 41 : 742-764 MCCANN C. 1940
57. सचित्र विश्व कोश - भाग-2
जीवजंतु पेड़-पौधे, राजपाल एण्ड संस
58. Snakes of Southern Africa,
Purnell and Sons Capetown 1962
Fitzsimons V.F.M.
59. Snakes of Australia Angus and Robertson
Sydney 1969 Kinghorn J.R.
60. Snakes of Europe David and Charles Ltd.
great Britain 1971
Steward J.W.
61. A Snaskrit English distionary
Sir. Monier, Williams
62. समवायांग सूत्र
वाचना-प्रमुख—आचार्य श्री तुलसी
संपादक—युवाचार्य महाप्रज्ञ
प्रकाशक—जैन विश्व भारती, लाडनूं
63. शब्दकल्पद्रुम
64. सुश्रुत संहिता अनुवादक—अत्रिदेव
प्रकाशक—मोतीलाल बनारासी दास, दिल्ली
65. सूयगड़ो भाग-2
वाचना-प्रमुख—आचार्य श्री तुलसी
संपादक—युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ
प्रकाशक—जैन विश्व भारती, लाडनूं
66. सूर्य प्रज्ञप्ति
वाचना-प्रमुख—आचार्य श्री तुलसी
संपादक—युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ
प्रकाशक—जैन विश्व भारती, लाडनूं
67. वायुपुराण
विश्व के विचित्र जीव जंतु
68. ए.एस. हाशमी, पुस्तक महल
खारी बावली, दिल्ली
69. वैजयंति कोश वैद्यक शब्द सिंधु
कविराज श्री नगेन्द्रनाथ सेन वैद्य
वाराणसी—दिल्ली
70. बृहद् हिंदी कोश
संपादक—कालिकाप्रसाद, राजवल्लभ सहाय
मुकन्दिलाल श्रीवास्तव
प्रकाशक—ज्ञान मंडल लि. वाराणसी
71. Venormous Animals of the World
Prentice Hall Inc. New Jersey
175 Caras Rogar
72. हरिवंश पुराण
प्रकाशक—ज्ञान विद्यापीठ (दिल्ली)
73. हरियाणवी शब्द कोश
74. हिन्दी शब्द सागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आज से लगभग तीन वर्ष पूर्व पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में भगवतीसूत्र के संपादन का कार्य चल रहा था। संपादन के अन्तर्गत एक स्थान पर अनेक पशु-पक्षियों के नामों का उल्लेख आया। उनके अर्थावबोध के लिए व्याख्या ग्रंथों का अवलोकन किया गया। किन्तु व्याख्याकारों ने भी इनमें से अनेक शब्दों को 'लोकतश्चावगन्तयाः लोकतो वेदितव्याः' 'पक्षी विशेषः, पशु-विशेषः' आदि आदि कहकर उनके अवबोध की पूर्ण अवगति नहीं की। विभिन्न कोशों का अवलोकन करने के बाद भी हम निर्णायक स्थिति तक नहीं पहुंच पाए। तब गुरुदेव ने फरमाया—वनस्पति कोश की भांति यदि प्राणी कोश भी तैयार हो जाए तो चिर अपेक्षित कार्य की संपूर्ति संभव है।

यह स्पष्ट है कि इस प्रकार का कार्य सरल नहीं है। प्राकृत भाषा में प्रयुक्त प्राणीवाचक शब्द वस्तुतः किस प्राणी-विशेष के परिचायक हैं, उसे सही सही जान लेना एवं आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के संदर्भ में उसकी तुलनात्मक प्रस्तुति कर देना एक बहुत ही श्रमसाध्य कार्य है। एक ही प्रजाति के प्राणियों की विभिन्न नस्लों के लिए अलग-अलग नामों का प्रयोग जहां हुआ है, वहां उनके बीच रहे हुए अन्तर का स्पष्टीकरण करना और भी अधिक कठिन है। प्रस्तुत कोश में यथासंभव इन बातों पर विशेष ध्यान दिया गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

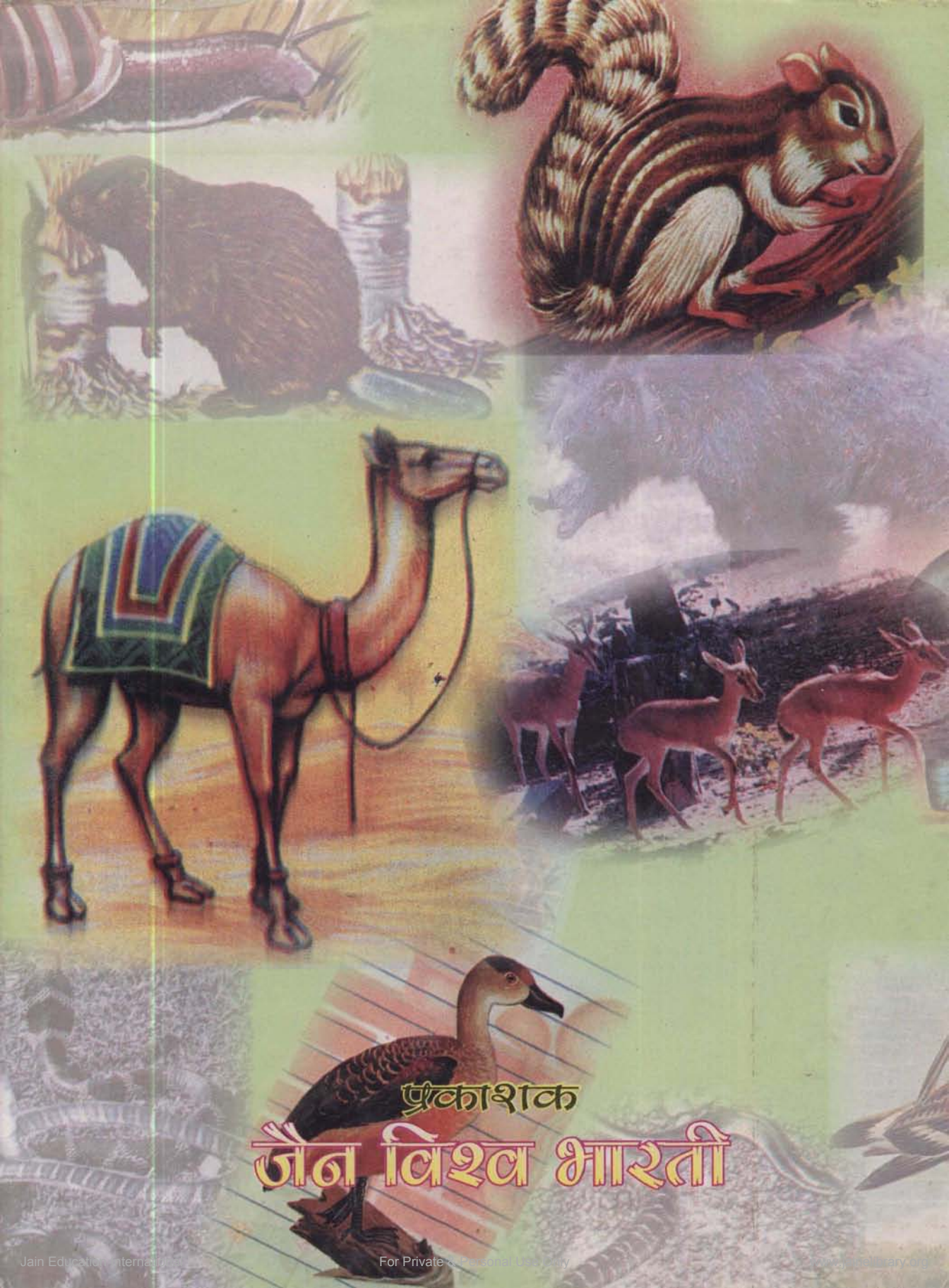

प्रकाशक

जैन विश्व भारती

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org